शैक्षिक लघुशोध

(संकलित)

सत्र 2010–11

प्रकाशन
शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

शैक्षिक लघुशोध

(संकलित)

(एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रस्तुत)

सत्र 2010–11

संरक्षक
अनिल राय (भा.व.से.)
संचालक

मार्गदर्शक
ए. लकड़ा
संयुक्त संचालक

समन्वयक
ज्योति चक्रवर्ती
सहायक प्राध्यापक
शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

प्राक्कथन

शिक्षा एक सोद्देश्य, विचारपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीवन के विभिन्न पहलुओं का पोषण तथा विकास होता है। अनुसंधान के बिना शिक्षा में प्रगति, परिमार्जन और विकास संभव नहीं है। अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो उपयोगी ज्ञान को प्रकाश में लाता है, विचारों की जांच करता है, नए तरीकों को खोजता है और पुरानी त्रुटियों एवं भ्रांत धारणाओं का परिमार्जन करता है।

हमारे देश के विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में प्रतिवर्ष हजारों शोधकार्य हो रहे हैं जिनके निष्कर्ष समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में संचालित शिक्षा महाविद्यालयों के एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा भी शिक्षा के क्षेत्र में लघुशोध कार्य किए जा रहे हैं। ये लघुशोध, शोधकर्ता को तो अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। साथ ही प्राप्त निष्कर्ष शिक्षा व्यवस्था में सुधार एवं विकास हेतु उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर द्वारा प्रतिवर्ष एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा किए गए लघुशोध में से चयनित लघुशोध का प्रकाशन कर शिक्षा से जुड़े समस्त संस्थानों को उपलब्ध कराया जाता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्य शिक्षा से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को, शिक्षा के क्षेत्र में आने वाले अवरोधों को पहचानने तथा अपने उत्तर से उनका निराकरण करने हेतु प्रेरित करना है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए आपने भी अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व को समझा होगा।

इस लघुशोध संकलन में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर किए गए लघुशोध का समावेश किया गया है; किन्तु कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिन पर अभी और कार्य किये जाने की आवश्कता है। इन क्षेत्रों में अनुसंधान कर शिक्षा की गुणवत्ता में और अधिक वृद्धि की जा सकती है। आवश्यकता है उन क्षेत्रों को पहचानने, उन पर चिंतन करने तथा अनुसंधान करने की। ऐसा कर हम राज्य की शिक्षा–व्यवस्था को नई ऊँचाईयों तक पहुँचाने में सहायक हो सकते हैं।

आशा है, यह शैक्षिक लघुशोध संकलन आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इस संबंध में आपके सुझावों का परिषद् में स्वागत है।

शुभकामनाओं सहित,

(अनिल राय)
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

दो शब्द प्रकोष्ठ की ओर से

शिक्षा में गुणवत्ता विकास हेतु एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़, रायपुर निरंतर प्रयासरत है। इस दिशा में परिषद् तथा उसकी सहयोगी संस्थाओं द्वारा नवाचार, क्रियात्मक अनुसंधान, लघुशोध तथा शोधकार्य किए जा रहे हैं। ये कार्य सर्व शिक्षा अभियान, केन्द्र प्रवर्तित योजना तथा यूरोपियन कमीशन आदि के सहयोग से संपादित किए जा रहे हैं।

शिक्षा से जुड़े समस्त संस्थानों में कार्यरत प्रत्येक सदस्य से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अनिवार्यतः अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं के आधार पर प्रतिवर्ष शोधकार्य करे, उसका प्रतिवेदन तैयार करे तथा परिषद् को उपलब्ध कराए ताकि इन शोध निष्कर्षों को व्यापक स्तर पर प्रसारित कर शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि की जा सके।

राज्य के शिक्षा महाविद्यालयों के एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा किए गए लघुशोघों का प्रकाशन भी इसी कड़ी का एक हिस्सा है। शैक्षिक लघुशोध संकलन प्रकाशन का यह छठवां वर्ष है। संकलित शोध कार्य वर्ष 2010–2011 में सम्पन्न किए गए हैं। इस वर्ष हमें सात शिक्षा महाविद्यालयों – शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर, पं. हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय रायपुर, डी.पी. विप्र महाविद्यालय बिलासपुर, प्रगति कॉलेज रायपुर, राहौद शिक्षण समिति, राहौद, मनसा शिक्षा महाविद्यालय भिलाई से कुल 213 लघुशोध प्राप्त हुए हैं। इनमें से 22 लघुशोध का चयनकर प्रकाशन किया जा रहा है।

विश्वास है कि लघुशोध प्रकाशन का हमारा यह प्रयास आपके कार्यक्षेत्र में आने वाली समस्याओं को हल करने में मददगार सिद्ध होगा। इनके निष्कर्ष आपको कार्य करने हेतु नयी दिशाएं प्रदान करेंगे।

शोध संकलन एवं प्रकाशन में परिषद्, शासकीय शिक्षा महाविद्यालयों तथा डाइट के सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ है। ''परिषद् का शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ'' इन सभी के प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करता है।

आपसे अनुरोध है कि इस ''शैक्षिक शोध संकलन'' का अपने कार्यक्षेत्र में उपयोग कर अपने बहुमूल्य सुझाव हमें लिख भेजें। आपके सुझावों की प्रतीक्षा में .....

(ज्योति चक्रवर्ती)
समन्वयक
शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ

अनुक्रमणिका

क्र.	शोध विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	गतिविधि आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	1 – 8
2.	किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	9 – 15
3.	हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि पर सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन	16 – 22
4.	विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन	23 – 28
5.	हाईस्कूल स्तर पर अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन	29 – 34
6.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन	35 – 40
7.	नक्सल प्रभावित क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों हेतु की गई वैकल्पिक व्यवस्था का उनकी शैक्षिक उपलब्धि व अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	41 – 44
8.	बच्चों के अधिगम स्तर एवं रूचि पर बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति के प्रभाव का अध्ययन	45 –51
9.	अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्थिति के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रूचि का अध्ययन	52 – 58
10.	विभिन्न संवर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन	59 – 65
11.	मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरों की समस्या समाधान योग्यता व उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन	66 – 71
12.	मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण का उनके आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन	72 – 75
13.	हिन्दी भाषा दक्षता में छत्तीसगढ़ी बोली के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में वर्तनी एवं लेखन कौशल संबंधी त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	76 – 81
14.	हाई स्कूल स्तर पर बालिकाओं हेतु क्रियान्वित योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन	82 – 91
15.	प्रभावशाली कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन	92 – 95
16.	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	96 – 106
17.	सामुदायिक सहभागिता के संदर्भ में शाला के गुणात्मक विकास का अध्ययन''	107 – 113
18.	डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	114 – 119
19.	सामान्य शालाओं व कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था के संदर्भ में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	120 – 125
20.	भाषायी दक्षता एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन	126 – 131
21.	A study of Learning Environment and Attitude towards Education of Urban and Rural Students.	132 – 139
22.	A Comparative Study of Academic Anxiety among Student Teachers of Different Socio-Economic Status.	140 – 143

शोधपत्र प्रारूप

(Research Paper Formate)

सारांश (Abstract) -

प्रस्तावना (Introduction) –

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) –

परिकल्पनाएँ / शोध प्रश्न (Hypotheses/Research questions) –

परिसीमन (Delimitation) -

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- न्यादर्श (Sample) –
- उपकरण (Tools) –

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) –

निष्कर्ष (Conclusions) -

सुझाव (Suggestions) –

संदर्भ ग्रंथ (References) –

(यह शोधपत्र प्रारूप सुझावात्मक है इसकी शब्द सीमा 5000–5500 निर्धारित की गयी है।)

1. ''गतिविधि आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ''

विनोद कुमार शर्मा
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

सीखने–सिखाने की विधियों का विद्यार्थियों की विभिन्न क्षमताओं पर प्रभाव पड़ता है। उचित अध्यापन विधियों द्वारा आवश्यक क्षमताओं का विकास होता है, विद्यार्थियों की समझ विकसित होती है, तथा उपलब्धि स्तर में वृद्धि होती है। प्रस्तुत शोध में गतिविधि आधारित शिक्षण विधि का, समस्या समाधान योग्यता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। कक्षा 8वीं में गणित विषय शिक्षण हेतु प्रयोगात्मक तथा नियंत्रित समूह बनाकर, प्रयोगात्मक समूह को गतिविधि आधारित शिक्षण तथा नियंत्रित समूह को परम्परागत शिक्षण विधि से शिक्षण कराया गया। समस्या समाधान योग्यता परीक्षण तथा शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रशासित कर सांख्यिकीय गणना द्वारा परिणाम प्राप्त किए गए। गणना के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि गतिविधि आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः उचित शैक्षिक तकनीक का उपयोग कर छात्र–शिक्षक अन्तःक्रिया के अधिकतम अवसर प्रदान कर शिक्षा में गुणात्मक विकास संभव है।

प्रस्तावना (Introduction) –

प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर शक्तियाँ निहित होती हैं। जब इन शक्तियों को फलने–फूलने के अवसर प्राप्त होते हैं, तो उनका विकास उनकी क्षमता के अनुरूप होता है, किन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो उनका पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। बच्चों में इन क्षमताओं के विकास के अवसर विषय के अनुरूप उचित शिक्षण विधि को अपनाकर दिये जा सकते हैं।

गणित शिक्षण की प्रभावशीलता भी अच्छी शिक्षण पद्धतियों पर निर्भर करती है। शिक्षण पद्धतियाँ अधिगम को सहज तथा सरल बनाती हैं। इन शिक्षण पद्धतियों के अंतर्गत योजना, डाल्टन तथा मान्टेसरी आदि शिक्षण पद्धतियाँ आती हैं। शिक्षा संस्थानों में इन पद्धतियों का अनुप्रयोग करते समय व्यक्तिगत भिन्नता के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। फलस्वरूप बालक की आवश्यकता, रूचि, योग्यता तथा क्षमता के अनुरूप उचित वातावरण प्राप्त हो सकेगा। यह बालक के संतुलित एवं सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

1. गतिविधि आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना।
2. गतिविधि आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समस्या समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. विभिन्न शैक्षिक उपलब्धि स्तर वाले बच्चों की समस्या समाधान योग्यता को जानना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

1. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
3. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की पूर्व परीक्षण एवं पश्चात् परीक्षण की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होगा।
4. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
5. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की पूर्व परीक्षण एवं पश्चात् परीक्षण परिणामों (समस्या समाधान योग्यता के संदर्भ) में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – प्रयोगात्मक विधि –

शोध कार्य हेतु 50 बालक और 50 बालिकाओं को क्रमशः 25–25 के दो समूहों में बाँटा गया। इनमें 50 विद्यार्थियों का एक समूह (25 बालक + 25 बालिका) प्रयोगात्मक तथा दूसरा 50 का एक नियंत्रित समूह निर्मित किया गया ।

प्रयोगात्मक समूह के 50 विद्यार्थियों को शोधकर्ता द्वारा विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से कक्षा 8वीं के गणित विषय के ''अध्याय–14 क्षेत्रमिति भाग–1 तथा अध्याय–15 क्षेत्रमिति भाग–2'' का अध्यापन कराया गया। निर्धारित गतिविधियों से संबंधित चित्रीय हल आदि का प्रयोग कर, पाठ योजना के माध्यम से अध्यापन कराया गया, अध्यापन के पूर्व एवं पश्चात् प्रयोग समूह एवं नियंत्रित समूह की समस्या समाधान योग्यता का परीक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का मापन, मापनी के माध्यम से किया गया।

नियंत्रित समूह के 50 विद्यार्थियों को ''अध्याय–14 क्षेत्रमिति भाग–1 तथा अध्याय–15 क्षेत्रमिति भाग–2'' का अध्यापन स्वयं शोधकर्ता द्वारा परम्परागत विधि से कराया गया। यह अध्यापन शिक्षक केन्द्रित रहा। इन सभी विद्यार्थियों पर शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (पूर्व तथा पश्चात्) तथा समस्या समाधान योग्यता परीक्षण प्रशासित किया गया।

- **न्यादर्श (Sample) –**

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में नवागढ़ विकासखंड के उच्च प्राथमिक स्तर के कक्षा 8वीं के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र तथा 50 छात्राओं) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

- **उपकरण (Tools)** –

1. समस्या समाधान योग्यता परीक्षण : निर्माणकर्ता – श्री एल.एन. दुबे, प्रकाशन वर्ष – 1971, National Psychological Corporation, Agra

   इसका प्रशासन प्रायोगिक तथा नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों पर किया गया।

2. स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण :

   शोधकर्ता द्वारा कक्षा 8वीं के गणित विषय के ''अध्याय–14 क्षेत्रमिति भाग–1 तथा अध्याय–15 क्षेत्रमिति भाग–2'' से शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (अध्यापन पूर्व एवं अध्यापन पश्चात्) हेतु बहुविकल्पीय तथा दैनिक जीवन संबंधी प्रश्न शामिल किए गए। उपलब्धि परीक्षण (पूर्व तथा पश्च) में 25–25 पद थे तथा समय 1.30 घंटा रखा गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) –

परिकल्पना क्रमांक – 01

''प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा(पश्चात् परीक्षण के संदर्भ में)।''

उक्त परिकल्पना के संबंध में गणना निम्नानुसार है :–

सारणी क्रमांक – 01

स. क्र.	न्यादर्श समूह	N	M	S.D.	S.Em	Combined S.Em	df	t-Value	सार्थकता
1	प्रायोगिक	50	32.26	7.10	1.00	1.582	98	4.33	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर
2	नियंत्रित	50	25.40	8.65	1.22				

व्याख्या – सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रायोगिक समूह का मध्यमान (32.26), नियंत्रित समूह के मध्यमान (25.4) से उच्च है। सार्थकता की जाँच करने हेतु ''t – मूल्य परीक्षण'' का उपयोग किया गया। परीक्षण से t का मूल्य 4.33 प्राप्त हुआ, जो विश्वास के स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से उच्च है अर्थात् ''गतिविधि आधारित शिक्षण विधि'' एवं ''परम्परागत शिक्षण विधि'' द्वारा अध्यापन कार्य किए जाने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः परिकल्पना – 01 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह में लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

व्याख्या – उक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु परिकल्पना–01 में किए गए परीक्षण के प्राप्तांकों को बालक एवं बालिका के प्राप्तांकों में अलग–अलग विभाजित कर बालक वर्ग की शैक्षिक उपलब्धि का समांतर माध्य (X) एवं मानक विचलन (σ) ज्ञात कर, सार्थकता की जाँच हेतु ''t – मूल्य परीक्षण'' का परिकलन किया गया। उपरोक्त प्रक्रिया ''प्रायोगिक समूह'' एवं नियंत्रित समूह'' के बालक–बालिका पर अलग–अलग प्रशासित की गई।

उक्त परिकल्पना के संबंध में गणना निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक – 02

परीक्षण	समूह	वर्ग	N	Mean(x)	S.D. (σ/√N)	S.Em	Combined S.Em	df	Calculated t-Value	t-Value	सार्थकता
लिंग के आधार पर उपलब्धि	प्रायोगिक	बालक	25	33.12	6.26	1.25	2	48	0.60	2.68 at (0.01)	सार्थक अंतर नहीं
		बालिका	25	31.92	7.80	1.56					
	नियंत्रित	बालक	25	24.8	9.21	1.84	5.95	48	0.20	2.68 at (0.01)	सार्थक अंतर नहीं
		बालिका	25	26	8	1.60					

I. सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि (1) प्रायोगिक समूह में बालक वर्ग का मध्यमान (33.12) बालिका वर्ग के मध्यमान (31.92) से उच्च है। सार्थकता की जाँच करने हेतु ''t – मूल्य परीक्षण'' का उपयोग किया गया। परीक्षण से t – मूल्य 0.6 प्राप्त हुआ, जो विश्वास के स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से निम्न है अर्थात् प्रयोगात्मक समूह में लिंग के आधार पर गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धियों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

II. नियंत्रित समूह में बालक वर्ग का मध्यमान (24.8) बालिका वर्ग के मध्यमान (26) से निम्न है। सार्थकता की जाँच करने हेतु ''t – मूल्य परीक्षण'' का उपयोग किया गया। परीक्षण t का मूल्य 0.20 प्राप्त हुआ, जो विश्वास के स्तर 0.01 पर एवं 0.05 पर सारणीयन मान से निम्न है अर्थात् नियंत्रित समूह में लिंग के आधार पर गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना–02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की पूर्व परीक्षण एवं पश्चात् परीक्षण की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होगा।''

उक्त परिकल्पना के संबंध में गणना निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक – 03

स. क्र.	समूह	परीक्षण	N	Mean (x)	S.D. (σ/√N)	S.Em	Combined S.Em	df	Calculated t-Value	t-Value	सार्थकता
1	प्रायोगिक	पूर्व	25	24.7	7.26	1.45	0.405	48	18.66	2.68	सार्थक अंतर है
		पश्चात्	25	32.26	7.10	1.42					
2	नियंत्रित	पूर्व	25	20.7	8.68	1.73	0.489	48	9.61	2.68	सार्थक अंतर है
		पश्चात्	25	25.4	8.65	1.73					

1. सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान पूर्व परीक्षण एवं पश्चात् परीक्षण के संदर्भ में क्रमशः 24.7 तथा 32.26 है, जो कि पूर्व परीक्षण मध्यमान से पश्च परीक्षण मध्यमान उच्च है। सार्थकता की जाँच करने हेतु ''t – मूल्य परीक्षण'' का उपयोग किया गया। परीक्षण से t का मूल्य (18.66) प्राप्त हुआ जो विश्वास के स्तर पर 0.01 पर सारणीयन मान से उच्च है। अर्थात् प्रायोगिक समूह में गतिविधि आधारित शिक्षण द्वारा अध्यापन किए जाने पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण के संदर्भ में विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।
2. सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण के संदर्भ में क्रमशः 20.7 एवं 25.4 है जो कि पूर्व परीक्षण मध्यमान से उच्च है। सार्थकता की जाँच करने हेतु ''t – मूल्य परीक्षण'' का उपयोग किया। परीक्षण से t का मूल्य 9.61 प्राप्त हुआ, जो विश्वास के स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से उच्च है अर्थात् '' गतिविधि आधारित शिक्षण विधि'' एवं ''परम्परागत शिक्षण विधि'' द्वारा अध्यापन कार्य किए जाने पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण के संदर्भ में विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः परिकल्पना – 03 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

उक्त परिकल्पना के संबंध में गणना निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक – 04

स. क्र.	समूह	N	Mean (x)	S.D.	S.Em (σ/√N)	Combined S.Em	df	Calculate t-Value	t-Value	सार्थकता
1	प्रायोगिक	50	12.38	l. 83	0.5244	0.5244	98	2.365	2.63 / 0.01 तथा 1.98 / 0.05	सार्थक अंतर है।
2	नियंत्रित	50	11.14	2.53	0.357					

व्याख्या – सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रायोगिक समूह की समस्या समाधान योग्यता का मध्यमान (12.38) तथा नियंत्रित समूह की समस्या समाधान योग्यता का मध्यमान (11.14) है। सार्थकता की जाँच करने हेतु ''t – मूल्य परीक्षण'' का उपयोग किया परीक्षण से t – का मूल्य 2.365 प्राप्त हुआ, जो विश्वास के स्तर 0.05 पर सारणीयन के मान से उच्च है अर्थात् ''गतिविधि आधारित शिक्षण विधि'' एवं ''परम्परागत शिक्षण विधि'' द्वारा अध्यापन कार्य किए जाने पर विद्यार्थियों की गणित विषय की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः परिकल्पना – 04 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की पूर्व परीक्षण एवं पश्चात् परीक्षण परिणामों (समस्या समाधान योग्यता के संदर्भ में) सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

उक्त परिकल्पना के संबंध में गणना निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक – 05

स. क्र.	समूह	परीक्षण	N	Mean(x)	S.D.	S.Em (σ/√N)	Combined S.Em	df	Calculate t-Value	सार्थकता
1	प्रायोगिक	पूर्व	50	12.38	1.83	0.258	0.347	98	3.861	सार्थक अंतर है।
		पश्चात्	50	13.72	1.64	0.231				
2	नियंत्रित	पूर्व	50	11.14	2.53	0.357	0.476	98	0.588	सार्थक अंतर है।
		पश्चात्	50	10.86	2.23	0.315				

सारणी से स्पष्ट है कि –

1. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के अध्यापन पूर्व परीक्षण का समान्तर माध्य 12.38 एवं इसी समूह के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के अध्यापन पश्चात् परीक्षण का समान्तर माध्य 13.72 पाया गया। यह दर्शाता है कि इस समूह हेतु अध्यापन पश्चात् समस्या योग्यता परीक्षण का मान अध्यापन पूर्व समस्या समाधान योग्यता परीक्षण के मान से उच्च है। सार्थकता की जाँच हेतु ''t – परीक्षण'' किया गया, जिसका मान 3.861 पाया गया जो कि विश्वास के स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से उच्च है अर्थात् सार्थक अंतर है।

   अतः प्रायोगिक समूह के लिए परिकल्पना – 05 अस्वीकृत की जाती है।

2. नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के अध्यापन पूर्व परीक्षण का समान्तर माध्य 11.14 एवं इसी समूह के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के अध्यापन पश्चात् परीक्षण का समान्तर माध्य 10.86 पाया गया। यह दर्शाता है कि इस समूह हेतु अध्यापन पश्चात् समस्या समाधान योग्यता परीक्षण का मान अध्यापन पूर्व समस्या समाधान योग्यता परीक्षण के मान से निम्न है। सार्थकता की जाँच हेतु ''t – मूल्य परीक्षण'' किया गया, जिसका मान 0.588 पाया गया जो कि विश्वास के स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से निम्न है अर्थात् सार्थक अंतर नहीं है। अतः नियंत्रित समूह के लिए परिकल्पना – 05 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusion) -

प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे निम्नलिखित हैं :–

1. प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों से उच्च पाई गई।
2. प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह में लिंग आधार पर बालक एवं बालिका वर्ग की शैक्षिक उपलब्धि में समानता पाई गई।
3. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में गणित विषय के पूर्ववर्ती परीक्षण की अपेक्षा पश्चात्परीक्षण में ''शैक्षिक उपलब्धि'' का स्तर उच्च पाया गया।
4. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में समस्या समाधान योग्यता, नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाई गई।
5. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की गतिविधि आधारित अध्यापन के पश्चात् समस्या समाधान योग्यता उच्च पाई गई।

सुझाव (Suggestions) –

- कक्षागत अध्यापन कार्यों में उन शिक्षण विधियों/प्रविधियों का उपयोग अधिकतम किया जाये, जिनमें बच्चों की सक्रिय सहभागिता हो।
- बालक के विचार सृजनात्मक तथा कल्पनाशील होते हैं। प्रत्येक वस्तु के उपयोग एवं निर्माण में उसका अपना दृष्टिकोण होता है। अतः शिक्षक को बालक की मनोदशा समझकर, उचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देकर सही दिशा दिखानी चाहिए।
- गणित की मूल अवधारणा एवं संक्रिया को समझाने हेतु शिक्षक को अपनी शाला में गणित की प्रयोगशाला स्थापित करनी चाहिए।
- कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में समस्या समाधान विधियों का प्रयोग करें। बच्चे स्वयं शिक्षक के मार्गदर्शन में समस्याओं के समाधान करें। तार्किक धनात्मक क्षमता को विकसित करने हेतु क्या, क्यों और कैसे? अवधारणात्मक प्रश्नों का प्रयोग कक्षा में किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

- Aziz, Talat (1990) " A study of comparative effectiveness of the information processing models of teaching in developing certain concepts in chemistry at the Secondary Stage" P.hd. Education V Survey of Education Research (Vol.II)
- Bajpai Nirupama (1995) प्राथमिक शालाओं में गणित विषय के अध्यापन में परम्परागत एवं बालकेन्द्रित शिक्षण प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन (509) लघुशोध प्रबंध, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर
- Goel, V.P. Agbebim L.A.(1990) "Learning Physics through lecture demonstration method (L.D.M.) and individualized instruction method (IIM)" Indian Education Review Vol.25(4) 84-89 (S.pr.1404) Pp-1238s
- Kunde, Smt.Anu (2009-10) '' विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन आदतों के संदर्भ में अध्ययन'' लघु शोध प्रबंध (749) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर

2 . ''किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

राम कुमार कान्त
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

समय प्रबंधन की दैनिक जीवन में अत्यधिक महत्ता है। जीवन के विभिन्न पहलुओं पर समय प्रबंधन का प्रभाव पड़ता है। ''समायोजन'' पर भी अन्य कारकों की तरह समय प्रबंधन का प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समय प्रबंधन तथा समायोजन क्षमता को महत्वपूर्ण माना गया है। प्रस्तुत शोध में किशोरों के समय प्रबंधन का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों तथा लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों की समय प्रबंधन क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है साथ ही समायोजन में भी सार्थक अन्तर नहीं है, किन्तु समय प्रबंधन क्षमता का समायोजन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः पालकों तथा शिक्षकों को विद्यार्थियों में समय प्रबंधन क्षमता विकसित करने की ओर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए।

प्रस्तावना (Introduction) –

समय न केवल अध्ययन के संदर्भ में महत्वपूर्ण होता है, अपितु सामान्य रूप से इसकी जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी अहम् भूमिका होती है। स्टीफन, आर. कवी मानते हैं कि समय प्रबंधन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ चिंतन का सार एक वाक्य में समाहित किया जा सकता है; अपने कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर व्यवस्थित करें और उस पर अमल करें। समय प्रबंधन की अवधारणा तीन पीढ़ियों के विकास का प्रतिनिधित्व करती है। व्यक्ति को जीवन में सफलता हासिल करने के लिए समय प्रबंधन को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए। इसके अभाव में व्यक्ति को जीवन में सफलता प्राप्त करना संभव ही नहीं है।

ठीक वैसे ही किशोरों को भी समय के साथ समाज, परिवार अथवा विद्यालय में सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रबंधन की आवश्यकता है। वे किशोर जो समय प्रबंधन को अपनाकर अथवा समय प्रबंधन को व्यवस्थित रूप से सुनियोजित करके चलते हैं उन्हें लक्ष्य प्राप्ति में कठिनाई नहीं होती किन्तु वे किशोर जो समय प्रबंधन दक्षता के अभाव में लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होने का प्रयास करते हैं। लक्ष्य अथवा सफलता प्राप्ति के मार्ग में निराशा का सामना करते हैं अर्थात् समय प्रबंधन दक्षता के अभाव में अपने आप को समाज परिवार और विद्यालय में समायोजित नहीं कर पाते। परिणामतः वे मार्ग से भटक जाते हैं और कुंठित हो जाते हैं।

यदि समय प्रबंधन का सुव्यवस्थित योजनाबद्ध तरीका अपनाया जाये तो किसी भी प्रकार की कठिनाई लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में बाधक नहीं हो सकती।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) –

प्रस्तावित शोध हेतु निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं –

1. किशोर विद्यार्थियों की समय प्रबंधन दक्षता का अध्ययन करना।
2. छात्र–छात्राओं की समय प्रबंधन दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. समय प्रबंधन दक्षता का किशोरों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

1. किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन से कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा।
2. शहरी एवं ग्रामीण किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
3. किशोर छात्र–छात्राओं के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4. शहरी एवं ग्रामीण किशोरों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की विद्यार्थियों की समय प्रबंधन दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
6. किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **न्यादर्श (Sample) –**

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु विकास खंड पथरिया जिला बिलासपुर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में से यादृच्छिक रूप से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतलपुर, मिशन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतलपुर, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सरगांव एवं सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सरगांव (2 शासकीय तथा 2 अशासकीय शालाएँ) की कक्षा ग्यारहवीं के 50 – 50 छात्रों तथा 50–50 छात्राओं का यादृच्छिक चयन किया गया।

- **उपकरण (Tools) –**

  प्रस्तुत शोध में निम्न शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है –

- समय प्रबंधन दक्षता मापनी :– श्री डी. एन. संसनवाल, प्राध्यापक, डायरेक्टर एवं डीन देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

  इस मापनी में कुल 36 प्रश्न (कथन) हैं, जिसमें योजना से संबंधित 12 प्रश्न, प्रबंधन 09 प्रश्न, नेतृत्व 10 प्रश्न तथा मूल्यांकन 05 प्रश्न हैं। कुल 36 प्रश्नों में से 18 प्रश्न धनात्मक एवं 18 प्रश्न ऋणात्मक हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर हमेशा, अधिकतर, कभी – कभी, बहुत कम तथा नहीं में देना है।

- किशोर समायोजन मापनी :– निर्माणकर्ता – श्रीमती रागिनी दुबे, सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग, शासकीय गृह विज्ञान महाविद्यालय होशंगाबाद, म.प्र. है। इस समायोजन मापनी में कुल 80 प्रश्न हैं, जिसमें स्वसमायोजन, समवय समूह समायोजन तथा विद्यालयीन समायोजन से संबंधित प्रश्न हैं। कुल 80 प्रश्नों में से 40 प्रश्न धनात्मक तथा 40 प्रश्न ऋणात्मक हैं प्रत्येक प्रश्न का उत्तर हाँ या नहीं में देना है।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) –

संख्यिकीय विश्लेषण निम्नानुसार है –

परिकल्पना क्रमांक – 01

''किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन से कोई सार्थक सह संबंध नहीं होगा''।

सारणी क्रमांक – 01

समय प्रबंधन दक्षता					समायोजन					
न्यादर्श N	मध्यमान M	मध्यिका Md	बहुलांक M_0	प्रमाणिक विचलन σ	न्यादर्श N	मध्यमान M	मध्यिका Md	बहुलांक M_0	प्रमाणिक विचलन σ	सहसंबंध गुणांक
200	124.74	125	133	11.72	200	45.92	46	43	7.078	–0.074

किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता और समायोजन के मध्य सहसंबंध की गणना से प्राप्त सह संबंध गुणांक r = - 0.074 है। जो न्यून ऋणात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है। अर्थात् किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता और समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''शहरी एवं ग्रामीण किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 02

समय प्रबंधन दक्षता	न्यादर्श N	मध्यमान M	मध्यिका Md	बहुलांक M0	प्रमाणिक विचलन σ	स्वतंत्रता का अंश df	टी–मान t	सार्थकता
शहरी किशोर	50	121.8	120.5	117	13.41	98	0.045	सार्थक अन्तर नहीं है
ग्रामीण किशोर	50	126.12	126	122	11.47			

शहरी और ग्रामीण किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता मापनी से प्राप्त प्रदत्तों के वर्गीकरण व गणना के पश्चात् क्रमशः M_1 = 121.8 तथा M_2 = 126.12 प्राप्त हुआ तथा इनका विचलन σ_1 = 13.41 तथा σ_2 = 11.47 है। मध्यमानों की सार्थकता की जांच के लिए t का मान 0.045, df = 98 है जो कि 0.01 सार्थक स्तर पर t = 2.63 से बहुत कम है। अतः स्पष्ट है कि शहरी किशोरों और ग्रामीण किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना – 02 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''किशोर छात्र–छात्राओं के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 03

समायोजन	न्यादर्श N	मध्यमान M	मध्यिका Md	बहुलांक M_0	प्रमाणिक विचलन σ	स्वतंत्रता का अंश df	टी–मान t	सार्थकता
बालक	100	44.29	45	47	6.10	198	0.000621	सार्थक अंतर नहीं है
बालिका	100	47.55	47.5	50	7.62			

बालक और बालिकाओं की समायोजन मापनी से प्राप्त प्रदत्तों के वर्गीकरण एवं गणना के पश्चात् M_1 = 44.29 तथा M_2 = 47.55 क्रमशः प्राप्त हुआ तथा इनका प्रमाणिक विचलन σ_1= 6.10 तथा σ_2 = 7.62 है। मध्यमानों की सार्थकता की जांच के लिए टी का मान 0.000621, df = 98 है जो कि 0.01 सार्थक

स्तर पर t = 2.60 से बहुत कम है। अतः स्पष्ट है कि बालक और बालिकाओं के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना – 03 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 04

समायोजन	न्यादर्श N	मध्यमान M	मध्यिका Md	बहुलांक M_0	प्रमाणिक विचलन σ	स्वतंत्रता का अंश df	टी–मान t	सार्थकता
ग्रामीण किशोर	50	44.36	43	42	4.79	98	0.0098	सार्थक अंतर नहीं है
शहरी किशोर	50	47.24	47.5	43	7.49			

ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के समायोजन मापनी से प्राप्त प्रदत्तों के वर्गीकरण एवं गणना के पश्चात् M_1 = 44.36 तथा M_2 = 47.24 क्रमशः प्राप्त हुआ है। इनके प्रमाणिक विचलन σ_1=. 4.79 तथा σ_2 = 7.49 है। मध्यमानों की सार्थकता की जांच के लिए टी का मान 0.0098 तथा df स्वतंत्रता की कोटि 98 है, जो कि 0.01 सार्थक स्तर पर t = 2.60 से बहुत कम है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना – 04 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समय प्रबंधन दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 05

समय प्रबंधन दक्षता	न्यादर्श N	मध्यमान M	मध्यिका Md	बहुलांक M_0	प्रमाणिक विचलन σ	स्वतंत्रता का अंश df	टी–मान t	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	50	126.12	126	122	11.47	98	0.82	सार्थक अंतर नहीं है
अशासकीय विद्यालय	50	126.66	129	133	11.39			

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समय प्रबंधन दक्षता मापनी से प्राप्त प्रदत्तों के वर्गीकरण एवं गणना के पश्चात् M_1 = 126.12 तथा M_2 = 126.66 क्रमशः प्राप्त हुआ है। इनके प्रमाणिक विचलन σ_1= 11.47 तथा σ_2 = 11.39 है। मध्यमानों की सार्थकता की जांच के लिए टी का मान 0.82 तथा df 98 है, जो कि 0.01 सार्थक स्तर पर t = 2.60 से बहुत कम है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना – 05 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''किशोर में विद्यार्थियों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।''

सारणी क्रमांक – 06

समय प्रबंधन दक्षता					समायोजन					
न्यादर्श N	मध्यमान M	मध्यिका Md	बहुलांक M_0	प्रमाणिक विचलन σ	न्यादर्श N	मध्यमान M	मध्यिका Md	बहुलांक M_0	प्रमाणिक विचलन σ	सहसंबंध गुणांक r
50	126.12	126	122	11.47	50	126.66	129	133	11.39	0.023

किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव की गणना के लिए गुणांक घात विधि का प्रयोग किया गया है तथा सहसंबंध गुणांक का मान r = 0.023 प्राप्त हुआ है जो समय प्रबंधन दक्षता तथा उनके समायोजन में धनात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 06 अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

- किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता तथा उनके समायोजन में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।
- शहरी एवं ग्रामीण किशोरों के समय प्रबंधन दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- किशोर छात्र–छात्राओं की समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की समय प्रबंधन दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।
- किशोरों की समय प्रबंधन दक्षता का उनके समायोजन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सुझाव (Suggestions) –

प्रस्तुत लघु शोध के आधार पर अभिभावकों, शिक्षकों और किशोरों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं :–

1. अभिभावकों को किशोरों को समय प्रबंधन दक्षता के बारे में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए ताकि किशोर समय के अनुरूप अपने आपको प्रभावपूर्ण बना सकें।
2. शिक्षकों द्वारा विद्यालय में अध्यापन का कार्य व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए ताकि शिक्षक–छात्र के मध्य अन्तःक्रिया पर विशेष ध्यान दिया जा सके।
3. विद्यालय स्तर पर भी किशोर निर्देशन कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए ताकि किशोर उससे लाभान्वित हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. अग्रवाल जे.सी. – एजुकेशनल, वोकेशनल गाइडेन्स एण्ड काउंसलिंग, दिल्ली 1979
2. चतुर्वेदी, श्रीमती गायत्री – ''शैक्षिक समस्याओं के संदर्भ में किशोरों के समायोजन स्तर का अध्ययन लघुशोध प्रबंध गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, 2007–08
3. ज्योति, उषा कुमारी – किशोरों के समायोजन का अध्ययन
4. बेस्ट, जॉन. डब्लू. – रिसर्च इन एजुकेशन, पृष्ठ 125–186
5. शिक्षा में शोध – चतुर्थ सर्वे, अध्ययन क्रमांक 339, 350, 368, 390, 407, 412, 421 व जिनके पृष्ठ क्रमांक 347, 353, 364, 377, 387, 391, 398 व 411 हैं।

6- Manual TMC - Time management Competeney scale D.N. Sansanwal (Indore) NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION 4/230, KACHERI GHAT, AGRA

3. ''हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि पर सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन''

अजय कुमार साव
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का अत्यधिक उपयोग हो रहा है। संप्रेषण विचार विनियम के मूड (Mood) में विचारों तथा भावनाओं को परस्पर जानने तथा समझने की प्रक्रिया है। शालाओं में उपलब्ध बहु संचार माध्यम के उपयोग द्वारा कक्षा शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली बनेगी। अतः हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि पर सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रभाव को जानने के लिए नियंत्रित समूह को परम्परागत व्याख्यान विधि से एवं प्रायोगिक समूह को कम्प्यूटर आधारित शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन किया गया। जिसमें पाया गया कि कम्प्यूटर द्वारा शिक्षण करने से भी बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि समान रही। कम्प्यूटर शिक्षण द्वारा कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में सह–संबंध पाया गया। शैक्षिक अभिरूचि बढ़ने पर बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि हुई।

प्रस्तावना (Introduction) –

आधुनिक काल में शिक्षा का अर्थ किसी तरह का उपदेश या सूचना देना नहीं होता है, बल्कि यह बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये निरंतर चलने वाली ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बच्चे में निहित क्षमताओं का सही–सही उपयोग विभिन्न परिस्थितियों में किया जाता है।

वर्तमान में शिक्षा सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का अत्याधिक उपयोग हो रहा है। सम्प्रेषण शिक्षा की 'रीढ़ की हड्डी' है। बिना सम्प्रेषण के शिक्षा और शिक्षण दोनों की ही कल्पना नहीं की जा सकती।

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का शिक्षा में प्रयोग इस लक्ष्य को पाने का सर्वोत्तम उपाय है क्योंकि विद्यालयीन शिक्षा में स्व–अनुदेशित सामग्री, समाचार–पत्र, पत्र–पत्रिकाएं, वर्क बुक (Work Book), शब्दकोश, एटलस, एन्साइक्लोपीडिया, रेडियो, टेपरिकार्डर, चार्ट, नक्शे, मॉडल, स्लाइड, फिल्म स्ट्रिप, प्रोजेक्टर, ओवर हैड प्रोजेक्टर, एपीडाईस्कोप, टेलीविजन, कम्प्यूटर, वीडियो डिस्क, मोबाईल, इन्टरनेट, एडुसेट आदि का उपयोग कर विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव बढ़ाने के प्रयास जारी हैं। परंतु बहुत कम विद्यालयों में इन सम्प्रेषण माध्यमों का उपयोग होता है। यदि इन संप्रेषण साधनों का उपयोग किया जाये तो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

1. विज्ञान विषय का अध्यापन पारंपरिक व्याख्यान विधि द्वारा करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि का अध्ययन करना ।
2. विज्ञान विषय का अध्यापन कम्प्यूटर की सहायता से करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि का अध्ययन करना।
3. पारंपरिक व्याख्यान विधि एवं कम्प्यूटर की सहायता से अध्यापन करने से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. पारंपरिक व्याख्यान विधि द्वारा अध्यापन करने एवं कम्प्यूटर की सहायता से अध्यापन करने से विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

1. कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षण करने एवं पारंपरिक व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षण करने एवं पारंपरिक व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
3. कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।
4. पारम्परिक व्याख्यान विधि से शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।
5. कम्प्यूटर द्वारा शिक्षण तथा पारंपरिक (सामान्य सहायक शिक्षण सामग्री युक्त) व्याख्यान विधि द्वारा अध्ययन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक अभिरूचि के मध्य प्राप्त सह संबंधों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) – शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है –

स्थान	– रायपुर जिला
विद्यालय	– शा.उ.मा. विद्यालय, मठपुरेना
न्यादर्श	– कक्षा 10 वीं के विद्यार्थी
शिक्षक केन्द्रित विधि	– पारम्परिक व्याख्यान विधि
छात्र केन्द्रित विधि	– कम्प्यूटर आधारित शिक्षण विधि
विषय	– विज्ञान
कक्षा	– 10वीं

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि** – प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोधविधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में शा.उ.मा.वि. मठपुरेना, रायपुर की कक्षा दसवीं के 80 विद्यार्थियों (40 नियंत्रित, 40 प्रायोगिक समूह) का सौद्देश्यपूर्ण चयन किया गया। सभी छात्रों को कक्षा नवमीं में 50% या उससे अधिक अंक मिले थे।
- **उपकरण (Tools) –** प्रस्तुत शोध में निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।
  1. शैक्षिक उपलब्धि पूर्व परीक्षण (Pre test)
  2. शैक्षिक उपलब्धि पश्चात् परीक्षण (Post test)
  3. शैक्षिक अभिरूचि परीक्षण – स्वनिर्मित

सांख्यिकी विषलेषण (Statistical operation) – सांख्यिकी विश्लेषण निम्नानुसार है –

परिकल्पना क्रमांक – 01

''कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षण करने एवं पारंपरिक व्याख्यान विधि से शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारणी क्रमांक – 01

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	df	C.R.	मानक त्रुटि	परिणाम
नियंत्रित	40	17.75	7.20	78	0.23	1.6	सार्थक अन्तर नहीं है।
प्रयोगात्मक	40	17.37	7.19				

व्याख्या – T table के अनुसार 78 df तथा 5% विश्वास स्तर पर t का मान सार्थक अंतर हेतु 1.98 होना चाहिए, परंतु गणना के आधार पर t का मान केवल 0.23 प्राप्त हुआ। अतः हम कह सकते हैं कि 5% विश्वास स्तर पर नियंत्रित समूह और प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 01 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षण करने एवं पारंपरिक व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारणी क्रमांक – 02

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	df	C.R.	मानक त्रुटि	परिणाम
नियंत्रित	40	21.50	5.60	78	0.21	1.18	सार्थक अन्तर नहीं है।
प्रयोगात्मक	40	21.75	4.95				

व्याख्या – T table के अनुसार 78 df तथा 5% विश्वास स्तर पर t का मान सार्थक अंतर हेतु 1.98 होना चाहिए, परंतु गणना के आधार पर t का मान केवल 0.21 आया, अतः हम कह सकते हैं कि 5% विश्वास स्तर पर नियंत्रित और प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 02 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 03

प्रयोगात्मक समूह में शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में सहसंबंध (प्रकीर्ण आरेख विधि)

C.I.	6-10	11-15	16-20	21-25	26-30	f	u	fu	fu^2	uv
0-4						0	-3	0	0	0
5-9		3	1			4	-2	-8	16	6
10-14		3	7	2		12	-1	-12	12	1
15-19				10	2	12	0	0	0	0
20-24				4	1	5	1	5	5	6
25-29					4	4	2	8	16	16
30-34					2	2	3	6	18	12
35-29					1	1	4	4	16	8
f	0	6	8	16	10	40		$\sum fu=3$	$\sum fu^2=83$	$\sum uv=49$
V	-2	-1	0	1	2					
fv	0	-6	0	16	20	$\sum fv=30$				
fv^2	0	6	0	16	40	$\sum fu^2=62$				
uv	0	9	0	2	38	$\sum uv=49$				

व्याख्या – कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनकी शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सह–संबंध गुणांक का मान 0.81 पाया गया जो कि अति उच्च धनात्मक सह–संबंध है। अतः परिकल्पना – 03 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''पारंपरिक व्याख्यान विधि से शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि के मध्य धनात्मक सह–संबंध पाया जाएगा।''

सारणी क्रमांक – 04

नियंत्रित समूह में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि में सहसंबंध (प्रकीर्ण आरेख विधि)

C.I.	6-10	11-15	16-20	21-25	26-30	f	u	fu	fu^2	uv
0-4	2					2	-3	-6	18	12
5-9		5				5	-2	-10	20	10
10-14			4	9	1	14	-1	-14	14	-11
15-19			1	7		9	0	0	0	0
20-24				1	3	4	1	4	4	7
25-29				1	2	3	2	6	12	10
30-34					3	3	3	9	27	18
35-29						0	4	0	0	0
f	2	5	6	18	9	40		Σfu =11	Σfu^2 = 95	Σuv=46
V	-2	-1	0	1	2					
fv	-4	-5	0	18	18	Σfv=27				
fv^2	8	5	0	18	18	Σfu^2= 67				
uv	12	10	0	-6	30	Σuv=46				

व्याख्या – व्याख्यान विधि से शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सह–संबंध का मान 0.79 प्राप्त हुआ, जो कि उच्च धनात्मक सह–संबंध है। अतः परिकल्पना – 04 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''कम्प्यूटर द्वारा शिक्षण एवं पारंपरिक (सामान्य सहायक शिक्षण सामग्री युक्त) व्याख्यान विधि द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य प्राप्त सह–संबंधों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

सारणी क्रमांक – 05

समूह	चर	r	df	सार्थकता	परिणाम
प्रयोगात्मक	शैक्षिक उपलब्धि	0.81	78	0.3	सार्थक अंतर है।
	शैक्षिक अभिरूचि				
नियंत्रित	शैक्षिक उपलब्धि	0.79	78		
	शैक्षिक अभिरूचि				

व्याख्या – नियंत्रित समूह एवं प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सह–संबंधों के बीच के अंतर की सार्थकता 0.3 है, जो कि 78 df तथा 5% विश्वास स्तर एवं 1% विश्वास स्तर पर क्रमशः 0.217, 0.282 से ज्यादा है अतः सार्थक अंतर पाया जाता है, इसलिए परिकल्पना – 05 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

प्रस्तुत लघुशोध कार्य में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. शिक्षक यदि पूरी तैयारी के साथ पारंपरिक व्याख्यान विधि से अध्यापन करता है तब एवं कम्प्यूटर द्वारा अध्यापन करने से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

2. शिक्षक यदि विषय को पूरी जानकारी व तैयारी के साथ रूचिपूर्ण ढंग से पारम्परिक व्याख्यान विधि से पढ़ाता है, तब छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि उसी प्रकार प्रभावित होती है जिस प्रकार कम्प्यूटर द्वारा अध्यापन से प्रभावित होती है अर्थात् दोनों शिक्षण पद्धतियों का उपयुक्त और रोचक ढंग से प्रयोग किया जाए तो विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरूचि स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

3. छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर धनात्मक सहसंबंध होता है अर्थात् जिस मात्रा में छात्र शिक्षा में रूचि लेते हैं, उसी अनुपात में उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ती है। किन्तु अभिरूचि को अनेक कारक भी प्रभावित करते हैं, जिन पर पूर्ण रूपेण नियंत्रण कर पाना असंभव है। वहीं 15 दिनों के अल्प समय में छात्रों की अभिरूचि में कोई बड़ा परिवर्तन हो पाना भी संभव नहीं है।

4. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक आकलन किया जाए तो कम्प्यूटर सहायतित शिक्षण विधि, पारंपरिक शिक्षण विधि की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती है।

अतः ''हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि के संदर्भ में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का अधिक प्रभाव पड़ता है।''

सुझाव (Suggestions)–

1. शिक्षण विधि कोई भी क्यों न हो, जब तक शिक्षक का स्वयं के विषय पर पूर्ण अधिकार, उत्तम अध्यापन कौशल, अध्यापन हेतु रूचि, योग्यता एवं आत्म विश्वास नहीं होगा, छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि के सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।
2. शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये शिक्षक को कम्प्यूटर तथा अच्छे शैक्षिक साफ्टवेयर उपकरणों की जानकारी एवं पहचान होना आवश्यक है।
3. कम्प्यूटर द्वारा अध्यापन के पूर्व शिक्षक को इसकी कार्यविधि भली प्रकार समझ लेना चाहिए एवं पर्याप्त अभ्यास भी कर लेना चाहिए।
4. शासन स्तर पर कम्प्यूटर सहायतित शिक्षण का प्रयोग करने के लिये सर्वप्रथम इस योजना के उद्देश्य निर्धारित किए जाए। योजना के क्रियान्वयन के लिये एक नीति बनाई जानी चाहिए।
5. कम्प्यूटर एवं छात्र के मध्य कितना अनुपात होगा यह सुनिश्चित करते हुये संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराए जाने चाहिए तभी वे सार्थक परिणाम दे सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

- शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार – डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
- शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ – डॉ. (श्रीमती) शशीकला सरीन, डॉ. अंजली सरीन, अग्रवाल पब्लिकेशन्स् आगरा–2
- भारतीय आधुनिक शिक्षा (शिक्षा में सूचना और संप्रेषण प्रविधियाँ) – एन.एन. महेश्वरी, संयुक्त निर्देशक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
- Information and communication Technology in Education – Anjali khirwadkar and K. Pushpanadham, Faculty of Education and Psychology Vadodara – 2

4. ''विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''

कु. पुष्पा वर्मा
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

राष्ट्र की समृद्धि एवं वैभवशाली सम्पन्नता का आधार शिक्षा है, जो हमारी क्षमताओं का निरंतर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास कर उसे उत्कृष्ठ बनाती है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में नैतिक मूल्यों का महत्व सदैव रहा है। विद्यार्थियों का आचरण इन मूल्यों के संदर्भ में स्वअनुशासित हो यह प्रयास अनवरत करते हुए बालकों में समायोजन क्षमता विकसित की जानी आज की महती आवश्यकता है। शिक्षा मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास करती है। विद्यार्थियों के ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि होती है इससे सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षा से ही विद्यार्थियों में सफल समायोजन की क्षमता पैदा हो सकती है। शिक्षा व्यक्ति में समाज और पर्यावरण से समायोजन करने की क्षमता उत्पन्न करने का कार्य दो प्रकार से करती है। प्रथम तो शिक्षा व्यक्ति को ऐसा विवेक, ऐसी बुद्धि देती है, जिससे वह घटनाओं का व्यावहारिक विश्लेषण करके परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार कर सके तथा दूसरी ओर वह व्यक्ति को इतना कार्यकुशल बनाती है कि वह प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना सके।

समाज द्वारा निर्धारित नियमों व सिद्धांतों का पालन करना ही नैतिकता है एवं इन नियमों व सिद्धांतों के अनुसार आचरण करने की शक्ति ही चरित्र कहलाती है। यही कारण है कि सभी समाज, शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने का प्रयत्न करते हैं। व्यक्ति का नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना शिक्षा का प्रमुख कार्य है।

प्रत्येक बालक में व्यक्तिगत विभिन्नता पाई जाती है। उनमें कुछ न कुछ शक्ति एवं क्षमतायें होती हैं। यदि इन शक्तियों एवं क्षमताओं की दिशा समाजोन्मुखी हो तो समाज व देश के लिये वह बालक प्रेरक और उन्नति कारक बन जाता है। अतः विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से भिन्न–भिन्न विद्यालयों में अध्ययन करने वाले इन विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता का मूल्यांकन कर बालक के व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन लाया जा सकता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए –

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों की तुलना करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना करना।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया :–

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।
4. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग किया गया है।

- **न्यादर्श (Sample)** –

  रायपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विभिन्न शालाओं के विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन निम्नानुसार किया गया –

सारणी क्रमांक – 1

क्र.	विद्यालय का नाम	प्रकार	छात्र	छात्रायें	योग
1.	शा.पू.मा. अभ्यास शाला, शंकर नगर, रायपुर	शहरी	25	25	50
2.	शा.पू.मा. शाला, रामसागरपारा, रायपुर	शहरी	25	25	50
3.	शा.पू.मा. शाला, चंदखुरी, रायपुर	ग्रामीण	25	25	50
4.	शा.पू.मा. शाला, असौंदा, रायपुर	ग्रामीण	25	25	50
योग –			**100**	**100**	**200**

- **उपकरण (Tools)** –

आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित प्रमाणिक उपकरणों (प्रश्नावलियों) का उपयोग किया गया है –

1. **नैतिक मूल्य मापनी–** डॉ. श्रीमती प्रतिभा देवांगन, डॉ. बी.जी. सिंह एवं डॉ. पी.के. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी इस परीक्षण में 45 नैतिक मूल्य थे, जिनमें से 10 मूल्यों को परीक्षण के लिए लिया गया।
2. **समायोजन क्षमता मापनी–** "A.K.P. Sinha and R.P. Singh Adjustment Inventory for School Students (AISS) Hindi" का प्रयोग किया गया है। इसमें कुल 60 प्रश्न हैं। इस परीक्षण के तीन भाग हैं, प्रत्येक भाग में बीस–बीस प्रश्न हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations)

प्रस्तुत लघु शोध में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों और समायोजन क्षमता का परीक्षण किया गया तथा प्राप्तांकों को व्यवस्थित करने के पश्चात् उनका सारणीयन किया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारणी क्रमांक – 01

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य परीक्षण के प्राप्तांकों का सारणीयन

क्र.	प्रदत्त		प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
1.	शहरी विद्यार्थी	छात्र	50	36.45	5.6	2.36
		छात्रा	50			
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	छात्र	50	34.45	6.33	
		छात्रा	50			

व्याख्या– नैतिक मूल्य परीक्षण का प्रशासन शहरी क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों पर किया गया है। शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 36.45 और प्रमाणिक विचलन 5.6 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 34.45 और प्रमाणिक विचलन 6.33 प्राप्त हुआ ।

198 df (स्वतंत्रता की कोटि) पर सार्थकता के लिए आवश्यक क्रांतिक अनुपात का मान 5% विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि विद्यार्थियों से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.36 है जो कि 5% विश्वास पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारणी क्रमांक – 02

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता परीक्षण के प्राप्तांकों का सारणीयन

क्र.	**प्रदत्त**		**प्रदत्तों की संख्या**	**मध्यमान**	**प्रमाणिक विचलन**	**क्रांतिक अनुपात**
1.	शहरी विद्यार्थी	छात्र	50	17.2	6.88	1.98
		छात्रा	50			
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	छात्र	50	15.5	5.31	
		छात्रा	50			

व्याख्या–समायोजन क्षमता परीक्षण का प्रशासन शहरी क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों पर किया गया है। शहरी विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का मध्यमान 17.2 और प्रमाणिक विचलन 6.88 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का मध्यमान 15.5 और प्रमाणिक विचलन 5.31 प्राप्त हुआ ।

1.98 df स्वतंत्रता की कोटि पर सार्थकता के लिए आवश्यक क्रांतिक अनुपात का मान 5% विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि विद्यार्थियों से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.98 है जो कि 5% विश्वास पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक 03 –

''उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।''

सारणी क्रमांक–3

विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में सह–संबंध परीक्षण के प्राप्तांकों का सारणीयन

क्र.	प्रदत्त		प्रदत्तों की संख्या	सह संबंध गुणांक
1.	शहरी विद्यार्थी	छात्र	50	0.82
		छात्रा	50	
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	छात्र	50	0.60
		छात्रा	50	

व्याख्या– शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य सह–संबंध गुणांक का मान 0.82 प्राप्त हुआ। अतः शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में अति–उच्च धनात्मक सह–संबंध है।

ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य सह–संबंध गुणांक का मान 0.60 प्राप्त हुआ। अतः ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में साधारण धनात्मक सह–संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक–04

''उच्च प्राथमिक स्तर शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारणी क्रमांक – 04

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के बीच सह–संबंध में अंतर की सार्थकता का सारणीयन

क्र.	प्रदत्त	सहसंबंध गुणांक		अंतर की सार्थकता
		Pearson's r	**Fisher's z**	σdz
1.	शहरी विद्यार्थी	0.82	1.16	2.99
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	0.62	0.73	

व्याख्या–

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य सह–संबंध के लिए अंतर की सार्थकता का मान 2.99 प्राप्त हुआ, जो 5% विश्वास स्तर पर अंतर की सार्थकता के लिए आवश्यक मान 0.138 से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी

समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में अंतर पाया गया ।
2. उच्च प्राथमिक. स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में अंतर पाया गया।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में अति–उच्च धनात्मक सह–संबंध एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में साधारण धनात्मक सह–संबंध को पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि जिन छात्रों का नैतिक मूल्य स्तर अच्छा है उनकी समायोजन क्षमता भी उच्च कोटि की है।
4. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनके समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध में सार्थक अंतर पाया गया ।

सुझाव (Suggestions) –

1. शिक्षकों को अपनी पूर्ण योग्यता का सदुपयोग करते हुए विद्यार्थियों की समस्या को हल करने में सार्थक पहल कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। समस्या का समाधान होने पर ही विद्यार्थी अपने आपको समायोजित कर पायेंगे।
2. विद्यालय में अध्ययन के अलावा अन्य गतिविधियों के आयोजन को निश्चित करने हेतु ठोस नियम निर्धारित किए जाने चाहिए।
3. नैतिक मूल्यों के विकास के लिये पाठ्यवस्तु में इससे संबंधित सामग्री समाविष्ट की जानी चाहिए।
4. शिक्षक द्वारा स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए विद्यार्थियों के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. जायसवाल, सीताराम ,समायोजन विज्ञान 1999, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
2. कपिल, डॉ. एच.के., अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारिक विज्ञानों में) 1989, हर प्रकाश भार्गव, आगरा
3. माथुर, एस.एफ., शिक्षा मनोविज्ञान 1991, शिक्षा विभाग, आर.ई.आई. ट्रेनिंग कॉलेज दयालबाग, आगरा
4. पांडे, डॉ. राम शकल, मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य 1982, हर प्रकाश भार्गव, आगरा
5. सरीन डॉ. शशिकला, शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ 1998, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
6. वशिष्ठ, बिजेन्द्र कुमार, शिक्षाशास्त्र की प्रारंभिक रूपरेखा 1989, आर. लाल बुक डिपो मेरठ

5. ''हाईस्कूल स्तर पर अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन''

नीलिमा श्रीवास्तव
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग)

सारांश

सर्वोत्तम शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि के साथ हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है। अतः आवश्यक है कि शिक्षक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों को पहचानने तथा उचित मार्गदर्शन दें। इस शोध के अनुसार अन्तर्मुखी व्यक्तित्व तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा व्यावसायिक रूचि में अंतर होता है। अंतर्मुखी छात्रों की व्यावसायिक रूचि साहित्य में अधिक पायी गई जबकि छात्राओं की घरेलू कार्यों में, बहिर्मुखी छात्र/छात्राओं की रूचि एक जैसी अर्थात् विज्ञान से जुड़े क्षेत्रों में पाई गई।

प्रस्तावना (Introduction) –

राष्ट्र के नौनिहाल आने वाले सुनहरे भविष्य की धरोहर हैं। इस धरोहर को समुचित संस्कार प्रदान करते हुए, राष्ट्र के लिए जिम्मेदार नागरिक बनाने का दायित्व अध्यापक का है। क्योंकि यह शिक्षा के द्वारा ही संभव है, शिक्षा के बिना हम समाज व राष्ट्र के विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

छात्रों के संवेदनशील मस्तिष्क को परिपक्व रूप देने के लिए, उनके सर्वांगीण विकास करने के लिए शिक्षकों को उपयुक्त वातावरण देते हुए उन्हें अवसर प्रदान करने चाहिए, जिससे उनके मन में किसी प्रकार का डर, संकोच, झिझक की भावना न रहे, तथा स्वाभाविक गति से वे अपना विकास कर सकें। आज शिक्षा बाल–प्रधान है, शिक्षा बालकों के लिए है न कि बालक शिक्षा के लिए। बालक जो कि शिक्षा की महत्वपूर्ण कड़ी हैं, उसमें कई प्रकार की व्यक्तिगत विभिन्नतायें पायी जाती हैं, विभिन्नता के क्षेत्र बुद्धि क्षमता, प्रतिभा एवं रूझान आदि हो सकते हैं। यदि बालकों की प्रतिभा एवं व्यावसायिक अभिरूचि को ज्ञात कर उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो उनके व्यक्तित्व का सही विकास हो सकता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

1. अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की अध्ययन आदतों का पता लगाना।
2. अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की अध्ययन आदतों का पता लगाना।
3. अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की व्यावसायिक अभिरूचि का पता लगाना।
4. अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचि का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

परिकल्पना क्रमांक–1

अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

परिकल्पना क्रमांक–2

अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

परिकल्पना क्रमांक–3

अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की व्यावसायिक रूचि में अंतर पाया जायेगा।

परिकल्पना क्रमांक–4

अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की व्यावसायिक रूचि में अंतर पाया जायेगा।

- **परिसीमन (Delimitation of the study)** –

स्थान की दृष्टि से यह शोध रायपुर शहर तक परिसीमित किया गया।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample)** –

1. अध्ययन हेतु चार शासकीय विद्यालयों (2 बालक तथा 2 कन्या विद्यालय) का चयन किया गया। इन विद्यालयों की कक्षा 9वीं व 10वीं के विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन किया गया।
2. बालक विद्यालय से 100 छात्र (अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व) एवं कन्या विद्यालय से 100 छात्राओं (अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व) का चयन किया गया। इस तरह से कुल 200 विद्यार्थियों का शोधकार्य हेतु सौद्देश्य चयन किया गया है।

- **उपकरण (Tools)** –

1. व्यक्तित्व मापनी (अतंर्मुखी/बहिर्मुखी) – डॉ. पी.एफ. अजीज एवं डॉ. रेखा गुप्ता
2. अध्ययन आदत मापनी – प्रो. एम. मुखोपध्याय एवं डॉ. डी. एन. सनसनवाल।
3. व्यवसायिक अभिरूचि मापनी – डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ

तीनों मापनियों के प्रकाशक National Psychological Corporation Agra (U.P.) हैं।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operation) – सांख्यिकीय विश्लेषण निम्नानुसार किया गया –

व्यक्तित्व मापनी –

सारणी क्रमांक – 1

अंतर्मुखी विद्यार्थी		अंतर्मुखी विद्यार्थियों की कुल संख्या	बहिर्मुखी विद्यार्थी		बहिर्मुखी विद्यार्थियों की कुल संख्या	कुल विद्यार्थियों की संख्या
छात्र	छात्रायें		छात्र	छात्रायें		
36	39	75	64	52	116	191

विवेचना –

उपरोक्त तालिका क्रमांक–1 से स्पष्ट होता है कि 75 अंतर्मुखी विद्यार्थियों में से 36 छात्र एवं 39 छात्रायें हैं। बहिर्मुखी विद्यार्थियों की संख्या 116 है, जिसमें 64 छात्र एवं 52 छात्रायें हैं।

अध्ययन आदत मापनी–

इस मापनी की सहायता से अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्र की अध्ययन आदतों का पता लगाया गया।

परिकल्पना क्रमांक –01

''अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

सारणी क्रमांक – 2

क्र.	**समूह**	**संख्या**	**मध्यमान**	**प्रमाणिक विचलन**	**क्रांतिक अनुपात**	**निष्कर्ष 1% विश्वास स्तर पर**	**परिकल्पना**
1.	अंतर्मुखी छात्र	36	106.94	21.3	4.65	सार्थक अंतर पाया गया	स्वीकृत
2.	बहिर्मुखी छात्र	64	128.28	23.2			

व्याख्या – अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की अध्ययन आदतों के मध्य क्रांतिक अनुपात का मान 4.65 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df तथा 1% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 2. 63 से अधिक है। इसलिए अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः परिकल्पना क्रमांक–1 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–02

अंतर्मुखी व्यक्तित्व एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 3

क्र.	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	निष्कर्ष 1% विश्वास स्तर पर	परिकल्पना
1.	अंतर्मुखी छात्राऐं	39	116.53	18.05	3.20	सार्थक अंतर पाया गया	स्वीकृत
2.	बहिर्मुखी छात्राऐं	52	130.57	24.2			

व्याख्या –

अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्य क्रांतिक अनुपात 3.20 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df तथा 1% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 2.63 से अधिक है। इसलिए अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः परिकल्पना क्रमांक–02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की व्यावसायिक रूचि में अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 4

व्यावसायिक रूचि के क्षेत्र	अंतर्मुखी छात्र			बहिर्मुखी छात्र		
	संख्या	प्रतिशत	अंश	संख्या	प्रतिशत	अंश
Literasy (L)	13	36.11	130^0	1.6	9.38	34^0
Scientific (SC)	12	33.33	120^0	30	46.88	169^0
Executive (E)	6	16.67	60^0	21	32.81	118^0
Persuasive (P)	3	8.33	30^0	3	4.68	17^0
Household (H)	2	5.56	20^0	4	6.25	22^0

व्याख्या – उपरोक्त तालिका के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अंतर्मुखी छात्र की व्यावसायिक रूचि सबसे अधिक **(L)** क्षेत्र में है, उसके बाद **SC, E, P** एवं **H** क्षेत्र में जबकि बहिर्मुखी छात्रों की व्यावसायिक रूचि सबसे अधिक **SC** क्षेत्र में उसके बाद क्रमशः **E, L, H** तथा सबसे कम **P** क्षेत्र में है। अतः उपरोक्त

तालिका के आधार पर हम कह सकते हैं कि अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की व्यावसायिक रूचि में अंतर है।

अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–04

अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की व्यावसायिक रूचि में अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 5

व्यावसायिक रूचि के क्षेत्र	अंतर्मुखी छात्राएँ			बहिर्मुखी छात्राएँ		
	संख्या	प्रतिशत	अंश	संख्या	प्रतिशत	अंश
L	6	15.38	55.4^0	9	17.31	62^0
SC	12	30.77	110.8^0	21	40.38	145^0
E	4	10.26	36.9^0	9	17.31	62^0
P	3	7.69	27.7^0	6	11.54	42^0
H	14	35.9	129.2^0	7	13.46	49^0

व्याख्या – अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की व्यावसायिक रूचि **H** व्यावसायिक क्षेत्र में सबसे अधिक है। इसके बाद क्रमशः **SC, L, E** एवं **P** क्षेत्र में सबसे कम है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की व्यावसायिक रूचि सबसे अधिक **SC** में फिर क्रमशः **L, E, H** व सबसे कम **P** व्यावसायिक क्षेत्र में है। अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की व्यवसायिक रूचि में अंतर है।

अतः परिकल्पना क्रमांक–04 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया।
2. अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की व्यावसायिक रूचि में अंतर पाया गया। अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की व्यावसायिक रूचि सबसे अधिक Literary (L) क्षेत्र में पायी गयी, वहीं बहिर्मुखी छात्रों की व्यावसायिक रूचि Scientific (SC) क्षेत्र में अधिक पायी गयी।
3. अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की व्यावसायिक रूचि Household (H) व्यवसायिक क्षेत्र में अधिक पायी गई, वहीं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की व्यावसायिक रूचि Scientific (SC) क्षेत्र में अधिक पायी गई।

सुझाव (Suggestions) –

1. शिक्षक कक्षा में अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें प्रोत्साहित करें तथा उन्हें विभिन्न शालेय गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित करें ताकि उनमें आत्मविश्वास बढ़े।

2. शिक्षकों को कक्षा में अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि पर भी ध्यान देना चाहिये तथा उन्हें सही व्यवसाय चुनने में मदद मिल सके।
3. अभिभावकों को शिक्षकों से समय–समय पर मिलते रहना चाहिये और अपने पाल्यों की अध्ययन आदतों से परिचित होना चाहिये।
4. अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल में होने वाली विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेने में प्रोत्साहित करना चाहिये। इससे छात्र अपनी क्षमताओं को पहचान सकेंगे और उनमें आत्म विश्वास बढ़ेगा।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. हेमलता जाटव (2008) – ''विभिन्न सामाजिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक रूचि का अध्ययन''
2. जावेद खान (2000) – ''आश्रम शाला एवं सामान्य शालाओं के आदिवासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन''
3. सीमा वर्मा (2002) – ''+ 2 स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के अंतिम संप्रत्यय एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति के अंतर्संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन''

6. ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन''

सुरेन्द्र कुमार उपरडे
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग)

सारांश

सृजनात्मकता मानव चिंतन की श्रेष्ठ उपलब्धि है। बालकों में जन्मजात सृजनात्मकता के गुण होते हैं। अतः सृजनात्मक बालक के निर्माण के लिए परिवार तथा शाला का वातावरण सृजनशील होना आवश्यक है। राष्ट्र प्रत्येक बालक को सर्वश्रेष्ठ बालक के रूप में देखना चाहता है। विद्यालय एवं शिक्षक सृजनशील वातावरण का निर्माण कर समाज एवं राष्ट्र को सफलता और प्रगति के शिखर पर ले जाने में सहायक होते हैं।

प्रस्तुत लघुशोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध निष्कर्षों के अनुसार माध्यमिक स्तर पर शासकीय तथा अशासकीय विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अंतर पाया गया। शालेय वातावरण का सृजनात्मकता से निम्न धनात्मक संबंध पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

ज्ञान के विस्फोट एवं विज्ञान के विकास ने अनेक संभावनाओं के द्वार खोले हैं। प्रत्येक बालक की अपनी अलग महत्वाकांक्षा होती है। शिक्षा अपने अलौकिक प्रकाश से समस्त मानव मन के अंधकार को दूर कर नवीन सुसंस्कारों, सुंदर भावनाओं, परिष्कृत विचारों एवं उदारता पूर्ण दृष्टिकोण की रचना कर देती है। विद्यालय द्वारा बालकों में समाजोपयोगी एवं जीवनोपयोगी गुण और कौशल बड़ी आसानी से विकसित किए जा सकते हैं। इस प्रकार शालेय वातावरण में बालकों के संपूर्ण विकास की प्रबल संभावना होती है।

वर्तमान युग में शैक्षणिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में परिवर्तन हो रहे हैं और भविष्य में इन परिवर्तनों की गति और भी तेज हो जाने की संभावना है। जीवन में आने वाले परिवर्तनों के प्रति सृजनशील व्यक्ति का दृष्टिकोण असृजनशील व्यक्ति के दृष्टिकोण से भिन्न होता है। सृजनात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति समस्याओं के प्रति गंभीर रहते हुए समाधान की खोज में लग जाता है और नई–नई खोजों एवं अविष्कारों को जन्म देता है।

सृजनात्मकता आत्मनिर्देशन, आत्मसिद्धांत तथा आत्मपुर्नबलन तथा आत्माभिव्यक्ति का विशेष लाभों से अंलकृत संप्रत्यय है जिसके माध्यम से नूतन एवं मूल्यवान वस्तुओं का सृजन होता है। इस प्रकार सृजनात्मकता समस्या समाधान से लेकर अहं के प्रत्यक्षीकरण की साहसिक यात्रा है।

वर्तमान प्रतियोगितापूर्ण विश्व में प्रतिभाशाली प्रतिस्पर्धात्मक मस्तिष्क की आवश्यकता है।

अतः प्रत्येक देश का कर्त्तव्य है कि सृजनशील विद्यार्थियों को पाने के लिए समुचित कार्यक्रम प्रस्तावित करे तथा विद्यार्थियों को उपयुक्त वातावरण प्रदान कर, शिक्षा का समुचित प्रबंध करे व उनकी प्रतिभा को विकसित करने का सुअवसर प्रदान करे।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना ।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का अध्ययन करना।
3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना ।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

1. माध्यमिक स्तर पर शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया जायेगा।
2. माध्यमिक स्तर पर शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शालेय वातावरण में अंतर पाया जायेगा।
3. माध्यमिक स्तर पर शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण का धनात्मक प्रभाव पाया जावेगा।
4. माध्यमिक स्तर पर अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण का धनात्मक प्रभाव पाया जावेगा ।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

स्थान एवं संसाधन की दृष्टि से यह अध्ययन रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample)** –

अध्ययन हेतु रायपुर शहर की 2 शासकीय एवं 2 अशासकीय शालाओं का चयन किया गया। प्रत्येक शाला की कक्षा दसवीं के 50–50 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक चयन किया गया। इस प्रकार शासकीय विद्यालयों से 100 तथा अशासकीय विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों को शोध हेतु चयनित किया गया।

- **उपकरण (Tools)** –

प्रस्तुत लघुशोध हेतु निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक उपकरणों का चयन किया गया है।

1. सृजनात्मकता के मापन हेतु – डॉ. बाकर मेहदी द्वारा निर्मित Creative Thinking का शाब्दिक परीक्षण (हिन्दी)
2. शालेय वातावरण मापनी – डॉ.के.एस.मिश्रा, द्वारा निर्मित School Environment Inventory (हिन्दी)

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operation) –

परिकल्पना की पुष्टि के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी विश्लेषण किया गया –

परिकल्पना क्रमांक – 01

माध्यमिक स्तर पर शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 1

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमान एवं क्रांतिक अनुपात

विद्यार्थी	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	σd	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थकता
अशासकीय	100	98.10	29.46	4.74	2.11	सार्थक अंतर है।
शासकीय	100	88.10	37.20			

व्याख्या – प्रदत्तों के आंकलन से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.11 है, जो 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर क्रांतिक अनुपात के मान 1.98 तथा 1 प्रतिशत विश्वास स्तर मान 2.63 से अधिक है इसलिए शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक–01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

माध्यमिक स्तर पर शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 2

शासकीय एवं अशासकीय विद्यार्थियों के शालेय वातावरण के मध्यमान एवं क्रांतिक अनुपात

विद्यार्थी	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	σd	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थकता
अशासकीय	100	170.75	35.09	4.61	1.19	सार्थक अंतर नहीं है।
शासकीय	100	165.25	29.90			

व्याख्या : प्रदत्तों के आंकलन से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.19 है। जो 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर मान 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना क्रमांक–02 की पुष्टि नहीं होती एवं यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

माध्यमिक स्तर पर शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण का धनात्मक प्रभाव पाया जावेगा।

सारणी क्रंमाक – 3

शासकीय विद्यालयों के शालेय वातावरण एवं सृजनात्मकता में सह–संबंध

समूह	N	सह–संबंध गुणांक	निष्कर्ष
शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी	100	0.29	निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध

व्याख्या – कार्ल पियर्सन विधि द्वारा शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शालेय वातावरण के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना की गई। गणना से सहसंबंध गुणांक का मान 0.29 प्राप्त हुआ है जो निम्न धनात्मक सह–संबंध को दर्शाता है अर्थात् शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शालेय वातावरण के मध्य निम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया है। अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक–03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

माध्यमिक स्तर पर अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण का धनात्मक प्रभाव पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 4

अशासकीय विद्यालयों के शालेय वातावरण एवं सृजनात्मकता में सह–संबंध गुणांक

समूह	N	सह–संबंध गुणांक	निष्कर्ष
अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी	100	0.40	निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध

व्याख्या – अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शालेय वातावरण के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना की गई। गणना से सहसंबंध गुणांक का मान 0.40 प्राप्त हुआ है जो निम्न धनात्मक सह–संबंध को दर्शाता है अर्थात् अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शालेय वातावरण के मध्य निम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया है। अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक – 4 की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. माध्यमिक स्तर पर शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अंतर होता है। अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होती है।
2. माध्यमिक स्तर पर शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
   - पूर्णतः शहरी क्षेत्र में स्थित होने के कारण दोनों प्रकार के विद्यालयों का शालेय वातावरण समकक्ष पाया गया।
   - दोनों प्रकार के विद्यालयों में विषयवार प्रशिक्षित शिक्षक पर्याप्त संख्या में पदांकित हैं।
   - दोनों प्रकार के विद्यालयों में संस्था प्रमुख एवं शिक्षक स्टाफ, शालेय वातावरण को प्रभावपूर्ण एवं विद्यार्थियों के विकास के लिए उपयुक्त बनाने हेतु सतत् प्रयासरत हैं।
3. माध्यमिक स्तर पर शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण का निम्न धनात्मक प्रभाव पाया गया। प्रोत्साहन से ही सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है। शासकीय विद्यालयों में भी शिक्षकों के प्रोत्साहन एवं पालकों के सहयोग से सृजनशीलता का विकास होता है।
4. माध्यमिक स्तर पर अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शालेय वातावरण का निम्न धनात्मक प्रभाव पाया गया। अशासकीय विद्यालयों में सुविधाओं का सदुपयोग होता है। जिससे विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिलता है तथा वे सृजनशील होते हैं।

सुझाव (Suggestions) –

प्रस्तुत लघु शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं–

1. पारिवारिक एवं शालेय वातावरण सृजनात्मकता के विकास के अनुरूप, शांत एवं तनाव रहित हो।
2. परिवार में स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पालकों द्वारा बालकों को पर्याप्त सुविधाएँ दी जानी चाहिए।
3. दंड से सृजनशीलता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः दण्ड के बजाय पुरस्कार एवं प्रोत्साहन पर बल दिया जाना चाहिए।
4. शिक्षक द्वारा विद्यालय एवं बालक की शिक्षा, पाठ्यक्रम एवं शालेय गतिविधियों पर निरंतर ध्यान देते हुए संबंधित समस्याओं का निराकरण करना चाहिए।
5. समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, निर्देशन एवं परामर्श केन्द्रों में परामर्श के कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

- आचार्य प्रेमनारायण (1991) – ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मक और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन।'' लघुशोध प.र.शु.वि.वि. रायपुर।
- कुमरान, डॉ. एच. के. (2003) – ''संस्थागत वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि।'' एडुट्रेट, जून 2003 वाल्यूम –2(10) पृष्ठ क्रमांक – 22, 23
- सिंह, ए.पी. (1982) – ''विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।'' लघुशोध प्रबंध पं. रविशंकर शु.वि.वि., रायपुर।
- शर्मा, डॉ. आर. ए. (2007) – ''शिक्षा अनुसंधान'', आर लाल बुक डिपो, मेरठ

7. ''नक्सल प्रभावित क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों हेतु की गई वैकल्पिक व्यवस्था का उनकी शैक्षिक उपलब्धि व अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

शिवबालक दास साहू
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग)

सारांश

शिक्षा के बिना विकास की कल्पना संभव नहीं है। जब बच्चों की शिक्षा किन्हीं कारणों से बाधित होती है तो सम्पूर्ण समाज के लिए चिंता का कारण बन जाती है। ऐसा ही कुछ छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में हो रहा है। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में पूरे गाँव को सुरक्षा की दृष्टि से कैम्पों में रखा जा रहा है। इन परिस्थितियों में बच्चों की शिक्षा प्रभावित हुई है। शासन द्वारा ऐसे बच्चों की शिक्षा की निरंतरता के लिए वैकल्पिक व्यवस्था के अंतर्गत पोटा केबिन स्कूल, आवासीय ब्रिज कोर्स की व्यवस्था की है। वैकल्पिक व्यवस्था के प्रभाव से बच्चों को प्राप्त होने वाली शिक्षा कितनी प्रभावी है, इसका बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या पड़ता है यह जानने के लिए यह शोध कार्य किया गया है। शोध निष्कर्षों के अनुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने हेतु और प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा के बिना विकास की कल्पना संभव नहीं है। यदि बच्चों की शिक्षा किन्हीं कारणों से बाधित होती है तो सम्पूर्ण समाज के लिए चिंता का कारण बन जाती है। ऐसा ही कुछ छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में हुआ है। शासन स्तर से ऐसे बच्चों की शिक्षा की निरंतरता के लिए वैकल्पिक व्यवस्था के अंतर्गत पोटा केबिन स्कूल, आवासीय ब्रिज कोर्स, आश्रम शाला की स्थापना की गई है जिसके अंतर्गत नक्सल प्रभावित बच्चों की शिक्षा जारी है। इन वैकल्पिक व्यवस्थाओं के प्रयास कितने प्रभावी हैं यह जानना आवश्यक है ताकि इनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सके।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

1. नक्सल प्रभावित क्षेत्र में वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था तथा गैर वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर का अध्ययन करना।
2. नक्सल प्रभावित क्षेत्र में वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था तथा गैर वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिरुचि का अध्ययन करना।
3. नक्सल प्रभावित क्षेत्र में वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

परिकल्पना क्रमांक–1 – वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था तथा गैर वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

परिकल्पना क्रमांक–2 – वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था तथा गैर वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample) –**

❖ नक्सल प्रभावित क्षेत्र के विकास खंड गीदम, जिला दंतेवाड़ा में वैकल्पिक व्यवस्था के अंतर्गत पूर्व माध्यमिक शाला पोटा कैबिन कारली की कक्षा 7वीं के 12 विद्यार्थी एवं आवासीय ब्रिज कोर्स आश्रम कासोली के कक्षा 7वीं के 38 विद्यार्थियों का सौद्देश्य चयन किया गया।

❖ नक्सल प्रभावित क्षेत्र में गैर वैकल्पिक व्यवस्था के अंतर्गत कक्षा 7वीं में अध्ययनरत् पूर्व.मा.शाला कारली के 25, शास.पूर्व.मा.शाला फसरपाल के 11 तथा संयुक्त आश्रम शाला फरसपाल के 14 विद्यार्थियों का सौद्देश्य चयन किया गया।

❖ वैकल्पिक व्यवस्था के अंतर्गत कक्षा 7वीं के 50 विद्यार्थियों तथा गैर वैकल्पिक व्यवस्था के अंतर्गत 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

- **उपकरण (Tools)** –

अध्ययन के लिए निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग किया गया है।

(अ) शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित

(ब) शैक्षिक अभिरूचि परीक्षण – स्वनिर्मित

(स) वैकल्पिक व्यवस्था की जानकारी – स्वनिर्मित हेतु शिक्षक प्रश्नावली

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) –

वैकल्पिक व्यवस्था एवं गैर वैकल्पिक व्यवस्थाओं के विद्यार्थियों के प्राप्तांक का अलग–अलग मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, स्वतंत्रता के अंश, सहसंबंध गुणांक ज्ञात किये गये हैं।

परिकल्पना क्रमांक – 01

वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था तथा गैर वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक – 01

वैकल्पिक व्यवस्था तथा गैर वैकल्पिक व्यवस्था में अध्ययनरत्
विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

परीक्षण	संख्या विद्यार्थी N	मध्यमान M	मानक विचलन σ	मानक त्रुटि σd	df	क्रांतिक अनुपात C.R.	सार्थकता
वैकल्पिक व्यवस्था की शैक्षिक उपलब्धि	50	32	11.18	1.835	98	3.7	सार्थक अंतर है।
गैर वैकल्पिक व्यवस्था की शैक्षिक उपलब्धि	50	38.80	6.6				

व्याख्या – वैकल्पिक व्यवस्था में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा गैर वैकल्पिक व्यवस्था में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में क्रांतिक अनुपात का मान 3.70 है जो 98 df पर 1 प्रतिशत विश्वास स्तर के निर्धारित मान 2.58 से अधिक है अर्थात् वैकल्पिक व्यवस्था तथा गैर वैकल्पिक व्यवस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया है। अतः परिकल्पना–01 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था तथा गैर वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक – 02

वैकल्पिक व्यवस्था एवं गैर वैकल्पिक व्यवस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की
शैक्षिक अभिरुचि

परीक्षण	संख्या विद्यार्थी	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	d.f.	सार्थक अनुपात C.R.	सार्थकता
वैकल्पिक व्यवस्था की शैक्षिक अभिरुचि	50	49.4	10.22	1.793	98	4.907	सार्थक अंतर पाया गया। P<.01
गैर वैकल्पिक व्यवस्था की शैक्षिक अभिरुचि	50	40.6	7.52				

व्याख्या – वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि तथा गैर वैकल्पिक व्यवस्था में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में क्रांतिक अनुपात का मान 4.90 है जो 98 df तथा 1 प्रतिशत विश्वास स्तर के निर्धारित मान 2.58 से अधिक है अर्थात् वैकल्पिक व्यवस्था तथा गैर

वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अंतर पाया गया है। अतः परिकल्पना – 02 की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. वैकल्पिक व्यवस्था एवं गैर वैकल्पिक व्यवस्था का प्रभाव अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पाया गया है।
2. वैकल्पिक तथा गैर वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था का प्रभाव बच्चों की शैक्षिक अभिरुचि पर पाया गया।
3. वैकल्पिक व्यवस्था एवं गैर वैकल्पिक व्यवस्था दोनों में शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। अतएव विद्यार्थियों के लिए शिक्षा व्यवस्था में सुधार की नितांत आवश्यकता है जिससे शिक्षा में समुचित व्यवस्था की दिशा में विकास हो सके।

सुझाव (Suggestions) –

1. शिक्षकों की कमी को दूर करने के लिए शिक्षकों को समूह शिक्षण एवं स्थानीय स्रोतों का उपयोग करना चाहिए।
2. विद्यार्थियों में ज्ञान व समझ विकसित करने हेतु विपरीत परिस्थिति में भी शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं/व्यवस्थाओं का समुचित उपयोग करना चाहिए।
3. संज्ञानात्मक क्षेत्रों के साथ–साथ, खेलकूद, योग, सांस्कृतिक गतिविधियों व नैतिक मूल्यों की शिक्षा तथा व्यक्तित्व विकास हेतु प्रशासन द्वारा समय–समय पर शालाओं को निर्देशित किया जाए तथा ख्याति प्राप्त शिक्षकों, शिक्षाविदों, समाज सेवियों से विद्यार्थियों को बातचीत के अवसर दिए जाएँ।
4. सहायक शिक्षण सामग्री के प्रयोग द्वारा शिक्षण कार्य करने हेतु शिक्षकों को निर्देशित किया जाए।
5. शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करने वाले शिक्षकों को विशेष सम्मान व पुरस्कार दिया जाए।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. कपिल, एच. के. (2010) – अनुसंधान विधियाँ
2. सरीन एवं सरीन (2006) – शैक्षिक तथा मानसिक मापन एवं मूल्यांकन
3. शर्मा, आर. ए. (2007) – शिक्षा अनुसंधान

8. ''बच्चों के अधिगम स्तर एवं रूचि पर बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति के प्रभाव का अध्ययन''

नीना शेन्डे
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग)

सारांश

शिक्षा का उद्देश्य बालक को शिक्षा ग्रहण करते समय सक्रिय रखना है। किसी बालक का सीखना उसकी मूलभूत क्षमताओं, चिन्तन, मनन, तर्क, स्मरण, कल्पना पर मनन करना है। बहुकक्षा, बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति बच्चों को सक्रिय रखकर सीखने में सहायता करती है। प्रस्तुत अध्ययन में इस पद्धति की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है एवं पाया गया है कि MGML शिक्षण पद्धति से शिक्षण द्वारा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिरूचि में वृद्धि हुई है। MGML पद्धति द्वारा अध्यापन से कक्षा में अनुशासन की समस्या हल हुई है।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा का उद्देश्य बालक को शिक्षा ग्रहण करते समय सक्रिय रखना है। शिक्षा प्रदान करते समय शिक्षक का यह पुनीत कर्तव्य माना जाता है कि वह बालक की शारीरिक, मानसिक शक्तियों, योग्यताओं, रूचियों और रूझान का अध्ययन करे तथा बालक की क्षमताओं के अनुकूल ही उसे शिक्षा प्रदान करे।

वास्तव में बच्चों के सीखने के स्तर एवं क्षमता में अंतर होता है। हमारी शिक्षण व्यवस्था में प्रायः एक कक्षा के सभी बच्चों को एक साथ बैठाकर एक ही पाठ्य वस्तु को प्रस्तुत किया जाता है। उनके अलग–अलग स्तर का मापन नहीं किया जाता। किन्तु जब एक शिक्षक एक ही समय में अलग–अलग श्रेणी एवं अलग–अलग स्तर, अलग–अलग क्षमताओं एवं रूचियों से सीखने वाले बच्चों का शिक्षण बालकेन्द्रित ढंग से एक ही कक्षा कक्ष में करता है तब वहां बहुकक्षा, बहुस्तरीय शिक्षण व्यवस्था होती है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़ द्वारा प्राथमिक स्तर पर विषयगत मूल अवधारणाओं को समान रूप से प्रत्येक बच्चे में विकसित करने के दृष्टिकोण से बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति को राज्य में लागू किया गया है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

1. बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
2. बहुकक्षा–बहुस्तरीय पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिरूचि ज्ञात करना।
3. शिक्षकों की बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना

4. बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति द्वारा अध्यापन से आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।
5. बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण पद्वति के द्वारा अध्यापन की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

1. MGML शिक्षण पद्धति एवं परंपरागत विधि से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. MGML विधि एवं परंपरागत विधि से पढ़ने वाले बच्चों शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
3. MGML शिक्षण विधि द्वारा अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

शोध प्रश्न – 01

क्या MGML शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी?

शोध प्रश्न – 02

क्या अध्ययन सामग्री की उपलब्धता एवं प्रभावपूर्ण प्रशिक्षण के उपरांत कक्षा में शिक्षकों की अनुशासन की समस्या हल होगी?

परिसीमन (Delimitation of the study) – यह शोध निम्नानुसार परिसीमित है –

1. शोध क्षेत्र के रूप में रायपुर जिले के गरियाबंद एवं धरसींवा विकासखण्ड तक।
2. गरियाबंद विकासखण्ड के अंतर्गत MGML विधि से संचालित तीन प्राथमिक शालाओं तक।
3. कक्षा पहली,दूसरी व तीसरी में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

- **न्यादर्श (Sample) –**

  प्रस्तुत अध्ययन के लिए रायपुर जिले के गरियाबंद विकासखंड की तीन प्राथमिक शालाओं के 50 तथा धरसींवा विकासखंड की दो शालाओं के 50 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

  इन बच्चों को पढ़ाने वाले 20 शिक्षकों का सौद्देश्य चयन किया गया।

- **उपकरण (Tools)** –

  प्रस्तुत शोध में समस्या के अनुसार निम्न उपकरणों का चयन किया गया है –

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण में हिन्दी, गणित तथा पर्यावरण विषयों का समावेश किया गया है तथा प्रत्येक विषय के लिए वैकल्पिक प्रश्न रखे गये हैं।

अभिरूचि परीक्षण – इसमें 15 कथन हैं, अंकों का निर्धारण 3 Point Scale के आधार पर किया गया है।

अभिमतावली – शिक्षकों से बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति का मंतव्य लेने के लिए अभिमतावली बनायी गयी है जिसमें 22 कथन हैं जिनके द्वारा MGML शिक्षण पद्धति के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण जानने का प्रयास किया गया है।

इस मतावली में अंकों का निर्धारण 5 Point Scale के आधार पर किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical operations) –

परिकल्पना क्रमांक–01

MGML शिक्षण पद्धति एवं परंपरागत विधि से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 01

परंपरागत एवं MGML पद्धति द्वारा अध्यापन करने वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात

सं.क्रं.	शिक्षण विधि	N	Mean	S.D.	Df	C.R.	सार्थकता
1	परंपरागत विधि	50	25.4	6.95	98	6.64	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
2	MGML	50	34.1	6.20			

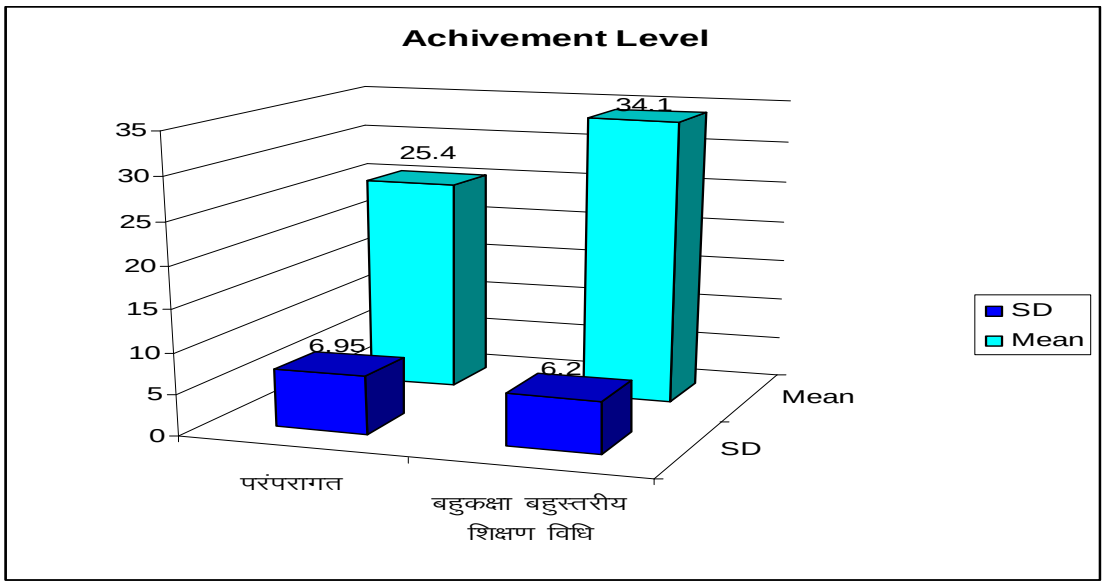

व्याख्या – परंपरागत विधि एवं MGML पद्धति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 25.4 एवं 34.1 पाया गया इस अंतर की सार्थकता को ज्ञात करने के लिए t के मान की गणना की गयी। t

तालिका के अनुसार 1% स्तर पर 98 df लिये t का मान 2.63 है। अध्ययन द्वारा प्राप्त मान इससे अधिक है इसलिए मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रं. – 1 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रं.–0 2

MGML पद्वति एवं परंपरागत विधि से पढ़ने वाले बच्चों की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

परंपरागत एवं MGML पद्वति द्वारा अध्यापन करने वाले बच्चों की शैक्षिक अभिरूचि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात

सारणी क्रमांक – 02

सं.क्रं.	शिक्षण विधि	N	Mean	S.D.	C.R.	सार्थकता
1	परंपरागत	50	29.7	7.5	3.73	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
2	MGML	50	34.7	5.85		

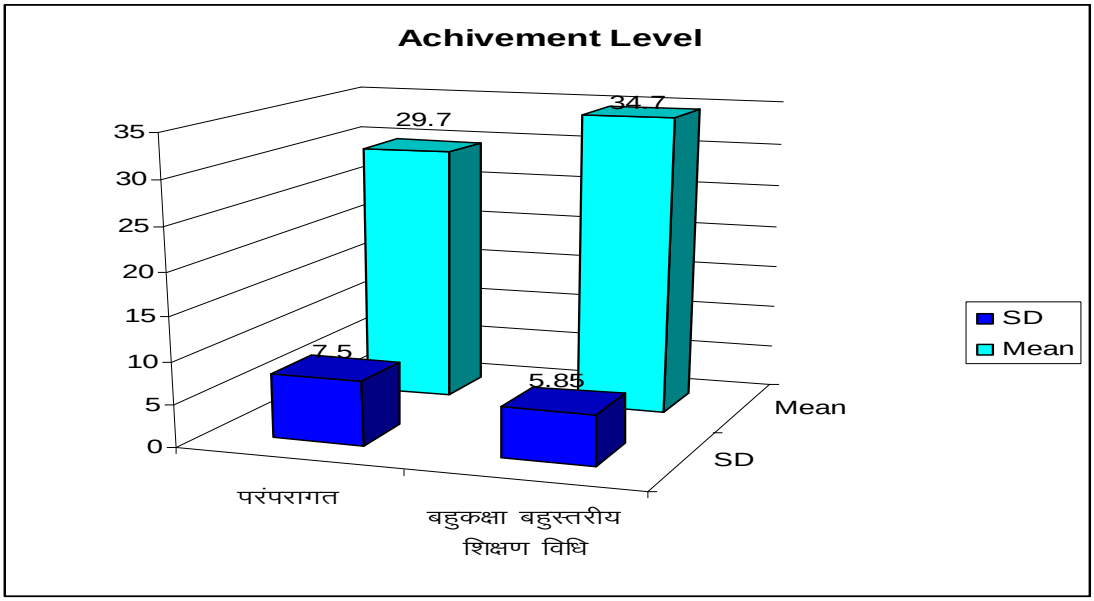

व्याख्या :– सारणी के अनुसार MGML पद्धति के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का मध्यमान 34.7 पाया गया तथा परंपरागत विधि के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का मध्यमान 29.7 पाया गया इस अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये t के मान की गणना की गई। t तालिका के अनुसार 1% विश्वास स्तर पर 98 df के लिए t का मान 2.63 है। प्राप्त मान 3.73 है जो कि इससे अधिक है अतः मध्यमानों में सार्थक अंतर है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि MGML पद्धति एवं परंपरागत विधि से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में अंतर है। अतः परिकल्पना क्रं. 2 स्वीकृत हुई।

ifjdYiuk Ø-& 03

MGML शिक्षण पद्धति द्वारा अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

Lkkj.kh Øekd & 03

MGML पद्धति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में सहसंबंध

स.क्र.	चर	विद्यार्थियों की संख्या	सहसंबंध	परिणाम
1	उपलब्धि	50	0.86	उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया
2	अभिरूचि	50		

व्याख्या – सारणी से स्पष्ट है कि MGML विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में + 0.86 सहसंबंध गुणांक पाया गया जो कि उच्च धनात्मक सहसंबंध है।

अतः हम कह सकते हैं कि MGML पद्धति द्वारा अध्ययनरत् बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि में धनात्मक सहसंबंध होता है। अतः परिकल्पना क्रं. 3 स्वीकृत की जाती है।

शोध प्रश्न – 01

क्या MGML शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी?

व्याख्या –MGML शिक्षण विधि का प्रभाव देखने हेतु बच्चों के लिये अभिरूचि प्रश्नावली तैयार की गयी। 3 मापनी स्केल निर्धारित किया गया जिसमें 3 विकल्प दिये गये। सहमत – 3 अंक, कह नहीं सकते – 2 अंक, असहमत – 1 अंक

अभिरूचि प्रश्नावली के मूल्यांकन पश्चात् प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार 85% विद्यार्थियों की कक्षा में उपस्थिति बढ़ी है। बच्चे अध्ययन में रूचि लेने लगे हैं। क्योंकि MGML शिक्षण विधि बच्चों के अधिगम स्तर को अधिक प्रभावित करती है। बच्चों की अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ने के विभिन्न कारण हैं जैसे –

1. बच्चे कार्ड ,कहानी, कविता के माध्यम से सीखते हैं।
2. बच्चों के बस्ते का बोझ कम हो गया है।
3. बच्चे समूह में सीखते हैं।
4. स्वयं अपनी गति से सीखते हैं।
5. खेल–खेल में सीखते हैं।
6. विभिन्न विषयों में पाठयक्रम में परिवेशीय वस्तुओं से जोड़ा गया है।

शोध प्रश्न – 02

क्या अध्ययन सामग्री की उपलब्धता एवं प्रभावपूर्ण प्रशिक्षण के उपरांत कक्षा में शिक्षकों की अनुशासन की समस्या हल होगी?

शिक्षकों के लिए अभिमतावली को फिंगेश्वर ब्लाक के 10 शिक्षकों एवं गरियाबंद ब्लाक के 10 शिक्षकों पर प्रशासित किया गया। यदि किसी कथन से वे पूर्णतः सहमत हैं उन्हें 5 अंक प्रदान किया गया उसी प्रकार पूर्णतः असहमत होने पर 1 अंक दिया गया।

शिक्षकों द्वारा प्राप्त औसत अंक

संक्रं.	प्रश्न	औसत अंक	औसत अंक का प्रतिशत
1	बच्चों की शाला में उपस्थिति	4.0	80
2	बच्चे पूरे समय शाला में रूकते हैं	4.3	80
3	शाला समय के बाद भी रूकते हैं	2.0	40
4	छुट्टी के दिन भी आना चाहते हैं	2.0	40
5	बच्चों को सीखने में आनंद आ रहा है	4.0	80
6	शिक्षक की अनुपस्थिति में कार्ड की सहायता से बच्चे स्वयं सीखते हैं	3.0	60
7	बच्चे अपने साथियों से सीखते हैं	3.5	70
8	कक्षा वातावरण में सुधार पाया गया	4.25	85
9	बच्चों की झिझक कम हुई है	4.0	80
10	शिक्षक पर निर्भरता कम हुई है	2.25	45
11	पालकों में संतोष है	3.25	65
12	पालकों की सहभागिता बढ़ी है	3.0	60
13	पालक समझ रहे हैं बच्चों को सीखने में आनंद आ रहा है	3.5	70
14	बच्चों में अध्ययन के प्रति रूचि जागृत हुई है	4.25	85
15	यह विधि बच्चों के सीखने के लिए उपयोगी है	3.5	70
16	इस विधि द्वारा बच्चे आत्मनिर्भर हुए हैं	2.25	55
17	शिक्षक और बच्चों में मित्रवत व्यवहार है	4.25	85
18	कक्षा में अनुशासन की समस्या हल हुई है	3.0	60
19	बच्चों में स्वयं कार्ड लेने व रखने के कारण जिम्मेदारी उत्पन्न हुई है	3.75	75
20	बच्चों में एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना बढ़ी है	4.0	80
21	इस विधि द्वारा बच्चों में अवधारणा पूर्णतः स्पष्ट होती है	2.5	50
22	MGML शिक्षण पद्धति में बच्चे अपनी गति से सीखते हैं	3.25	65

व्याख्या – प्राप्त अभिमतावली का मूल्यांकन करने पर निम्न निष्कर्ष निकाला गया।

कथन क्रं. (8) कक्षा वातावरण में सुधार पाया गया अर्थात् अनुशासन की समस्या हल हुई ।

(11) बच्चों में सीखने के प्रति रूचि बढ़ी है।

(17) शिक्षक तथा छात्रों के मध्य संबंध में सुधार आया है।

इस प्रकार MGML पद्धति द्वारा अध्यापन से शिक्षकों की अनुशासन की समस्या हल हुई है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

प्रस्तुत शोध से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. MGML शिक्षण पद्धति शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में व्याख्यान विधि की तुलना में अधिक प्रभावशाली है।
2. MGML पद्धति अभिरूचि के संदर्भ में व्याख्यान विधि की तुलना में अधिक प्रभावशाली है।
3. MGML शिक्षण पद्धति द्वारा अध्ययनरत बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि के मध्य अति उच्च धनात्मक सहसंबंध है अर्थात् यदि शिक्षण विधि के माध्यम से अभिरूचि का विकास किया जाये तो उपलब्धि में वृद्धि होगी।
4. दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं को पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने से बच्चों में अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ी है।
5. MGML पद्धति विधि द्वारा अध्यापन से कक्षा में अनुशासन की समस्या हल हुयी है।

सुझाव (Suggestions) –

1. MGML पद्धति द्वारा संचालित संस्थाओं में समस्त सहायक सामग्री शीघ्र प्रदान करनी चाहिए।
2. MGML पद्धति के प्रचार–प्रसार के लिए जनसम्पर्क विभाग से सहायता लेनी चाहिए।
3. शिक्षकों हेतु प्रभावशाली प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ (Refernces) –

- कुमार श्री गुलशन (2008–09) – ''परंपरागत एवं बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण विधि द्वारा गणित अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।''
- राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़ – सृजन बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षक, संदर्शिका।
- Verulkar Archana (2009-10) - A study of achievement level and interest in learning of children studying by Traditional and Mulit Grade Multi Level Methodology.

9. ''अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्थिति के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रूचि का अध्ययन''

सुकदेव राम साहू
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग)

सारांश

अनुसूचित जनजातियों विशेषतर हल्बा और मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों के परिवार का शैक्षिक वातावरण समान होने के कारण दोनों जनजातियों की शिक्षा के प्रति रूचि एक जैसी है। अतः शैक्षिक उपलब्धि भी एक जैसी है। शैक्षिक वातावरण का दोनों जनजातियों में न होने का कारण अशिक्षा, गरीबी और रूढ़िवादिता के तहत् पालकों में नकारात्मक दृष्टिकोण है। सामाजार्थिक स्तर का कोई भी प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि पर नहीं पड़ता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

विश्व के जनजातीय मानचित्र में भारत का स्थान, अफ्रीका के बाद अंकित है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या लगभग 8.43 करोड़ है जो देश की जनसंख्या का लगभग 8.2 प्रतिशत है। जनगणना 2001 के अनुसार छ.ग. में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 66,16,596 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 32,87,334 है। छ.ग. राज्य की कुल अनुसूचित जनजाति का 13.10 प्रतिशत बस्तर जिले में निवास करते हैं। बस्तर जिले में (जनगणना 2001 के अनुसार) अनुसूचित जनजातियों के व्यक्तियों की संख्या 8,66,488 है जिसमें पुरूष 4,28,973 तथा महिलायें 4,37,515 हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के 63 वर्षों के पश्चात् भी छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में 43.91 प्रतिशत लोग ही साक्षर हैं। सरकार द्वारा भरसक प्रयत्न करने के बाद भी आदिवासी क्षेत्रों में साक्षर व्यक्तियों के प्रतिशत में आशातीत वृद्वि एवं विकास नहीं हो पा रहा है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी संतोषजनक नहीं है। इस शोध में बस्तर जिले के हल्बा एवं मुरिया जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजार्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

1. हल्बा एवं मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्थिति ज्ञात करना।
2. हल्बा एवं मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
3. हल्बा एवं मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का पता लगाना।

4. हल्बा एवं मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजार्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. हल्बा एवं मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि पर सामाजार्थिक स्थिति के प्रभाव को ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं :–

1. हल्बा तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. हल्बा तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
3. उच्च सामाजार्थिक स्तर वाले हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।
4. उच्च सामाजार्थिक स्तर वाले मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।
5. हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
6. मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
7. मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजार्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
8. हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजार्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।

परिसीमन (Delimitation of the Study) –

यह शोध बस्तर जिले के तीन विकासखंड केशकाल, बड़े राजपुर तथा बस्तर के ग्रामीण अंचलों की 6 शालाओं के 155 विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि

- **न्यादर्श (Sample)** –

इस शोध हेतु अनियत प्रतिदर्श विधि (Simple Random Sampling) से कक्षा 10 वीं में अध्ययनरत 155 (58 हल्बा एवं 97 मुरिया जनजाति) के विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चुना गया है, ये बस्तर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हैं।

- **उपकरण (Tools) –**

1. सामाजार्थिक स्तर मापनी – SESS, R.L. BHARDWAJ
2. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित परीक्षण
3. शैक्षिक रूचि परीक्षण – S.P. KULSHRESHTHA

संख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operation) –

परिकल्पना क्रमांक – 01

हल्बा तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक – 01

समूह	N	M	Sd	df	CR	परिणाम
हल्बा जाति के विद्यार्थी	58	51.034	13.6	114	4.95	.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है।
मुरिया जानजाति के विद्यार्थी	58	39.387	15.1			

व्याख्या – हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 51.034 तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 39.387 है। इन दोनों मध्यमानों का अंतर 11. 647 है। इस मध्यमानों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये क्रांतिक अनुपात (C.R.) की गणना की गई जिसका मान 4.9593 प्राप्त हुआ। जबकि (C.R.) तालिका के अनुसार 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर (C.R.) का मान 2.58 व 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर 1.96 है। प्राप्त (C.R.) का मान दोनों विश्वास स्तर के मानों से अधिक है अतः मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर परिकल्पना क्रमांक 1 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षः– हल्बा तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

हल्बा तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 02

समूह	N	M	Sd	df	CR	परिणाम
हल्बा	58	56.206	13.5	114	1.389	सार्थक अंतर नहीं है
मुरिया	58	53.144	12.9			

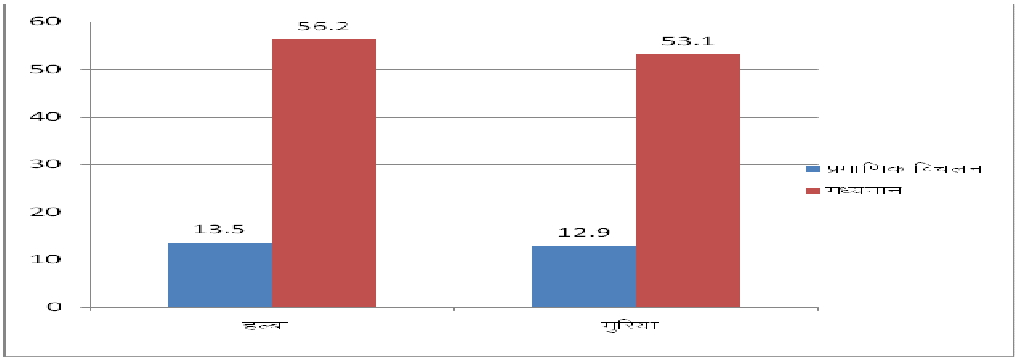

व्याख्या – हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान 56.206 तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान 53.144 है दोनों मध्यमानों का अंतर 3.062 है। इन मध्यमानों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R.) की गणना की गई। क्रांतिक अनुपात का मान 1.389 प्राप्त हुआ। (C.R.) तालिका के अनुसार 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर (C.R.) का मान कम से कम 2.58 है एवं 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर कम से कम 1.96 है। प्राप्त (C.R.) का मान दोनों विश्वास स्तर के मान से कम है। अतः परिकल्पना क्रमांक–02 की पुष्टि नहीं होती है।

निष्कर्ष :– हल्बा तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः हल्बा तथा मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक रूचि समान दिखाई देती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

उच्च सामाजार्थिक स्तर वाले हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 03, 04

समूह	N	M	Sd	df	परिणाम
हल्बा	58	45.74	5.314	114	उच्च सामाजिक स्तर का एक भी विद्यार्थी प्राप्त नहीं हुआ। परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती है।
मुरिया	58	46.58	6.77		

व्याख्या :– उच्च सामाजार्थिक स्तर का 1 भी विद्यार्थी प्राप्त नहीं हुआ। अधिकांश विद्यार्थियों का सामाजार्थिक स्तर मध्यम एवं कुछ विद्यार्थियों का सामाजार्थिक स्तर निम्न पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 3 की पुष्टि नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

उच्च सामाजार्थिक स्तर वाले मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

व्याख्या :– उच्च सामाजार्थिक स्तर का 1 भी विद्यार्थी प्राप्त नहीं हुआ। अधिकांश विद्यार्थियों का सामाजार्थिक स्तर मध्यम एवं कुछ विद्यार्थियों का सामाजार्थिक स्तर निम्न पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 3 की पुष्टि नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक –05

हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 05 एवं 06

समूह	N	M		Sd		r	परिणाम
हल्बा	58	56.206	51.034	13.5	13.6	0.1002	**+ ve** सहसंबंध
मुरिया	58	53.144	39.387	12.9	15.1	0.114	**- ve** सहसंबंध

व्याख्याः– हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक 0.1002 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षणों में निम्न धनात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है अतः परिकल्पना क्रमांक 05 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 06

मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

व्याख्या :– मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.114 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षण में निम्न कोटि के ऋणात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है । अतः परिकल्पना क्रमांक–06 की पुष्टि नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 07

मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 07, 08

समूह	N	M		Sd		r	परिणाम
हल्बा	58	45.74	56.204	5.314	13.6	– 0.279	**- ve** सहसंबंध
मुरिया	58	46.587	39.38	12.9	6.77	– 0.106	**- ve** सहसंबंध

व्याख्या :– मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक का मान –0.106 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षणों में अत्यंत न्यून स्तर का ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्शित करता है। अतः परिकल्पना 07 की पुष्टि नहीं होती।

परिकल्पना क्रमांक– 08

हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजार्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जावेगा।

व्याख्या :– हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजार्थिक स्तर एवं शैक्षिक रूचि परीक्षण के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक का मान –0.279 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षण में न्यून स्तर का ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्शित करता है अतः परिकल्पना क्रमांक 8 की पुष्टि नहीं होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. दोनों की जनजातियों के विद्यार्थियों के परिवार का शैक्षिक वातावरण समान होने के कारण शिक्षा के प्रति रूचि भी लगभग समान है।
2. हल्बा एवं मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों में उच्च सामाजार्थिक स्तर के विद्यार्थी नहीं मिले इसका कारण ग्रामीण परिवेश में अभिभावकों में शिक्षा के प्रति रूचि का अभाव, गांव में उचित शैक्षिक वातावरण का न होना, रूढ़िवादिता, सामाजिक बुराईयाँ, अशिक्षा, गरीबी, कन्या शिक्षा के

प्रति पालकों का नकारात्मक दृष्टिकोण एवं इस क्षेत्र की समसामयिक एवं आंतरिक वातावरण भी हो सकते हैं।

3. मुरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।
4. मुरिया एवं हल्बा जनजाति के विद्यार्थियों को सामाजार्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है।

सुझाव (Suggestions) –

1. पाठ्यचर्चा एवं पाठ्यपुस्तकों को ग्रामीण परिवेश के स्तर के अनुरूप बनाया जाये जिससे अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रूचि जागृत हो।
2. शिक्षाकर्मियों की नियुक्ति ग्रामीण क्षेत्रों में हो जिनमें शिक्षिकाओं की संख्या शिक्षकों के बराबर हो जिससे ग्रांमीण बालिकाओं को पढ़ने एवं सीखने के प्रति रूचि उत्पन्न हो सके।
3. पुस्तकें, कापियाँ व अन्य लेखन सामग्री निर्धन परिवार के विद्यार्थियों को निःशुल्क उपलब्ध करायी जावें।
4. ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति एवं जनसंख्या के आधार पर बालिकाओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था हो ताकि दूर दराज क्षेत्रों की बालिकाओं को इसका लाभ मिल सके।
5. शिक्षक हल्बा एवं मुरिया जनजाति क्षेत्रों के बच्चों के साथ अपनत्व तथा तालमेल बिठाएं।
6. शासन द्वारा बनाई गई सामाजार्थिक व शैक्षिक विकास योजनाओं का व्यापक प्रचार प्रसार किया जावे तथा कागजी पत्रक आदान प्रदान के बजाए वास्तविक रूप से क्रियान्वत किया जावे।

संदर्भ (References) –

1. भुवाल महेन्द्र कुमार (2002–03) – ''आदिवासी क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर के अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का उनकी स्वचेतना तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पढ़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''
2. राय, श्रीमती सीमा (1999–2000) – ''बस्तर जिले की अनुसूचित जनजाति के विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन''

10. ''विभिन्न संवर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन''

राजकिरण देवांगन
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग)

सारांश

प्रस्तुत शोध में विभिन्न संवर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है तथा पाया गया कि अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है किंतु उनके पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है। विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और पारिवारिक वातावरण में निम्न सहसंबंध है।

प्रस्तावना (Introduction) –

प्रारंभ के चार–पांच वर्ष बालक अपने परिवार से घनिष्ठ रुप से जुड़ा रहता है। इस काल में बालक अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहता है। अतः बालक की सृजनात्मकता पर पारिवारिक वातावरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। शाला प्रवेश के बाद भी अधिकांश समय बालक परिवार में ही व्यतीत करता है, इस प्रकार सृजनात्मकता तथा बालक के समुचित विकास की संभावना पारिवारिक वातावरण पर निर्भर करती है। बालक के चित्त पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव चिरस्थायी होता है। यदि पारिवारिक वातावरण को बालक के समुचित विकास की दृष्टि से व्यवस्थित किया जाए तो एक अच्छे विद्यार्थी, नागरिक, लेखक, वैज्ञानिक आदि का निर्माण किया जा सकता है। जीवन की विभिन्न समस्याओं के प्रति सृजनशील व्यक्ति का दृष्टिकोण अन्य व्यक्तियों के दृष्टिकोण से भिन्न होता है। इस प्रकार सृजनात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति समस्याओं के प्रति जागरूकता होते हुए समाधान में जुट जाता है और नये–नये अविष्कार तथा खोज कर लेता है।

शोध का उद्देश्य (Objectives of the study) –

इस शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं–

परिकल्पना क्रमांक – 01

अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–1.1 – अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–1.2 – अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–1.3 – अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक – 02

अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–2.1 – अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–2.2 – अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–2.3 – अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक – 03

परिकल्पना क्रमांक–3.1 – अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता व उनके पारिवारिक वातावरण में धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–3.2 – अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता व उनके पारिवारिक वातावरण में धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–3.3 – सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता व उनके पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) – प्रस्तुत अध्ययन कार्य निम्नलिखित प्रकार से परिसीमित किया गया है–

1. स्थान की दृष्टि से नारायणपुर व बस्तर जिले के नारायणपुर ब्लाक एवं कोण्डागांव ब्लॉक तक।
2. कक्षा 10वीं के विभिन्न सवंर्ग के विद्यार्थियों तक।
3. संवर्गवार – अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग,सामान्य वर्ग के 40–40 विद्यार्थियों तक

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample) –**

अध्ययन के लिए निम्नलिखित विद्यालयों के विभिन्न संवर्गो के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

क्र.	विद्यालयों के नाम	अनुसूचित जनजाति	सामान्य	पिछड़ा वर्ग
1.	शासकीय हाईस्कूल महावीर चौक नारायणपुर	30	2	22
2.	सरस्वती शिक्षा मंदिर नारायणपुर	3	4	8
3.	गुरूकुल पब्लिक हाईस्कूल, नारायणपुर	7	4	5
4.	चावरा हायर सेकेण्डरी स्कूल, कोण्डागांव	–	30	5
	योग	**40**	**40**	**40**

- **उपकरण (Tools) –**

इस शोध हेतु निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक उपकरण प्रयुक्त किए गए –

- ❖ सृजनात्मकता मापन हेतु : प्रो. बाकर मेहदी द्वारा निर्मित Creative Thinking का शाब्दिक परीक्षण (हिन्दी संस्करण)
- ❖ घरेलू वातावरण मापन हेतुः के.एस. मिश्रा द्वारा निर्मित Home Environment Inventory (हिन्दी संस्करणं)

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical operations) –

उपकरणों के प्रशासन के उपरांत, इस हेतु निर्धारित रीति से आंकडों का एकत्रीकरण किया गया तथा आंकड़ों की मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और क्रांतिक अनुपात निकालकर परिकल्पनाओं की जाँच की गयी।

परिकल्पना क्रमांक–01

अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–1.1 – अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के बीच सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक–1

संवर्ग	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)
अनुसूचित जनजाति	40	45.7	15.8	3.78
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	60	18	

व्याख्या – 78 पर सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 है। यहाँ पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 3.78 है, अतः यह कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है, अतः परिकल्पना क्रमांक–1.1 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक–1.2 – अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक–2

संवर्ग	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	60	18	5.95
सामान्य वर्ग	40	86.2	21.2	

व्याख्या – 78 पर सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 0.01 स्तर पर 2.58 है। यहाँ पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान (5.95) है, अतः यह कहा जा सकता है कि अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है, अतः परिकल्पना क्रमांक–1.2 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक–1.3 – अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक–3

संवर्ग	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)
अनुसूचित जनजाति	40	45.7	15.8	13.87
सामान्य वर्ग	40	86.2	21.2	

व्याख्या – 78 पर सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 0.01 स्तर पर 2.58 है। यहाँ पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान (13.87) है, अतः यह कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है, अतः परिकल्पना क्रमांक–1.3 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक–2

अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

परिकल्पना क्रमांक–2.1 – अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक–4

संवर्ग	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)
अनुसूचित जनजाति	40	201.3	31	1.06
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	209.2	25.6	

व्याख्या – 78 पर सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है। यहॉ पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान (1.06) है, अतः यह कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है, अतः परिकल्पना क्रमांक–2.1 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–2.2 – अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक–5

संवर्ग	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	209.2	35.6	0.013
सामान्य वर्ग	40	209.1	31.8	

व्याख्या – 78 पर सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है। यहाँ पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.013 है, अतः यह कहा जा सकता है कि अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है, अतः परिकल्पना क्रमांक–2. 2 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–2.3 – अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 6

संवर्ग	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)
अनुसूचित जनजाति	40	201.3	31	1.11
सामान्य वर्ग	40	209.1	31.8	

व्याख्या – 78 पर सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है। यहाँ पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान (1.11) है, अतः यह कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है, अतः 5% विश्वास स्तर पर परिकल्पना–02 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–3.1

अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण के बीच धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

व्याख्या – उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु कार्ल पियर्सन विधि की सहायता से अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण के बीच सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.028 प्राप्त हुआ, जो कि निम्न धनात्मक सह संबंध को दर्शाता है। अतः परिकल्पना – 3.1 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक–3.2 – अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण के बीच धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

व्याख्या – उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु कार्ल पियर्सन विधि की सहायता से अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण के बीच सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.056 प्राप्त हुआ, जो कि निम्न धनात्मक सह संबंध को दर्शाता है। अतः परिकल्पना – 3.2 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक–3.3 – सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण के बीच धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

व्याख्या – उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु कार्ल पियर्सन विधि की सहायता से सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण के बीच सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.137 प्राप्त हुआ, जो कि निम्न धनात्मक सह संबंध को दर्शाता है। अतः परिकल्पना – 3.3 की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है। सामान्य वर्ग की विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है।
2. अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है।
3. अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता व पारिवारिक वातावरण में निम्न धनात्मक सह–संबंध पाया गया है।
4. अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण में निम्न धनात्मक सह–संबंध पाया गया है।
5. सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण में निम्न धनात्मक सह–संबंध पाया गया है।

सुझाव (Suggestions) –

शोध हेतु चयनित समस्या के अध्ययन से प्रदत्त निष्कर्षों के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं :–

1. पालक तथा शिक्षक ऐसे आंतरिक व बाह्य वातावरण का निर्माण करें जिससे बच्चे में सृजनात्मक क्षमता का विकास हो।
2. शिक्षक तथा पालक, अपने बच्चों को ऐसा अवसर प्रदान करें जिससे बच्चे अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकें, शिक्षक तथा पालक इस पर अवरोध न करें तभी बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास संभव होगा।
3. पालक, अपने बच्चों को अनुशासित करने के लिए उनकी विशेष सुविधाओं से वंचित न करें।
4. पालक तथा शिक्षक अपने बच्चों को उनके द्वारा किए गए रचनात्मक कार्यों की प्रशंसा कर उन्हें पुरस्कार प्रदान करें, जिससे बच्चों में सृजनात्मकता का विकास हो सके।

संदर्भ (References) –

- कपिल, डॉ. एच.के. (2010), अनुसंधान विधियॉ भार्गव बुक हाउस आगरा,
- बाजपेयी, डॉ.एल.बी. (2002), विशिष्ट बालक – पृ.क्र. 59–85
- माथुर, डॉ. एस.एस. (2005), शिक्षा मनोविज्ञान– पृ.क्र. 400–405
- त्रिपाठी, सुरेन्द्र नाथ (1980), प्रतिभा और सृजनात्मकता

11. ''मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरों की समस्या समाधान योग्यता व उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन''

कु. संध्या शिवहरे
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग)

सारांश

बच्चों को उनकी योग्यताओं एवं अभिवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए उनके अनुकूल पाठ्यक्रम का निर्माण कर उन्हें शैक्षिक निर्देशन दिया जाना चाहिए। यह निर्देशन शिक्षकों, अभिभावकों एवं समाज सेवकों के माध्यम से दिया जा सकता है ताकि वह विद्यालय, समाज एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग कर सकें। बच्चों से तात्पर्य प्रत्येक बच्चे से है चाहे वह सामान्य हो या निःशक्त। मूकबधिर बच्चों के संदर्भ में इस शोध द्वारा उनकी समस्या समाधान क्षमता तथा शैक्षिक अभिवृत्ति के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई है। शोध के अनुसार मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्र, छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अंतर पाया गया किंतु शैक्षिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया। किशोर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता में उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

किसी भी राष्ट्र की प्रगति प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ मानवीय संसाधनों पर भी निर्भर करती है। मानवीय संसाधनों के विकास में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अतः राष्ट्र की प्रगति में जन समुदाय की सहभागिता के लिए सबको शिक्षा के समुचित अवसर सरलता से उपलब्ध होने चाहिए। इन समस्त जनों में मूकबधिर भी सम्मिलित हैं।

मूकबधिर विद्यार्थी, वे विद्यार्थी हैं जो न सुन सकते हैं, न बोल सकते हैं किंतु उनकी सोचने समझने की क्षमता सामान्य विद्यार्थियों जैसी ही होती है। किंतु प्रश्न यह उठता है कि उनकी शारीरिक निःशक्तता क्या समस्या को समझने उसके समाधान के उपाय खोजने को प्रभावित करती है? क्या उनकी निःशक्ता उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को प्रभावित करती है? जिसके कारण वे राष्ट्र के विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने में असमर्थ होते हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर जानने के पश्चात् ही उनके लिए विशेष प्रशिक्षण अथवा अभ्यास कार्य किया जाना चाहिए।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

इस शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन करना।

2. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

3. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सह संबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

इस अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं –

1. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया जावेगा।

2. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

3. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।

4. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

इस शोध का परिसीमन निम्नानुसार किया गया है –

1. रायपुर के दो, भिलाई का एक, बिलासपुर का एक इस प्रकार चार मूकबधिर विद्यालयों के छात्र एवं छात्राएँ।

2. इन मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं की आयु सीमा 14 – 17 वर्ष है।

3. मूकबधिर छात्रों की संख्या 45 एवं मूक बधिर छात्राओं की संख्या 45 इस प्रकार कुल 90 छात्र एवं छात्राएँ।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि

- **न्यादर्श (Sample) –**

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चयन हेतु सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन में मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरों के समस्या समाधान योग्यता व उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन 90 मूकबधिर किशोरों का चयन किया गया जिनकी आयु 14–17 वर्ष के बीच है।

- **उपकरण (Tools) –**

प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्नलिखित मापनियों या प्रश्नावलियों का उपयोग किया है –

1. समस्या समाधान योग्यता मापन –

समस्या समाधान योग्यता मापन हेतु डॉ. एल.एन.दुबे (Problem Solving Ability Test) का प्रयोग किया गया। यह 12 से 17 वर्ष के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का मापन करता है। इस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक 0.78 है।

2. शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी –

किशोरों की शैक्षिक अभिवृत्ति स्तर के मापन हेतु श्री एस.एल. चोपड़ा द्वारा निर्मित (Attitude Scale Towards Education) (ASTE) का प्रयोग किया गया है। जिसका विश्वसनीयता गुणांक 0.89 है।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical operations) –

प्रस्तुत शोध प्रबंध में परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मध्यमान (M), मानक विचलन (S.D.), क्रांतिक अनुपात (C.R.) और सहसंबंध गुणांक (r) की गणना की गई।

परिकल्पना क्रमांक – 01

'' मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अंतर नहीं पाया जायेगा।''

सारणी क्रमांक – 01

मूकबधिर किशोर छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता परीक्षण के प्राप्तांकों का

सारणीयन एवं विश्लेषण

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	Df = (N_1+N_2-2)	C.R. तालिका में मान	परिणाम
1	छात्र	45	13.08	2.1	4.13	45 + 45 - 2 = 88	5% विश्वास स्तर पर – 1.99, 1% विश्वास स्तर पर 2.63	मूकबधिर किशोर छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया।
2	छात्रायें	45	11.6	2.2				

व्याख्या – मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अंतर की गणना C.R. से की गई। 88 df पर C.R. का मान तालिका में 0.05 विश्वास पर 1.99 और 0. 01 विश्वास स्तर पर 2.63 है।

जबकि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 4.13 है जो कि दोनों विश्वास स्तर के मानों के अधिक है इसलिए यहाँ दोनों समूहों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अंतर है। अतः 0.01 विश्वास स्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 02

'' मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया जावेगा।''

सारणी क्रमांक – 02

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति परीक्षण के प्राप्तांकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	$Df = (N_1+N_2-2)$	C.R. तालिका में मान	परिणाम
1	छात्र	45	83.8	13.8	0.35	45 + 45 - 2 = 88	5% विश्वास स्तर पर – 1.99, 1% विश्वास स्तर पर 2.63	मूकबधिर किशोर छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2	छात्रायें	45	84.6	17.8				

व्याख्या – मूकबधिर विद्यालयों में अध्यनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अंतर की गणना C.R. से की गई है जिसमें C.R. का मान 0.35 प्राप्त हुआ है जो 5 प्रतिशत विश्वास स्तर के मान 1.99 से कम है। इसलिए छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया। यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं होता। अतः परिकल्पना क्रमांक–2 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।''

सारणी क्रमांक – 03

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	(r)	परिणाम
1	छात्र	45	+ 0.73	मूकबधिर किशोर छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध पाया गया।
2	छात्रायें	45		

व्याख्या – मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य सह संबंध गुणांक (r) का मान + 0.73 प्राप्त हुआ जो कि उच्च धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। इस आधार पर यह परिकल्पना–03 स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार किशोर छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।''

सारणी क्रमांक – 04

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	(r)	परिणाम
1	छात्र	45	+ 0.72	मूकबधिर किशोर छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध पाया गया।
2	छात्रायें	45		

व्याख्या – मूकबधिर विद्यालयों में अध्यनरत किशोर छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य सह संबंध गुणांक (r) का मान + 0.72 प्राप्त हुआ जो कि उच्च धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। इस आधार पर परिकल्पना 04 स्वीकृत की जाती है। इससे यह ज्ञात हुआ कि किशोर छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में वृद्धि होने पर समस्या समाधान योग्यता में भी वृद्धि होगी। अतः परिकल्पना क्रमांक–04 की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने प्रबंध प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये –

1. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अंतर पाया गया।

2. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया।

3. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति व समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध पाया गया।

4. मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति व समस्या समाधान योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध पाया गया।

सुझाव (Suggestions) –

1. मूकबधिर विद्यार्थियों को अपनी समस्याओं के बारे में अपने अभिभावक एवं शिक्षकों से समाधान कराने का प्रयास करना चाहिए।

2. मूकबधिर विद्यार्थी अपने आपको अन्य सामान्य विद्यार्थियों से किसी प्रकार कम न समझें एवं अपना आत्म विश्वास बनायें रखें।

3. मूकबधिर या निःशक्त बच्चों के माता–पिता को अपने निःशक्त बच्चे एवं अन्य बच्चे में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।

4. अभिभावक को मूकबधिर बच्चों की शिक्षण विधियों को समझना चाहिए ताकि वे उन बच्चों की अध्ययन संबंधी समस्याओं को सुलझा सकें।

5. अभिभावक मूकबधिर बच्चों के विद्यालय जाकर अपने बालक की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्या समाधान योग्यता को स्वयं जानें एवं उसका निवारण करने में सहयोग प्रदान करें।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. अर्जुनवार, रमा (1994) – ''रायपुर नगर की संस्थाओं में अध्ययनरत पूर्व माध्यमिक स्तर के विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन''/लघुशोध प.र.श.शु.वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

2. भार्गव, महेश (2001) – आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, एच.पी. भार्गव, बुक हाऊस, आगरा पृ.क्र. 332–342

3. कपिल, डॉ. एच. के. (2010) – अनुसंधान विधियाँ, भार्गव बुक हाऊस, आगरा

12. ''मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण का उनके आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन''

शैल चन्द्राकर

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग)

सारांश

बालिकाएँ राष्ट्र का अभिन्न अंग होती हैं। उनकी शैक्षिक प्रगति का देश की प्रगति पर प्रभाव पड़ता है। उनकी शिक्षा हेतु उचित वातावरण के निर्माण से बालिकाओं की प्रतिभा का विकास संभव है। देश के विकास में बालिकाओं की अच्छी सहभागिता के लिए उनकी महत्वाकांक्षा के बारे में जानना आवश्यक है। प्रस्तुत लघुशोध में ''मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण का उनके आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन'' किया गया।

प्राप्त शोध निष्कर्षों के अनुसार – शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के शैक्षिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं पाया गया तथा शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के शैक्षिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर में धनात्मक सह संबंध पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा एक शक्तिशाली हथियार है जिसका प्रयोग व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक और मानसिक निर्धनता को समाप्त कर उन्हें समृद्ध बनाने के लिए होता हैं। शिक्षा का एक उद्देश्य व्यक्ति को समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित करना है।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ में मुस्लिम जनसंख्या 4,09,615 है, जिसमें से पुरूषों की संख्या 2,10,899 है तथा महिलाओं की संख्या 1,98,786 है। अतएव मुस्लिम बालिकाओं को शिक्षित करना आवश्यक है। बालिका का अपना परिवार उसकी प्राथमिक पाठशाला होती है। परिवार मानव संबंधों का मूल स्त्रोत है। यदि बालिका का पारिवारिक वातावरण सुखद, शैक्षिक व सामंजस्यपूर्ण होता है तो उसके व्यक्तित्व का उत्तम विकास होता है। अतएव परिवार वह भूमि है, जहाँ बालिका का सामाजीकरण होता है।

शोध के उद्देश्य (Objective of the study) –

1. शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
3. शहरी शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण तथा उनके आकांक्षा स्तर के मध्य सहसंबंध को जानना।

4. ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण तथा उनके आकांक्षा स्तर के मध्य सहसंबंध को जानना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

1. शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
3. शहरी शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।
4. ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation of the study) –

प्रस्तुत शोध रायपुर शहर, धरसींवा एवं आरंग ब्लाक के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों की विभिन्न शालाओं की कक्षा 11वीं एवं 12वीं में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample) –**

रायपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में से शहरी क्षेत्र के 03 एवं ग्रामीण क्षेत्र के 03 विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों की कक्षा 11वीं एवं 12 में अध्ययनरत 80 मुस्लिम छात्राओं (40 शहरी, 40 ग्रामीण क्षेत्र) का सौद्देश्यपूर्ण चयन किया गया।

- **उपकरण (Tools) -**

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उपकरणों का चयन किया गया –

1. परिवार के शैक्षिक वातावरण के मापन हेतु स्वनिर्मित उपकरण (प्रश्नावली) का प्रयोग किया गया।
2. आकांक्षा स्तर के मापन हेतु – डॉ. एम.एम. शाह की Measurement of level of Aspiration Scale (LAM - BS) हिन्दी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) –

परिकल्पना क्रमांक – 01

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 01

स. क्रं.	समूह	मुस्लिम बालिकाओं की संख्या	Mean	S.D.	t का मान	df	तालिका में मान	परिणाम
1.	शहरी मुस्लिम बालिकाएँ	40	19.625	4.55	0.31	78	5% तथा 1% विश्वास स्तर पर 1.99–2.64	शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2.	ग्रामीण मुस्लिम बालिकाएँ	40	20	5.86				

व्याख्या – t या C.R. तालिका के अनुसार df 78 (स्वतंत्रता के अंश) पर t का मान 5% विश्वास स्तर पर 1.99 है। प्रदत्तों के आकलन से प्राप्त t का नाम 0.31 है, जो t तालिका से प्राप्त मान 5% विश्वास स्तर पर 1.99 से कम है अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 01 की पुष्टि नहीं हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02

शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 02

स.क्रं.	समूह	मुस्लिम बालिकाओं की संख्या	Mean	S.D.	t का मान	df	तालिका में मान	परिणाम
1.	शहरी मुस्लिम बालिकाएँ	40	4.9	2.68	0.25	78	5% तथा 1% विश्वास स्तर पर 1.99–2.64	शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़नेवाली मुस्लिम बालिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर नही पाया गया।
2.	ग्रामीण मुस्लिम बालिकाएँ	40	20	5.8				

व्याख्या :– प्रदत्तों के आकलन से प्राप्त t का मान 0.25 है, जो t तालिका से प्राप्त मान 5% विश्वास स्तर पर 1.99 से कम है। अतः शहरी एवं ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना 02 की पुष्टि नहीं हुई

परिकल्पना क्रमांक – 03 – शहरी शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के शैक्षिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 03

स.क्रं.	समूह	N	सह संबंध गुणांक का मान	निष्कर्ष
1.	शहरी छात्राएं	40	+ 0.16	नगण्य धनात्मक सह संबंध

व्याख्या – सारणी क्रमांक – 03 के अनुसार दोनों चरों के मध्य + 0.16 है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों चरों के मध्य नगण्य धनात्मक सह संबध है तथा यह एक दिशीय है।

इससे यह प्रतीत होता है कि दोनों चरों में नगण्य सह संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 3 की आंशिक रूप से पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

ग्रामीण शालाओं में पढ़ने वाली मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 04

स.क्रं.	समूह	N	सह संबंध गुणांक का मान	निष्कर्ष
1.	ग्रामीण छात्राएं	40	+ 0.44	सामान्य धनात्मक सह संबंध

व्याख्या –

तालिका क्रं. 4.4 के अनुसार दोनों चरों के मध्य गणना द्वारा प्राप्त सहसंबंध गुणांक का मान + 0.44 है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों चरों के मध्य सामान्य धनात्मक सह संबंध है तथा यह एक दिशीय है। इससे यह प्रतीत होता है कि दोनों चरों में सामान्य सह संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 प्रमाणित होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की मुस्लिम बालिकाओं के शैक्षिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं पाया गया।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के शैक्षिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर में धनात्मक सह संबंध पाया गया।

सुझाव (Suggestion) –

1. शिक्षक बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का बालिकाओं तथा पालकों के साथ मिलकर समाधान करने का प्रयास करें।
2. पालक शिक्षक संघ द्वारा विद्यालय व समाज के मध्य स्वस्थ संबंधों की स्थापना की जाय।
3. परिवार शिक्षा के महत्व को समझें।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. सिंह, अरूण कुमार (2001) – मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध ।
2. जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड प्रोफेशनल मैनेजमेंट (1970)
3. त्रिपाठी, मधुसूदन (2008) बालिका शिक्षा

13. ''हिन्दी भाषा दक्षता में छत्तीसगढ़ी बोली के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में वर्तनी एवं लेखन कौशल संबंधी त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

श्रीमती शशीकला शर्मा
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्ति के लिए भाषा का उपयोग किया जाता है। भाषा के द्वारा ही वह समाज में अपने भावों को व्यक्त करता है। साथ ही सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार भाषा के रूप का निर्धारण करता है। चूंकि व्यक्ति तथा समाज की आवश्यकताएँ अनंत होती हैं इसलिए भाषा के भी विविध रूप हो जाते हैं। हमारा देश विभिन्न भाषाओं का गढ़ है। विभिन्न भाषाओं के प्रभाव से भाषा अपने मूलरूप से परिवर्तित हो जाती है। प्रत्येक क्षेत्र की क्षेत्रीय भाषा का अपना प्रभाव होता है। मनुष्य जिस क्षेत्र में रहता है अपनी वर्तनी व लेखनी में उसी भाषा का प्रयोग करता है। इस प्रकार उनकी भाषा पर स्थानीय भाषा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के अनुसार छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले छात्रों के लेखन कौशलों में क्षेत्रीयता के आधार पर अंतर पाया गया किंतु लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

मानव अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक साधन को अपनाता है, वह भाषा है ''मनन, चिंतन और विचार का साधन भी भाषा ही है।'' यदि मनुष्य के पास भाषा जैसा अमोध अस्त्र न होता तो मनुष्य भी पशु–पक्षियों के समान अपने भावों को प्रकट करने में असमर्थ होता है। ''भाषा विचार विनियम का साधन है।''

परिवर्तन के नियम से भाषा भी अपवाद नहीं है। आज कोई भाषा उस रूप में नहीं बोली जाती जिस रूप में आज से एक हजार वर्ष पहले बोली जाती थी। भाषा में परिवर्तन तो प्रतिपल होता रहता है किंतु वह अनुभवगम्य नहीं होता। जब परिवर्तन पूंजीभूत हो जाता है तभी पकड़ में आता है और ऐसा कई सौ वर्षों में हुआ करता है।

शोध के उद्देश्य (Objective of the study) –

1. हिन्दी लेखन कौशल में वर्तनी की अशुद्धियाँ ज्ञात करना।
2. हिन्दी लेखन कौशल में छत्तीसगढ़ी बोली का उपयोग करने वाले छात्रों एवं छत्तीसगढ़ी बोली का उपयोग न करने वाले छात्रों के द्वारा की जाने वाली त्रुटियों में अंतर ज्ञात करना।
3. हिन्दी लेखन कौशल के विभिन्न आयामों में होने वाले त्रुटियों में छत्तीसगढ़ी बोली का प्रभाव एवं अंतर ज्ञात करना।

4. छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी नहीं बोलने वाले छात्रों की लेखन दक्षता में क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर अंतर ज्ञात करना।
5. छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी नहीं बोलने वाले छात्रों की त्रुटियाँ एवं हिन्दी भाषा के प्रति उनकी मान्यताओं में सहसंबंध ज्ञात करना।
6. हिन्दी लेखन कौशल में छत्तीसगढ़ी बोली के प्रभाव के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का आकलन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

1. हिन्दी लेखन कौशल के स्वतंत्र शब्दों, वाक्यों तथा अनुच्छेदों में वर्तनी की अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
2. छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी नहीं बोलने वाले छात्रों द्वारा की जाने वाली वर्तनी संबंधी त्रुटियों में (लिंग के आधार पर) सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
3. छत्तीसगढ़ी बोलने एवं न बोलने वाले छात्रों की लेखन दक्षता में क्षेत्रीयता के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
4. लिंग के आधार पर छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
5. हिन्दी लेखन कौशल एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियों पर छत्तीसगढ़ी बोली के प्रभाव के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण में विभिन्नता पायी जायेगी।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

यह शोध छत्तीसगढ़ के शासकीय विद्यालयों के कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यक्रम तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि

- **न्यादर्श (Sample) –**

प्रस्तुत लघुशोध में बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखंड के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के 01–01 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 9वीं के 80–80 विद्यार्थियों (40 छात्र, 40 छात्राओं) का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। जिसमें शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राजेन्द्र नगर एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मंगला के 80 छात्र हैं। उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कुल 160 छात्र एवं छात्राओं का यादृच्छिक चयन किया गया।

- **उपकरण (Tools) –**

प्रस्तावित अध्ययन में शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उपकरणों का प्रशासन किया गया –

1. स्वनिर्मित लेखन कौशल प्रश्नावली – जिसमें

- शब्द एवं वर्तनी संबंधी परीक्षण

- वाक्यों में वर्तनी संबंधी परीक्षण
- अनुच्छेद संबंधी परीक्षण
- अनुवाद से संबंधित प्रश्न

2. हिन्दी लेखन कौशल परीक्षण – स्वनिर्मित प्रश्नावली

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) –

संकलित आंकड़ों का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 01

हिन्दी लेखन कौशल के स्वतंत्र शब्दों, वाक्यों तथा अनुच्छेदों में वर्तनी की अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 01

हिन्दी लेखन के स्वतंत्र शब्द, वाक्य एवं अनुच्छेद में वर्तनी की अशुद्धियों का परीक्षण

Variable	N.	M.	S.D.	df	t	Table Value	Result
वर्तनी संबंधी दक्षता	80	12.71	2.98	158	0.64	0.01 विश्वास स्तर पर 2.59 0.05 पर 1.96	NS
अनुच्छेद एवं अनुवाद	80	12.9	2.47				

व्याख्या – विद्यार्थियों के हिन्दी लेखन कौशल में स्वतंत्र शब्दों, वाक्यों तथा अनुच्छेदों में वर्तनी की अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 01 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले छात्रों द्वारा की जाने वाली वर्तनी संबंधी त्रुटियों में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक – 02

छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले छात्र एवं छात्राओं द्वारा की जाने वाली

त्रुटियों के आधार पर परीक्षण

Variable	N.	M.	S.D.	df	t	Result
छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले छात्र	80	59.72	11.97	158	0.95	NS
छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले छात्रा	80	59.61	13.54			

छत्तीसगढ़ी बोलने वाले छात्र एवं छात्राओं के द्वारा की जाने वाली त्रुटियों के आधार पर परीक्षण

सारणी क्रमांक – 03

Variable	N.	M.	S.D.	df	t	Result
छत्तीसगढ़ी बोलने वाले छात्र	80	60.25	13.12	158	0.75	NS
छत्तीसगढ़ी बोलने वाली छात्राएँ	80	59.75	11.21			

व्याख्या – सारणी क्रमांक – 02 तथा 03 के अनुसार छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी न बोलने छात्रों द्वारा की जाने वाली वर्तनी संबंधी त्रुटियों में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 02 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों में क्षेत्रीयता के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक – 04

छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों में क्षेत्रीयता के आधार पर परीक्षण

Variable	N.	M.	S.D.	df	t	Result
छत्तीसगढ़ी बोलने वाले ग्रामीण छात्र	20	31.24	3.36	38	6.01	SP<0.01
शहरी छात्र	20	28.22	3.75			
छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले ग्रामीण छात्र	20	19.75	2.91	38	3.34	SP<0.01
शहरी छात्र	20	16.22	2.87			

व्याख्या – सारणी क्रमांक – 04 के अनुसार छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी न बोलने वाले छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों में क्षेत्रीयता के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया अतः परिकल्पना–03 अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

लिंग के आधार पर छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 05

लिंग के आधार पर छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों पर परीक्षण

Group	N.	M.	S.D.	df	t	Result
छात्र	80	59.28	12.13	158	0.58	NS
छात्रा	80	60.42	12.25			

व्याख्या – सारणी क्रमांक – 05 के अनुसार छात्रों की वर्तनी संबंधी त्रुटियों का मध्यमान 59.28 तथा छात्राओं का 60.42 है। इनके मध्य प्राप्त किया t का मान 0.58 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान 1.96 तथा 0.01 विश्वास स्तर के लिए 2.59 से कम है। अतः लिंग के आधार पर छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अतः परिकल्पना – 04 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

हिन्दी लेखन कौशल एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियों पर छत्तीसगढ़ी बोली के प्रभाव के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण में विभिन्नता पायी जाएगी।

सारणी क्रमांक – 06

शिक्षकों के दृष्टिकोण में विभिन्नता के आधार पर हिन्दी लेखन कौशल एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियों का परीक्षण

Group	fo	Fe	N	X^2	Table Value	Result
छत्तीसगढ़ी के कारण वर्तनी प्रभावित	18	20	20	2.45	0.05 पर 3.84	NS
छत्तीसगढ़ी के कारण वर्तन अप्रभावित	11	20	20		0.01 पर 6.64	

व्याख्या – सारणी क्रमांक – 06 के अनुसार हिन्दी लेखन कौशल एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियों पर छत्तीसगढ़ी बोली के प्रभाव के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परिवेश के अनुसार छात्र विषय–वस्तु एवं शब्द प्रयोग के चयन करने में समर्थ है किन्तु लेखन में इसके प्रभाव के प्रति शिक्षक जागरूक नहीं हैं। अतः परिकल्पना – 06 अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. विद्यार्थियों के हिन्दी लेखन कौशल में स्वतंत्र शब्दों, वाक्यों तथा अनुच्छेदों में वर्तनी की अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी न बोलने छात्रों द्वारा की जाने वाली वर्तनी संबंधी त्रुटियों में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. छत्तीसगढ़ी बोलने वाले एवं छत्तीसगढ़ी न बोलने छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों में क्षेत्रीयता के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया।
4. लिंग के आधार पर छात्रों के लेखन कौशल की त्रुटियों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
5. हिन्दी लेखन कौशल एवं वर्तनी त्रुटियों पर छत्तीसगढ़ी बोली के प्रभाव के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्षों की समीक्षा –

त्रुटियों के कारणों का विश्लेषण लिखित एवं स्वरूप के आधार पर किए जाने से निम्नलिखित संभावनाओं का उल्लेख किया जा सकता हैं –

श्रुति भ्रम, वर्तनी की त्रुटियाँ, अनुवाद एवं अनुच्छेद की त्रुटियाँ लगभग एक ही प्रकार की है। प्राप्त परिणाम के संदर्भ में दो कारण स्पष्टतः उभरकर आते हैं –

1. सभी छात्रों को एक ही प्रकार का भाषात्मक पर्यावरण प्राप्त होता है एवं बहुत कम छात्र साहित्य पढ़ने में रूचि लेते हैं।

2. श्रुति संबंधी किसी भी प्रकार का अभ्यास छात्रों को नहीं दिया जाता है। अतः छात्र हिन्दी वर्तनी के प्रति सतर्क नहीं होते हैं।

सुझाव (Suggestion) –

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों एवं उसके समीक्षात्मक अध्ययन के आधार पर हिन्दी भाषा कौशल में दक्षता लाने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. अधिक से अधिक न्यूज चैनल में शुद्ध हिन्दी सुनने हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए।
2. कहानी एवं कविताओं को मूल पुस्तक से पढ़ने की आदत विद्यार्थियों में डाली जाए।
3. श्रुति एवं वर्तनी संबंधी नियमित परीक्षाएँ तथा कक्षागत अभ्यास विद्यालय में आयोजित किए जाएं।
4. छात्रों को आपस में एक–दूसरे के उच्चारण एवं वर्तनी सुधारने हेतु प्रेरित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

- आनंद, व्ही.एस. (1985) – ''ए स्टडी ऑफ द फेक्टर्स दैट अफेक्ट आर्थोग्राफी इन हिन्दी एण्ड डायग्नोसिस ऑफ स्पेलिंग मिस्टेक्स इन द राइटिंग ऑफ क्लास फिफ्थ स्टूडेंट्स ऑफ हिन्दी मीडियम स्कूल ऑफ डेल्ही एलांग विथ ए रेमीडियल प्रोग्राम''
- हरिभूमि, (25 फरवरी 2010) – ''चौपाल रंग छत्तीसगढ़ के'' गुरूवार बिलासपुर।
- क्रिस्टल, डेविड (2006) – ''वर्डस्–वर्डस्–वर्डस्'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूयार्क।
- लर्नर, जी.एच. (1991) – ''वाक्यों की बनावट एवं उनका समन्वय समाज में भाषा'', 20, पृ. 441–458.

14. ''हाई स्कूल स्तर पर बालिकाओं हेतु क्रियान्वित योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन''

स्मिता कर
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश

समाज के संतुलित विकास के लिए बालकों के साथ–साथ बालिकाओं की शिक्षा को महत्व दिया जाना आज की महती आवश्यकता है। शासन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं को प्रोत्साहन देने के लिए कई योजनाएँ चलायी जा रही हैं ताकि वे प्रेरित होकर अध्ययन हेतु शालाओं में पहुँचें, अध्ययन करें तथा लाभन्वित हों। इन योजनाओं का बालिकाओं की शिक्षा के संदर्भ में प्रभाविता का अध्ययन करने के लिए यह शोध कार्य किया गया है। शोध निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि सरस्वती सायकल योजना के लागू होने से शाला में 5–8 किमी दूरी से आने वाली छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के द्वारा 95 प्रतिशत परिवार बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए प्रेरित हुए हैं।

प्रस्तावना (Introduction) –

देश में शिक्षा की स्थिति को सुधारने के लिए और सार्वभौम बुनियादी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार द्वारा सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित की गयी। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया था। वर्तमान युग में समाज के संतुलित विकास के लिए बालकों के साथ–साथ बालिकाओं की भी शिक्षा को महत्व देना होगा।

संवैधानिक प्रतिबद्धता के साथ–साथ शिक्षा विभाग का उद्देश्य यह है कि प्रत्येक बालिका विशेषकर (6 से 14 वर्ष) को निःशुल्क एवं सार्वभौमिक शिक्षा का लाभ प्राप्त हो। इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए शासन द्वारा विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया। इसके द्वारा समाज को शिक्षा के प्रति जागृत कर बच्चों को शैक्षणिक संस्थाओं में अध्ययन हेतु आकृष्ट किया जा रहा है। विभाग की प्रमुख योजनायें जो उपरोक्त उद्देश्य से संचालित हैं निम्नलिखित हैं –

1. निःशुल्क गणवेश योजना
2. छात्र दुर्घटना बीमा योजना
3. क्लास परियोजना
4. पुस्तकालय योजना
5. बालिका प्रोत्साहन योजना
6. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना
7. सरस्वती सायकल वितरण योजना

बालिकाओं के संदर्भ में निःशुल्क पाठ्यपुस्तक योजना एवं सरस्वती सायकिल योजना मुख्य हैं। इस शोध में इन प्रमुख योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है ताकि इन्हें और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सके।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

1. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सरस्वती सायकल योजना के क्रियान्वयन की जानकारी प्राप्त करना।
2. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन की जानकारी प्राप्त करना।
3. सरस्वती सायकल योजना के क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का पता लगाना।
4. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

इस शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गयी हैं –

1. सरस्वती सायकल वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएं नहीं पायी जाएंगी।
2. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएं नहीं पायी जाएंगी।
3. सरस्वती सायकल वितरण योजना से शालाओं में बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि होगी।
4. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना से शालाओं में बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि होगी।
5. सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं के समय एवं श्रम की बचत होगी।
6. सरस्वती सायकल वितरण योजना से माता–पिता बालिकाओं को शिक्षा दिलाने के लिये प्रेरित होंगे।
7. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना से माता–पिता बालिकाओं को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित होंगे।

परिसीमन (Delimitation of the study) –

यह शोध रायपुर जिले की उच्चतर माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत बालिकाओं के लिए सरस्वती सायकल वितरण तथा निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample) –**

रायपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र से चार शालाएँ और नगरीय क्षेत्र से चार शालाएँ चयनित की गई। इन 8 शालाओं की 197 छात्राओं का यादृच्छिक चयन अध्ययन हेतु किया गया।

सारणी क्रमांक – 01

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की शालाओं से चयनित बालिकाओं की संख्या

स. क्र.	शाला का नाम	विकासखंड	सरस्वती सायकल योजना	निःशुल्क पाठ्यपुस्तक योजना
1	पी.जी. उमाठे, शा.क.उ.मा. शाला रायपुर	धरसींवा	22	26
2	जे.आर. दानी क.उ.मा. शाला रायपुर	धरसींवा	21	22
3	संत कंवरराम शा.क.उ.मा. शाला कटोरा तालाब	धरसींवा	25	26
4	मायाराम सुरजन शा.क.उ.मा. शाला रायपुर	धरसींवा	20	38
5	शा.उ.मा. शाला डुमरतराई	धरसींवा	29	18
6	शा.उ.मा. शाला मालगांव	गरियाबंद	17	16
7	शा.उ.मा. शाला कोचवाय	गरियाबंद	30	29
8	शा.उ.मा.क. शाला गरियाबंद	गरियाबंद	27	22

- **उपकरण (Tools) –**

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्तों के संकलन के लिए निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. प्राचार्यों के लिए साक्षात्कार अनुसूची (सरस्वती सायकल वितरण योजना)
2. प्राचार्यों के लिए साक्षात्कार अनुसूची (निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना)
3. छात्राओं के लिए साक्षात्कार अनुसूची (सरस्वती सायकल वितरण योजना)
4. छात्राओं के लिए साक्षात्कार अनुसूची (निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना)

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations) –

प्राप्त सांख्यिकी के आधार पर विश्लेषण निम्नानुसार किया गया –

परिकल्पना क्रमांक – 01

सरस्वती सायकल वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं पायी जायेंगी।

सारणी क्रमांक – 01 (अ)

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ/ नहीं	
1.	क्या पिछले वर्षों में वितरित सायकल की गुणवत्ता से आप संतुष्ट है।	100%	0%
2.	क्या सायकल वितरण सत्र आरंभ में हो जाता है।	0%	100%
3.	क्या इस योजना से शैक्षिक लाभ मिल रहा है।	100%	0%
4.	क्या सरस्वती सायकल वितरण में संस्था को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।	87.5%	12.5%

प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची

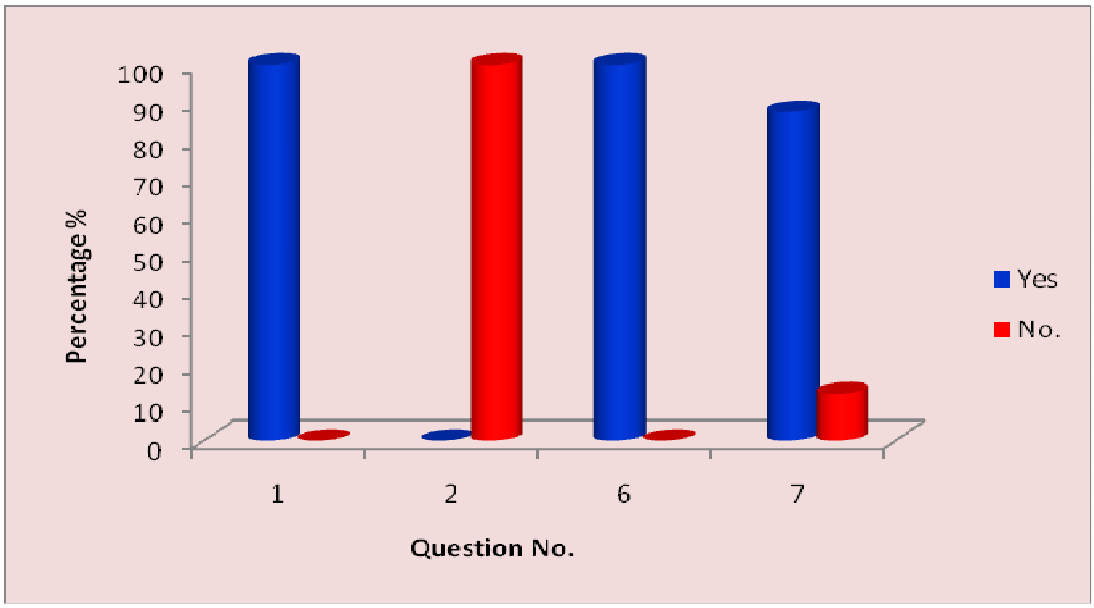

व्याख्या – उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि प्राचार्य सायकल गुणवत्ता से संतुष्ट हैं किंतु इसके वितरण में समस्याएँ हैं।

सारणी क्रमांक – 01 (ब)

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ/नहीं	
1.	क्या आपको सरस्वती सायकल प्रदाय योजना की जानकारी है।	73%	27%
2.	क्या सरकार बालिकाओं का विकास कर रही है।	95%	5%
3.	क्या सरकार की योजना का क्रियान्वयन हो रहा है।	95%	5%
4.	क्या सरकार की योजना सायकल प्रदान करके आपको लाभान्वित करना है।	95%	5%
5.	क्या सरकार की योजना आप तक समय पर पहुंच जाती है।	89%	11%
6.	क्या आप योजना का भरपूर लाभ उठा पाती हैं।	88%	12%
7.	क्या आप इस योजना से खुश हैं।	93%	7%

छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची

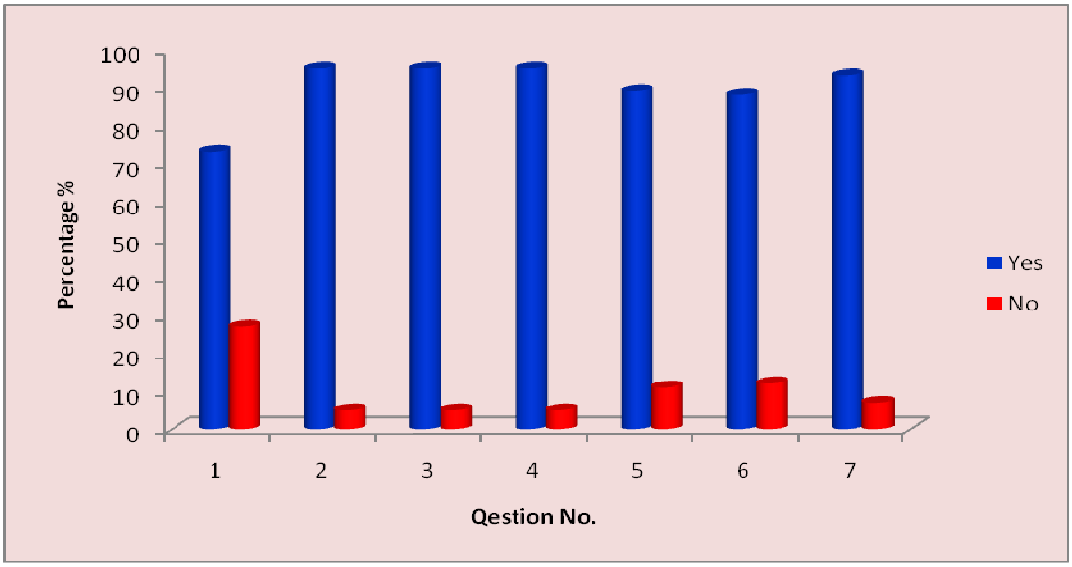

व्याख्या – छात्राओं से प्राप्त उत्तरों के अनुसार सरस्वती सायकल वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के कियान्वयन में समस्याएं नहीं पाई जायेगी।

सारणी क्रमांक – 02 (अ)

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ/नहीं	
1.	क्या पिछले वर्ष में वितरित पाठ्य वितरण से विद्यालय की शिक्षा गुणवत्ता में सुधार पाया गया।	100%	0%
2.	क्या पाठ्यपुस्तक वितरण सत्र आरंभ में हो जाता है।	100%	0%
3.	यदि विलंब से पुस्तक वितरण होता है तो शैक्षिक समस्याएं आती है।	100%	0%
4.	पुस्तक वितरण योजना में क्या संस्था को परेशानियां आती है।	37.5%	62.5%

प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची

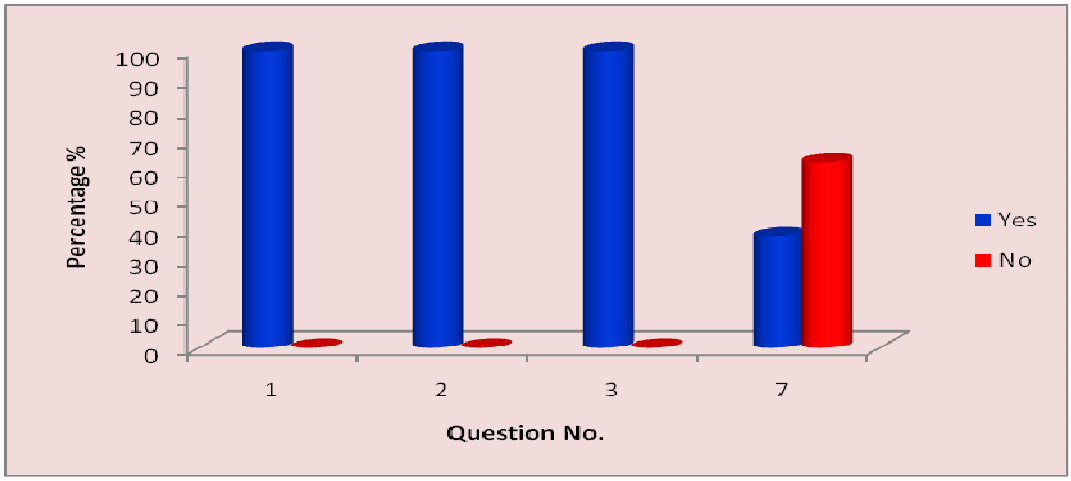

व्याख्या – प्रस्तुत सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि प्राचार्यो के अनुसार यदि विलंब से पुस्तक वितरण होता है तो शैक्षिक समस्याएं आती हैं। प्रश्न क्रमांक 7 में 37.5 प्रतिशत प्राचार्यों का कहना है कि पुस्तक वितरण योजना में संस्था की परेशानी आती है।

सारणी क्रमांक – 02 (ब)

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ / नहीं	
1.	क्या इस योजना से छात्राओं को शैक्षिक लाभ मिल रहा है।	100%	0%
2.	क्या आपको निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना की जानकारी है।	77%	23%
3.	क्या आप सरकार की अन्य विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी रखती हैं।	62%	38%
4.	क्या सरकार बालिकाओं का विकास चाहती है।	91%	9%
5.	क्या सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन हो रहा है।	93%	7%
6.	क्या सरकार निःशुल्क पुस्तक प्रदान करके आपको लाभान्वित कर रही है।	92%	8%
7.	क्या सरकार की इस योजना का लाभ आपको समय पर मिल रहा है।	85%	15%
8.	क्या आप इस योजना का भरपूर लाभ उठा पाती हैं।	94%	6%
9.	क्या आप और आपका परिवार इस योजना से संतुष्ट है।	95%	5%

छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची

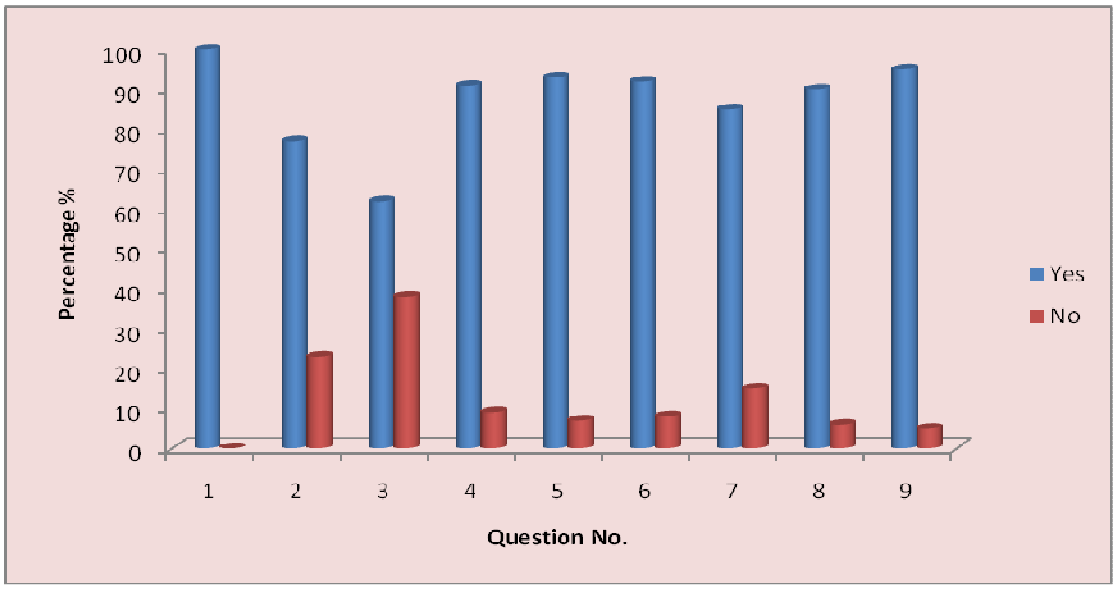

व्याख्या – छात्राओं से प्राप्त उत्तरों के अनुसार निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं हैं।

परिकल्पना क्रमांक – 03

सरस्वती सायकल वितरण योजना से शालाओं में बालिकाओं के उपस्थिति दर में वृद्धि होगी।

सारणी क्रमांक – 03

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ/ नहीं	
1.	क्या आपके अनुसार सरस्वती सायकल योजना लागू होने के उपरांत शाला में 5 से 8 कि.मी. की दूरी से आने वाली छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है।	100%	0%
2.	क्या यह योजना बालिकाओं में शिक्षा के प्रति रूचि तथा उत्साहवर्धन में सहायक है।	100%	0%
3.	क्या यह योजना छात्राओं को आत्मनिर्भर, साहसी एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक है।	100%	0%

व्याख्या – प्राचार्यों के अनुसार सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि हुयी है। अतः परिकल्पना – 03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से शालाओं में बालिकाओं के उपस्थिति दर में वृद्धि होगी।

सारणी क्रमांक –04

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ/ नहीं	
1.	क्या इस योजना से छात्राओं को शैक्षिक लाभ मिल पा रहा है?	100%	0%
2.	क्या यह योजना ने समाज में शिक्षा के उत्थान तथा समाज के विकास में सहायक है?	87.5%	12.5%
3.	क्या इस योजना के लागू करने के उपरांत शाला त्यागी छात्राओं की संख्या में कमी आई है?	100%	0%

व्याख्या – प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि 100% प्राचार्यों के अनुसार निःशुल्क पाठ्यपुस्तक योजना से छात्राओं की उपस्थिति दर में वृद्धि हुयी है। अतः परिकल्पना – 04 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं के समय एवं श्रम की बचत होगी।

सारणी क्रमांक – 05

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ/ नहीं	
1.	क्या आपके स्कूल जाने का माध्यम सायकल है।	86%	14%
2.	क्या शाला सायकल से आने पर समय एवं श्रम की बचत होती है।	93%	7%
3.	क्या सायकल आपको अपने निजी कार्यों को सम्पादित करने में सहायक है।	96%	4%
4.	क्या सायकल मिलने से पहले आपको शाला आने व अपने निजी कार्यों को करने में असुविधा होती थी।	88%	12%

व्याख्या – उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं के समय व श्रम की बचत होती है अतः परिकल्पना – 05 की पुष्टि हो रही है।

परिकल्पना क्रमांक – 06

सरस्वती सायकल वितरण योजना से माता–पिता, बालिकाओं को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित होंगे।

सारणी क्रमांक – 06

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ/ नहीं	
1.	क्या आपके परिवार में लड़कियों को शाला भेजने के लिए प्रेरित किया जाता है।	95%	5%
2.	क्या आपके गांव में हाईस्कूल की शिक्षा उपलब्ध है।	68%	32%
3.	क्या सरस्वती सायकल योजना आपको शाला भेजने में सहायक हुई।	92%	8%
4.	क्या आपके परिवार में लड़कियों को पढ़ाया जाता है।	96%	4%
5.	क्या सरस्वती सायकल योजना में प्राप्त सायकल से आप प्रतिदिन विद्यालय जाती हैं।	86%	14%
6.	क्या आपके माता–पिता आपको शिक्षा में आगे पढ़ाने के लिए प्रेरित हुए हैं।	96%	4%
7.	क्या इस योजना से आपका परिवार प्रभावित होता है।	95%	5%

व्याख्या – उपरोक्त सारणी में किये प्रश्नों के द्वारा परिकल्पना क्रमांक–06 की पुष्टि हो रही है।

परिकल्पना क्रमांक – 07

निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से माता–पिता, बालिकाओं को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित होंगे।

सारणी क्रमांक – 07 (अ)

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ / नहीं	
1.	क्या यह योजना बालिकाओं को शिक्षा के प्रति रूचि तथा उत्साहवर्धन में सहायक है।	100%	0%
2.	क्या यह योजना छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक है।	25%	75%

व्याख्या – उपरोक्त तालिका के प्रश्नों के अवलोकन के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है। परिकल्पना 7 की आंशिक पुष्टि हो रही है।

सारणी क्रमांक – 07 (ब)

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हाँ / नहीं	
1.	क्या आपके परिवार में लड़कियों को शाला भेजने के लिए प्रेरित किया जाता है।	96%	4%
2.	क्या निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से आपका परिवार आपको शाला भेजने के लिए प्रेरित हो रहा है।	95%	5%
3.	क्या आपके माता–पिता आपको उच्च शिक्षा देना चाहते हैं।	95%	5%
4.	क्या शिक्षा से आपका परिवार प्रभावित होता है।	94%	6%
5.	क्या शिक्षा का उपयोग आप समाज के विकास के लिए करेंगी।	95%	5%
6.	क्या आपके शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य आत्मनिर्भर होना है।	92%	8%

व्याख्या – उपरोक्त तालिका द्वारा दर्शाये गये प्रश्नों के अवलोकन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि परिकल्पना 7 की पुष्टि हो रही है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में शोधकर्ता द्वारा निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये :

1. सरस्वती सायकल वितरण योजना के क्रियान्वयन में यह समस्या देखी गयी है कि यदि इस योजना का क्रियान्वयन सत्र आरंभ में नहीं हो तो, संस्था को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस समस्या के बावजूद सरस्वती सायकल योजना से बालिकाओं को शैक्षिक लाभ मिल रहा है। बालिकाएं इस योजना से खुश हैं।
2. सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि हुई है। इस योजना के लागू होने से शाला में 5 से 8 कि.मी. की दूरी से आने वाली छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है क्योंकि कई दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में हाईस्कूल की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसी परिस्थिति में यह योजना कारगर साबित हो रही है।

3. सरस्वती सायकल योजना से बालिकाओं के समय एवं श्रम की बचत हुई है। अध्ययन हेतु चयनित शालाओं के अवलोकन करने से ज्ञात हुआ है कि 93 प्रतिशत बालिकाओं के समय एवं श्रम की बचत हो रही है।
4. सरस्वती सायकल योजना से माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। यह 92 प्रतिशत बालिकाओं को शाला भेजने में सहायक हुई है। 96 प्रतिशत माता–पिता अपने बच्चों को आगे पढ़ाने के लिए प्रेरित हुए हैं।
5. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आया है। इस योजना में भी कुछ परेशानी होती है। लेकिन इसका हल निकल सकता है।
6. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना से शाला त्यागी छात्राओं की संख्या में कमी आई है।
7. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से बालिकाओं में शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ी है एवं उत्साहवर्धन हुआ है।
8. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना के द्वारा 95 प्रतिशत परिवार बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए प्रेरित हुए हैं।

सुझाव (Suggestions) –

1. सरस्वती सायकल वितरण सत्रारंभ में हो जाना चाहिए, ताकि बालिकाओं को इसका भरपूर लाभ मिल सके।
2. सरस्वती सायकल योजना का लाभ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं बी.पी.एल' कार्डधारी बालिकाओं के अतिरिक्त उच्च शैक्षणिक योग्यता वाली छात्राओं को भी मिलना चाहिए।
3. सरस्वती सायकल वितरण योजना की प्रक्रिया को सरल किया जाना चाहिए।
4. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से संस्था में जो परेशानियाँ होती हैं, उन्हें प्राचार्यो एवं शिक्षकों से मिलकर दूर करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. साहू, दिनेश, (2004) : ''हाईस्कूल स्तर पर इंदिरा सूचना शक्ति योजना के अंतर्गत छात्राओं को दिये जा रहे कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम के क्रियान्वयन एवं प्रभाव का अध्ययन'', लघुशोध, पं. रवि.शु.वि.वि.रायपुर
2. शर्मा, ललित कुमार, 1992 : ''ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति रूचि के अभाव के कारणों का समीक्षात्मक अध्ययन'', लघुशोध, पं.रवि.शु.वि.वि.रायपुर
3. दुबे, राजेन्द्र, 2005–06 : ''उच्च प्राथमिक स्तर पर विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजार्थिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन'', लघुशोध, पं.रवि.शु.वि.वि. रायपुर

15. ''प्रभावशाली कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

श्रीमती आभा देशपांडे
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग)

सारांश

शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा की किसी भी योजना या नवाचार का सफल क्रियान्वयन शिक्षकों पर ही निर्भर करता है। विद्यालय भौतिक संसाधनों से कितना ही परिपूर्ण क्यों न हो यदि शिक्षक के शिक्षकीय कौशलों समृद्ध न हों तो सम्पूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम असफल सिद्ध हो जाते हैं। एक प्रशिक्षित शिक्षक नवीन शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का उपयोग करके प्रभावशाली कक्षा–शिक्षण के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें सही दिशा प्रदान कर सकता है। शिक्षक प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षकों में किन–किन कौशलों का विकास किया जाता है? शिक्षक शिक्षकीय कार्य के दौरान इनका उचित उपयोग करते हैं या नहीं यह जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन किया गया। शोध निष्कर्षों के अनुसार प्रशिक्षित शिक्षकों का कक्षा अध्यापन अप्रशिक्षित शिक्षकों के कक्षा अध्यापन से अधिक प्रभावशाली पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

अध्यापन की प्रभावशीलता का पता अध्यापक के कक्षागत व्यवहार से लगता है, उसके सामान्य मानवीय व्यक्तित्व की विशेषताएँ उसकी व्यावसायिक सफलता या असफलता को निसंदेह प्रभावित करती हैं। परंतु इसमें मुख्य प्रभाव इस बात का होता है कि वह कक्षा में क्या–क्या क्रियाएँ करता है? क्या–क्या बोलता है? कैसे करता है? किन–किन वस्तुओं या सामग्रियों की सहायता से या कैसे मौखिक रूप से वह पाठ्य सामग्री का अपने विद्यार्थियों तक सम्प्रेषण करता है? अध्यापन की प्रभाविता और अधिगम की गहनता उसकी तैयारी पर निर्भर करती है।

प्रत्येक अध्यापक के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है। अप्रशिक्षित अध्यापक की तुलना में प्रशिक्षित अध्यापक अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं। सूचनाओं को प्रभावी ढंग से छात्रों तक प्रेषण कई कौशलों पर निर्भर करता है जैसे प्रश्न पूछने का कौशल, स्पष्टीकरण, प्रदर्शन एवं व्याख्या। विषय वस्तु का व्यवस्थापन एवं उनके तर्कपूर्ण श्रृंखलाबद्ध प्रस्तुतीकरण के लिए संचार कौशल की आवश्यकता होती है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

प्रस्तुत लघु शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है –

1. कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन करना।
2. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में प्रशिक्षण की सार्थकता का अध्ययन करना।
3. विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में प्रशिक्षण की सार्थकता का अध्ययन करना।

4. महिला एवं पुरुष शिक्षकों में प्रशिक्षण की सार्थकता का अध्ययन करना।
5. शासकीय एवं अशासकीय शालाओं के शिक्षकों में प्रशिक्षण की सार्थकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

चयनित शोध निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है –

1. अप्रशिक्षित एवं प्रशिक्षित शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. महिला एवं पुरुष शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

अध्ययन की व्यापकता, उपलब्धता संसाधन एवं समयाभाव को देखते हुए शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु शोध में अध्ययन की सीमा का निम्न बिन्दुओं में परिसीमन किया गया है।

क्षेत्र – बिलासपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय

स्तर – उच्च माध्यमिक स्तर

संकाय – विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि

- **न्यादर्श (Sample) –**

इस अध्ययन हेतु बिलासपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यात्मक न्यादर्श चयन विधि से किया गया। इन शालाओं के 100 शिक्षकों (महिला एवं पुरुष) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि से किया गया।

- **उपकरण (Tools) –**

इस शोध अध्ययन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया – Classroom observation scale adapted by CTCS Classroom teaching competence scale निर्माणकर्ता – मर्मर मुखोपाध्याय, प्रकाशन – National University of Educational planning Management &Administration.

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations) –

परिकल्पना क्रमांक – 01

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 01

समूह	df	N	M	Sd	t	0.1 सार्थकता पर सारणीयनमान
प्रशिक्षित	98	66	29.66	3.197	3.765	2.59
अप्रशिक्षित		34	19.82	3.729		

व्याख्या – उक्त मापों के आधार पर ज्ञात t का मान 3.765 है, जो .01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2. 59 से अधिक है। अतः दोनों समूहों के मध्य दिखाई पड़ने वाला अंतर सार्थक है। अतः परिकल्पना–01 अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा शिक्षण के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 02

समूह	df	N	M	Sd	t	0.1 सार्थकता पर सारणीयनमान
विज्ञान	98	77	26.45	5.59	0.696	2.59
वाणिज्य		23	25.86	6.45		

व्याख्या –उक्त मापों के आधार पर ज्ञात किया गया t का मान 0.696 है, जो .01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2.59 से कम है। अतः दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना–02 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

महिला एवं पुरुष शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 03

समूह	df	N	M	Sd	t	0.1 सार्थकता पर सारणीयनमान
पुरुष	98	37	27.432	4.86	0.104	2.59
महिला		63	25.666	6.174		

उक्त मापों के आधार पर ज्ञात किया गया t का मान 0.104 है, जो .01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2.59 से कम है, अतः दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना–03 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 04

समूह	df	N	M	Sd	t	0.1 सार्थकता पर सारणीयनमान
शासकीय	98	49	26.938	4.441	0.292	2.59
अशासकीय		51	25.725	6.803		

व्याख्या – उक्त मापों के आधार पर ज्ञात किया गया t का मान 0.292 है, जो .01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2.59 से कम है, अतः दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना–04 स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

सांख्यिकी आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, वे निम्नानुसार हैं –

1. प्रशिक्षित शिक्षकों का अध्यापन, अप्रशिक्षत शिक्षकों के कक्षा अध्यापन से अधिक प्रभावशाली पाया गया।
2. विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा शिक्षण के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के कक्षाध्यापन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के कक्षाध्यापन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions) –

1. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण दक्षता को बनाये रखने के लिए प्रशिक्षण के बाद भी निरंतर अनुवर्ती कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. शिक्षकों के लिए समय–समय पर गोष्ठियाँ, कार्यशालाओं एवं उन्मुखीकरण आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।
3. शिक्षकों को समय–समय पर उत्तम कार्य हेतु प्रशंसा, पुरस्कार आदि के द्वारा प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. मोहन के. (1980) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता II Survey of Research in Education page no. 822
2. मुथा, डी.एन. (1980) प्रभावी शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं व्यक्ति का अध्ययन II Survey of Research in Education page no. 822
3. सिंह हरमिंदर 1989 फ्लैडर की अंतक्रिया विश्लेषण तकनीकी द्वारा सेवारत शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार पर प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन V Survey of Research in Education vol.II page no. 1487
4. सिंह, आर.एस. (1987) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता व उससे संबंधित अन्य तत्वों का अध्ययन V Survey of Research in Education vol.II page no. 1487

16. ''सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

रामाधार लास्कर
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग)

सारांश

मूल्यांकन मात्र विद्यार्थियों की उपलब्धि को मापना नहीं अपितु, पाठ्यक्रम के विभिन्न उद्देश्यों को व्यापक स्तर पर मापने का प्रयास करना है। मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम का अभिन्न अंग माना गया है। इसके माध्यम से शिक्षा में गुणवत्ता लायी जा सकती है। अतः सतत् और समग्र मूल्यांकन को कक्षा की गतिविधियों से जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। सतत् एवं समग्र मूल्यांकन कक्षाओं में कितनी सफल है व इसका विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है, प्रस्तुत शोध इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित किया गया है। शोध निष्कर्ष के अनुसार सतत् एवं समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर सार्थक प्रभाव पड़ता है। असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि होती है।

प्रस्तावना (Introduction) –

''चेतन अवस्था में मनुष्य निरंतर मूल्यांकन करता है।'' शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों के प्रयोग की एक सतत् प्रक्रिया रही है। शिक्षा का एक अभिन्न भाग मूल्यांकन भी इससे अछूता नहीं है। यह माना जाता है कि दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली ही उपलब्धि के गिरते स्तर के लिए उत्तरदायी है। फिर भी उसके अभाव में शिक्षा व्यवस्था की पूर्णता भी संदिग्ध हो जाती है। इस स्थिति से उबरने के लिए आवश्यक है कि मूल्यांकन प्रणाली में नवाचार ढूंढे जायें एवं प्रयुक्त किये जायें। इसी तथ्य को मानकर 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने मूल्यांकन का शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया से अन्योन्याश्रित संबंध माना और यह भी बताया कि यह एक सशक्त उपकरण है। जिसके माध्यम से उपलब्धि के स्तर में गुणवत्ता लायी जा सकती है तथा शिक्षा में गुणात्मक सुधार किया जा सकता है। इसके द्वारा बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। इस आशा को फलीभूत करने के लिए नवाचार सतत् एवं समग्र मूल्यांकन का उपयोग किया जा रहा है।

कई नवाचार या योजनाएँ केवल पुस्तकों, रिपोर्ट या सम्मेलनों तक सीमित रह जाती हैं। प्रस्तुत अनुसंधान अध्ययन इस दिशा में एक कदम है कि वास्तव में यह मूल्यांकन प्रणाली विद्यालयों में अपनायी जा रही है या नहीं?

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के लिए निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है –

1. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्तांकों में सार्थकता का पता लगाना।
2. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन द्वारा नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
3. मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के व्यक्तित्व पर प्रभाव का पता लगाना।
4. संज्ञानात्मक क्षेत्र (विषय आधारित) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूहों के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।
5. असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूहों के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

1. नियंत्रित समूह पर सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. प्रायोगिक समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं होगा।
5. संज्ञानात्मक क्षेत्र (विषय आधारित) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्ताकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।
6. असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहभागी क्रियाओं) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्ताकों में पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

प्रस्तुत शोध को निम्नांकित सीमाओं में परिसीमित किया गया है :–

1. स्तर – उच्च प्राथमिक शालाओं में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं तक।
2. क्षेत्र – बिलासपुर जिला के बिल्हा विकासखंड के शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर तक।

3. कक्षा – उच्च प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 8वीं तक।
4. समय सीमा – एक वर्ष (सत्र 2010–11)

शोध प्रक्रिया (Research Process) – प्रयोगात्मक विधि –

- **न्यादर्श (Sample) –**

शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य हेतु जिला बिलासपुर के शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 80 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

सारणी क्रमांक – 01

क्र.	विद्यालय	समूह	विद्यार्थी संख्या
1	शा.कन्या.उ.प्रा. वि. मंगला	प्रायोगिक समूह	40
2	शा.बालक उ.प्रा.वि. मंगला	नियंत्रित समूह	40
	कुल संख्या		80

- **उपकरण (Tools) –**

1. स्वनिर्मित सतत् एवं समग्र मूल्यांकन प्रश्नावली
2. स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण
3. व्यक्तित्व परीक्षण – श्री ए. पांडेय
4. स्वनिर्मित मूल्यांकन प्रश्नावली

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations) –

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण निम्नानुसार किया गया –

परिकल्पना क्रमांक –01

'' नियंत्रित समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्च प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 02

सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण में अंतर की सार्थकता

चर	संख्या	परीक्षण	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df	Table Value	t –Value	सार्थकता
नियंत्रित समूह	40	पूर्व	12.72	4.19	78	2.64	0.0012	NS
	40	पश्चात्	14.45	3.02				

व्याख्या – नियंत्रित समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण मापनी से प्राप्त प्राप्तांकों की सांख्यिकी गणना के उपरांत दोनों मध्यमानों का सार्थक अन्तर 1.73 प्राप्त हुआ।

चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 0.0012 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से कम है अतः शोध परिकल्पना–01 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''प्रायोगिक समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 03

सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण में अंतर सार्थकता

चर	संख्या	परीक्षण	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	40	पूर्व	10.77	3.40	78	2.64	4.079	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
	40	पश्चात्	13.35	3.14				

व्याख्या – प्राप्त परिणामों की सांख्यिकी गणना के पश्चात् दोनों मध्यमानों का सार्थक अन्तर 2.58 प्राप्त हुआ।

चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 4.079 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 2.64 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 02 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 04

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर की सार्थकता

चर	संख्या	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	40	29.3	6.085	78	2.64	7.533	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
नियंत्रित समूह	40	22.8	5.242				

व्याख्या – प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों को लिया गया। प्राप्त परिणामों की सांख्यिकी गणना के पश्चात् दोनों मध्यमानों का सार्थक अंतर 6.5 प्राप्त हुआ। चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 7.53 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 03 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 04

'' सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन से नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 05

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के व्यक्तित्व परीक्षण के प्राप्तांकों में अंतर की सार्थकता

चर	संख्या	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	40	98.15	11.77	78	2.64	2.93	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
नियंत्रित समूह	40	75.67	18.68				

व्याख्या – प्राप्तांकों की सांख्यिकी गणना से प्राप्त दोनों मध्यमानों का अंतर 22.48 प्राप्त हुआ। चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 2.93 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 04 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''संज्ञानात्मक क्षेत्र (विषय आधारित) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 06

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों में अंतर की सार्थकता

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I	7.075	1.85	78	2.64	3.44	0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया।
	III	8.3	1.32				

व्याख्या – उपरोक्त तालिका से स्प्ष्ट है कि अध्ययनरत प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन का माध्य क्रमशः 7.075 एवं 8.3 है जो कि प्रथम इकाई मूल्यांकन के मध्य से तीसरे इकाई मूल्यांकन का माध्य

अधिक है। इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों के अंतरों में भिन्नता के कारण की सार्थकता की जांच की गई। चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 3.44 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है दोनों में सार्थक अन्तर है। अतः शोध परिकल्पना–05 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 06.1

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं–इकाई मूल्यांकन) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 07

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन से प्राप्तांकों की सार्थकता

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	11.55	2.66	78	2.64	5.28	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।
		15.05	3.38				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 5.28 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अर्थात सार्थक अंतर है। अतः शोध परिकल्पना – 6.1 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.2

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– प्रोजेक्ट कार्य) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.1

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता

(प्रोजेक्ट कार्य)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	13.03	3.26	78	2.64	4.11	विश्वास 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.05	3.13				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 4.11 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.2 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.3

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं–शारीरिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.2

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता

(शारीरिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	11.45	2.02	78	2.64	5.27	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
		14.87	3.20				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 5.27 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.3 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.4

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– साहित्य अभिरूचि) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.3

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता

(साहित्य अभिरूचि)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	8.52	3.13	78	2.64	7.12	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.57	3.04				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 7.12 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.4 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.5

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– सांस्कृतिक क्रियाकलाप) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.4

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता

(सांस्कृतिक क्रियाकलाप)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	10.02	2.62	78	2.64	3.23	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.15	2.82				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 3.23 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.5 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.6

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– सांस्कृतिक क्रियाकलाप) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों में पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.5

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता

(सांस्कृतिक क्रियाकलाप)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	11.77	1.92	78	2.64	5.51	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.32	2.53				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 5.51 है जो 0.01 विश्वास स्तर पर सारणीगत मान 2.64 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.6 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.7

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं–खेलकूद) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों में पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.6

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता

(खेलकूद)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	10.12	1.58	78	2.64	2.79	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.87	2.64				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 2.79 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.7 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.8

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं – नियमितता) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.7

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता

(नियमितता)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	13.03	3.26	78	2.64	4.11	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.02	3.13				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 4.11 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान 1.99 से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.8 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.9

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– नेतृत्व एवं सहयोग) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.8

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (नेतृत्व एवं सहयोग)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	11.47	2.01	78	2.64	5.28	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
		14.87	3.20				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 5.28 है जो 0.05 स्तर पर सारणीगत मान से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.9 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 6.10

''असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं– पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 7.9

प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों की सार्थकता (पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण)

चर	इकाई मूल्यांकन	मध्य	प्रमाणिक विचलन	df 1^{st} &3^{rd}	Table Value	t –Value	सार्थकता
प्रायोगिक समूह	I III	10.35	2.96	78	2.64	3.24	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
		15.17	2.81				

व्याख्या – चूंकि गणना द्वारा C.R. या t का मान 3.24 है जो 1.99 स्तर पर सारणीगत मान से अधिक है अतः शोध परिकल्पना – 6.10 अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत नियंत्रित समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत प्रयोगात्मक समूह के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर पाया गया है।
3. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई।
4. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर पाया गया है। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षण उच्च पाये गए।
5. प्रायोगिक समूह के इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों में अंतर पाया गया। तृतीय इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों में वृद्धि हुई।
6. असंज्ञानात्मक क्षेत्र (पाठ्य सहगामी क्रियाओं) के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया। तृतीय इकाई मूल्यांकन के प्राप्तांकों में काफी वृद्धि हुई।

सुझाव (Suggestions) – शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षकों द्वारा सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के क्रियान्वयन में साधन, समय का अभाव, अधिक परिश्रम व छात्र संबंधी कठिनाइयाँ प्रदर्शित की गयी इस संबंध में उनकी समस्याओं को दूर करने हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए।
2. अधिकांश शालाएँ दो पालियों वाले विद्यालयों में खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों के प्रति ध्यान नहीं दिया जाता, कारण कि समय व मैदान का अभाव है। अतः कोई भी विद्यालय भवन विहीन न हो ताकि स्वतंत्र रुप से एक ही पाली में विद्यालय संचालित हो सके। प्रत्येक विद्यालय में खेलकूद एवं अन्य सभी असंज्ञानात्मक गतिविधियाँ संचालित हो सकें। अतः विद्यालय भवन एवं खेल का मैदान उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
3. प्रत्येक माह सतत् मूल्यांकन का निरीक्षण किया जाए एवं शिक्षकों को मार्गदर्शन दिया जाए। छात्रों की मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका का निरीक्षण शिक्षक प्रति माह करें। सतत् मूल्यांकन का निश्चित समय निर्धारित करें ताकि सभी विद्यालयों में एक रूपता बनी रहे।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

- गोविन्द, आर. और वर्गीज एन. वी. (1993) – ''क्वालिटी ऑफ प्रायमरी स्कूलिंग इन इंडिया''
- Haldar Miss Krishna (2008-09) - To study the effectiveness of continuous evalution (M.Ed. Dissertation,GGU,BSP)
- पाण्डेय, श्रीमती ए. – ''किशोर व्यक्तित्व परीक्षण'', आरोही, मनोविज्ञान केन्द्र, जबलपुर।
- सतत् एवं समग्र मूल्यांकन हेतु दिशा निर्देश – राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, शंकर नगर रायपुर।

17. ''सामुदायिक सहभागिता के संदर्भ में शाला के गुणात्मक विकास का अध्ययन''

रजनीश कुमार नागेश्वर

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा समुदाय अपने आदर्शों, मूल्यों, विचारों और परंपराओं में समय के साथ–साथ परिवर्तन करता है। विद्यालय और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह एक दूसरे के पूरक हैं। समुदाय की सक्रियता से शिक्षा में सुधार व गुणवत्ता का विकास होता है, जबकि गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा से ही समुदाय की उन्नति संभव हो सकती है। इस शोध अध्ययन के द्वारा शाला के गुणात्मक विकास में सामुदायिक सहभागिता की भूमिका और आवश्यकता के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। प्राप्त शोध निष्कर्षो से यह स्पष्ट होता है कि शालाओं के गुणात्मक विकास में सामुदायिक सहभागिता की सकारात्मक भूमिका होती है।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा के तीनों घटकों विद्यालय, शिक्षक और विद्यार्थी के बीच घनिष्ट संबंध होता है। शिक्षा के एक और घटक समुदाय के महत्व को भी कम आंका नहीं जा सकता है। समुदाय की सक्रियता से शिक्षा में सुधार एवं शिक्षा से समुदाय की उन्नति होती है।

शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा समुदाय अपनी परंपराएँ, विचार धाराएँ, आदर्शों तथा मूल्यों में समय के साथ परिवर्तन करता है तथा विद्यालय, विद्यार्थियों में इन गुणों को विकसित कर उन्हें समुदाय (समाज) के विभिन्न क्रियाकलापों में भागीदार बनाता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) – प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. समुदाय की सहभागिता से बच्चों की नियमित उपस्थिति, प्रतिधारण दर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर में परिवर्तन को जानना।
2. शाला समितियों द्वारा शाला के भौतिक संसाधनों के विकास में किये जाने वाले कार्यों को जानना।
3. शिक्षकों एवं समुदाय के सदस्यों के मध्य अन्तरसंबंधों को जानना।
4. शाला विकास में सामुदायिक सहभागिता की आवश्यकता को जानना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

इस शोध की निम्न परिकल्पनाएँ हैं –

1. सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) तथा सामुदायिक सहभागिता से वंचित समूह (नियंत्रित समूह) शालाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में पूर्व तथा पश्चात् परीक्षण परिणामों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) तथा सामुदायिक सहभागिता से वंचित समूह (नियंत्रित समूह) शालाओं में बच्चों की नियमित उपस्थिति (पूर्व तथा पश्चात् अवलोकन) में अन्तर नहीं होगा।
3. सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) तथा सामुदायिक सहभागिता से वंचित समूह (नियंत्रित समूह) शालाओं में अभिभावकों की शाला के गुणात्मक विकास के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4. सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) शाला एवं सामुदायिक सहभागिता से वंचित समूह (नियंत्रित समूह) शालाओं में तीनों समितियों की शाला के गुणात्मक विकास के संदर्भ में सहभागिता में अन्तर नहीं होगा।
5. सामुदायिक सहभागिता युक्त एवं वंचित शालाओं में विद्यार्थियों की प्रतिधारण दर में अन्तर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

यह शोधकार्य बिलासपुर जिले के विकासखंड पेण्ड्रा की उच्च प्राथमिक शाला कोडागार एवं झाबर की कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों तथा शाला प्रबंधन तथा विकास समिति, पालक शिक्षक संघ व मूल्यांकन समिति तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – प्रयोगात्मक विधि

- **न्यादर्श (Sample) –**

उच्च प्राथमिक शाला कोडागार एवं झाबर की कक्षा 6 से 8 तक के 20–20 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। चयनित शाला के प्रधान अध्यापकों, शिक्षकों तथा तीनों समितियों के महिला–पुरूष सदस्यों का चयन सौद्देश्य पूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

- **उपकरण (Tools) –**

1. शालेय अभिलेख जैसे–समिति गठन पंजी, बैठक पंजी, आमंत्रण पंजी, बालकान पंजी आदि
2. स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण
3. स्वनिर्मित प्रश्नावली, समुदाय के सदस्यों की शाला के कार्यों में सहयोग संबंधी अभिमत हेतु
4. सामुदायिक सहभागिता हेतु गठित समिति के सदस्यों की अभिवृत्ति जानने हेतु–स्वनिर्मित प्रश्नावली
5. स्वनिर्मित प्रश्नावली–शाला में उपलब्ध भौतिक संसाधन हेतु

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations) –

परिकल्पना क्रमांक – 01

''सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) एवं सामुदायिक सहभागिता से वंचित (नियंत्रित समूह) शाला के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 01

प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह की शालाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि (सामाजिक विज्ञान) का पूर्व एवं पश्च परीक्षण प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण –

क्र.	विषय	परीक्षण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	t	सार्थकता
1	प्रायोगिक समूह	पूर्व	40	17.25	3.84	78	9.68	0.1 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर
		पश्च	40	26.45	4.82			
2	नियंत्रित समूह	पूर्व	40	15.92	3.04	78	7.57	0.1 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर
		पश्च	40	21.90	4.00			

व्याख्या – प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पूर्व एवं पश्चात् परीक्षा परिणाम में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः 0.01 सार्थकता स्तर एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना–01 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) तथा सामुदायिक सहभागिता से वंचित समूह (नियंत्रित समूह) शालाओं के बच्चों की नियमित उपस्थिति (पूर्व तथा पश्चात् अवलोकन) में अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 02

क्र.	चर	प्रयोज्य	प्रायोज्य	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	t	सार्थकता
1	विद्यालय में उपस्थिति	प्रायोगिक समूह	पूर्व	40	72.87	8.47	78	4.10	सार्थक अंतर
			पश्च	40	81.55	06.75			
2	विद्यालय में उपस्थिति	नियंत्रित समूह	पूर्व	40	73.78	4.56	78	0.82	सार्थक अंतर नहीं
			पश्च	40	73.35	11.03			

व्याख्या – सामुदायिक सहभागिता युक्त शाला में 0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर t का मान काफी अधिक है, अर्थात् विद्यार्थियों की उपस्थिति में सार्थक अंतर पाया गया जबकि नियंत्रित समूह में विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति का पूर्व एवं पश्चात अवलोकन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है अतः परिकल्पना – 02 प्रायोगिक समूह के संदर्भ में अस्वीकृत तथा नियंत्रित समूह के संदर्भ में स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) तथा सामुदायिक सहभागिता से वंचित समूह (नियंत्रित समूह) शालाओं में अभिभावकों के शाला के गुणात्मक विकास के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 03

क्र.	चर	प्रयोज्य	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	t	सार्थकता
1	अभिभावकों की सहभागिता	प्रायोगिक समूह	40	83.7	10.73	78	1.04	N.S.
2	अभिभावकों की सहभागिता	नियंत्रित समूह	40	77.72	10.05			

व्याख्या – 0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के अभिभावकों की शाला के गुणात्मक विकास के संदर्भ में अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) शाला एवं सामुदायिक सहभागिता से वंचित समूह (नियंत्रित समूह) शालाओं की तीनों समितियों की शाला के गुणात्मक विकास के संदर्भ में सहभागिता में अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 04

क्र.	चर	प्रयोज्य	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	t	सार्थकता
1	अभिभावकों की सहभागिता	प्रायोगिक समूह	20	85.80	6.57	38	0.29	N.S.
2	अभिभावकों की सहभागिता	नियंत्रित समूह	20	77.72	9.92			

व्याख्या – 0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह की शालाओं की शाला समितियों के सदस्यों की गुणात्मक विकास के संदर्भ में सहभागिता में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना – 04 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''सामुदायिक सहभागिता युक्त एवं वंचित शालाओं में विद्यार्थियों की प्रतिधारण दर में अन्तर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 5.1

विद्यार्थियों की प्रतिधारण दर प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण :–

सामुदायिक सहभागिता युक्त शालाएँ

क्र.	शाला का नाम	2006 1 ली, 6 वीं में दर्ज संख्या	2007 2 री	2008 3 री, 6 वीं	2009 4थी 7वीं	2010 5 वीं 8 वीं	प्रतिधारण अनुपात % में
1.	शा.बा.प्रा.शा. कुड़कई	28	15	23	19	19	68
2.	शा.क.प्रा.शा. नवागांव	14	13	14	17	16	114
3.	नवीन प्रा.शा. नवागांव	13	12	14	15	12	92
4.	शा.प्रा.शाला कोडगार	25	22	21	22	21	84
5.	शा.प्रा.शाला घाटबहरा	22	18	28	28	26	118
6.	उच्च प्रा.शाला लटकोनी	–	–	25	23	24	96
7.	उच्च प्रा.शाला घाटबहरा	–	–	17	16	17	100
8.	उच्च प्रा.शाला नवागांव	–	–	18	18	19	105
9.	उच्च प्रा.शाला कोडगार	–	–	37	36	35	94
10.	उ.क. उच्च प्रा.शाला कुडकई	–	–	15	14	12	80

सारणी क्रमांक – 5.2

सामुदायिक सहभागिता से वंचित शालाएँ

क्र.	शाला का नाम	2006 1 ली, 6 वीं में दर्ज संख्या	2007 2 री	2008 3 री, 6 वीं	2009 4थी 7वीं	2010 5 वीं 8 वीं	प्रतिधारण अनुपात % में
1	शा.बा.प्रा.शा. बंधी	29	24	21	22	22	76
2	क.प्रा.शा. भर्रापारा	22	17	22	25	25	114
3	जन प्रा.शा. पेण्ड्रा	12	15	20	17	15	125
4	शा.प्रा.शाला लटकोनी	12	10	07	08	08	67
5	शा.प्रा.शाला पदगवां	25	21	29	28	24	96
6	प्रा.शाला अड़भार	26	26	28	25	23	88
7	क.प्रा.शाला पदगवां	25	25	27	29	31	124
8	उच्च प्रा.शाला झाबर	–	–	44	43	43	98
9	उच्च प्रा.शाला बंधी	–	–	15	15	13	87
10	उच्च प्रा.शाला पदगवां	–	–	47	47	45	95

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि सामुदायिक सहभागिता से युक्त 10 शालाओं में से 2 प्राथमिक तथा 1 उच्च प्राथमिक शालाओं में प्रतिधारण दर में वृद्धि, 1 उच्च प्राथमिक शाला में बराबर तथा 3 प्राथमिक व 3 उच्च प्राथमिक शालाओं में कम रही।

सामुदायिक सहभागिता वंचित 10 शालाओं में से 3 प्राथमिक शालाओं में प्रतिधारण दर में वृद्धि जबकि 4 प्राथमिक तथा 3 उच्च प्राथमिक में कमी हुई। अतः परिकल्पना – 05 स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. सामुदायिक सहभागिता युक्त शाला (प्रायोगिक) में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हुई है।

2. सामुदायिक सहभागिता युक्त (प्रायोगिक समूह) शालाओं में विद्याार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि हुई।

3. सामुदायिक सहभागिता युक्त एवं सामुदायिक सहभागिता से वंचित समूह शालाओं में अभिभावकों की शाला के गुणात्मक विकास के संदर्भ में अभिवृत्ति में समानता पायी गयी है।

4. सामुदायिक सहभागिता युक्त प्रायोगिक समूह एवं सामुदायिक सहभागिता से वंचित (नियंत्रित समूह) शाला की तीनों समितियों में सहभागिता के विषय में एकरूपता है किन्तु प्रायोगिक समूह का मध्यमान उच्च पाया गया है।

5. सामुदायिक सहभागिता युक्त एवं वंचित शालाओं में विद्यार्थियों की प्रतिधारण दर में अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions) –

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर विद्यालय के गुणात्मक विकास हेतु समुदाय की सहभागिता प्राप्त करने के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. समुदाय को विद्यालय के नजदीक लाने हेतु सभी शिक्षक प्रयास करें।

2. शाला समिति के सदस्यों के विचारों पर भी ध्यान दिया जाये।

3. विद्यालय का विकास करना केवल शासन का उत्तरदायित्व नहीं बल्कि सभी पालकों का दायित्व भी है अतः पालक अपने कर्तव्यों को जानें।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

- शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका उच्च. प्राथ. शाला, (2009–10), एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर (छ.ग.)
- त्यागी, आर. एस. (1997–98) ''प्राथमिक शिक्षा में स्थानीय पहल बिहार की ग्राम शिक्षा समितियों का एक अध्ययन'' परिप्रेक्ष्य दिसंबर 1996 पृ.क्र. 95–109 राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्था नई दिल्ली।

18. ''डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

डॉ. श्रीमती रजनी यादव
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग)

सारांश

प्रशिक्षण की गुणवत्ता का एक बड़ा मानक है शिक्षण के लिए उसकी प्रासंगिता। डी.एड. प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा व्यवहार, नवाचारी पद्धतियों का प्रयोग करना, तात्कालिक सकारात्मक निर्णय क्षमता तथा समस्या समाधान योग्यता का विकास कर अध्ययन अभिक्षमता का विकास किया जाना है। प्रस्तुत शोध में डी. एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का अशासकीय डी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का मापन किया गया है तथा दोनों के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों को सामंजस्य पूर्ण स्वाभाविक विकास में सहयोग प्रदान करती है। उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है। उसे अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है।

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है उसकी गतिशीलता की निरन्तरता को बनाये रखने में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। शिक्षक ही समस्त शिक्षण प्रक्रिया की धुरी है। विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें, पाठ्य सामग्री , निर्देशन आदि सभी शैक्षिक कार्यक्रम में शिक्षक का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समाज एवं राष्ट्र की उन्नति शिक्षकों पर निर्भर करती है।

शिक्षक, शिक्षण की प्रक्रिया तभी सफल बना सकता है जब वह शैक्षिक, व्यावसायिक योग्यताओं के साथ वैयक्तिव गुणों से युक्त हो। शिक्षा में प्रभावी और सार्थक सुधार लाने के लिए शिक्षक को शिक्षण कला के समस्त कौशलों से परिपूर्ण करना होगा। वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया में बालक बौद्धिक ज्ञान को प्राप्त करता है किन्तु वह उसे व्यक्त करने एवं व्यवहार में प्रयोग करने में सफल नहीं हो पाता। शिक्षक के पास आवश्यक योग्यताएँ हैं परंतु वह तब तक अप्रभावी हैं जब तक कि उसका स्थायी प्रभाव छात्रों में नहीं देखा जाता। अतः शिक्षण को अधिकाधिक प्रभाव पूर्ण बनाने के लिए शिक्षक की प्रभावशीलता छात्रों के सीखने की प्रवृत्ति, ध्यान, रूचि, छात्र प्रत्युत्तर पर निर्भर करती है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

1. शासकीय/अशासकीय डी. एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता का अध्ययन करना।

2. शासकीय/अशासकीय डी. एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. डी.एड. पुरुष एवं महिला प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता का अध्ययन करना।
4. डी.एड. पुरुष एवं महिला प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति में संबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

1. शासकीय/अशासकीय डी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. शासकीय/अशासकीय डी. एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. पुरुष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. पुरुष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।
5. डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

बिलासपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय डी.एड. प्रशिक्षण संस्थान तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample) –**

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया –

क्र.	संस्था का प्रकार	महिला	पुरूष	कुल
1	डाइट (शासकीय)	30	60	90
2	डी.पी. विप्र. महा. (अशासकीय)	30	60	90
	कुल	60	120	180

- **उपकरण (Tools) –**

प्रस्तुत अध्ययन में समस्या समाधान के लिए निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. शिक्षकीय अध्यापन अभिक्षमता मापनी (Teaching Aptitude Test Battery) निर्माणकर्ता – डॉ. आर.पी. सिंह एवं डॉ. एस.एन. शर्मा।

2. शिक्षकीय अध्यापन अभिवृत्ति मापनी – यह मापनी श्री अहलुवालिया द्वारा निर्मित लिकर्ट प्रकार की मानक मापनी है। इसके अन्तर्गत 6 आयामों से संबंधित अभिवृत्ति के प्रश्न हैं।

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations) –

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है –

परिकल्पना क्रमांक – 01

''शासकीय एवं अशासकीय डी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 01

शासकीय एवं अशासकीय डी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह	N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर सारणी मान	परिणाम
शासकीय	90	90.51	9.53	178	0.30	1.97	NS
अशासकीय	90	91.79	7.81				

व्याख्या – सारणी क्रमांक – 01 से स्पष्ट है कि शासकीय संस्था के डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता का मध्यमान 90.51 है और अशासकीय संस्था के डी.एड. प्रशिक्षार्थियों का मध्यमान 91.79 है तथा SD क्रमशः 9.53 तथा 7.81 है। दो समूहों के t-Value का मान 0.30 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान से कम है अर्थात् शासकीय व अशासकीय डी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं है। अत' इस आधार पर परिकल्पना क्रमांक – 01 मान्य की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''शासकीय एवं अशासकीय डी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 02

शासकीय एवं अशासकीय डी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह	N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर सारणी मान	परिणाम
शासकीय	90	252.11	35.31	178	0.95	1.97	NS
अशासकीय	90	252.45	35.57				

व्याख्या – सारणी क्रमांक – 02 से स्पष्ट है कि शासकीय संस्था के डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 252.11 है और अशासकीय संस्था के डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 252.45 है तथा SD क्रमशः 35.31 तथा 35.87 है। दो समूहों के t Value का मान 0.95 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान से कम है। अत' इस आधार पर यह परिकल्पना – 02 मान्य की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"पुरुष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 03

पुरुष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह	N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर सारणी मान	परिणाम
पुरूष	120	90.62	9.08	178	.174	1.98	NS
महिला	60	90.82	7.66				

व्याख्या – उपरोक्त सारणी अनुसार पुरूष डी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण अभियोग्यता का मध्यमान 90. 62 तथा SD 9.08 है तथा महिला प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभियोग्यता का मध्यमान 90.82 एवं SD 7.66 है। दोनों के मध्यमान हेतु t Value .174 है। जो 0.05 सार्थक स्तर के मान से कम है।

इस परिकल्पना हेतु दोनों समूहों के शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ अतः इस आधार पर उक्त परिकल्पना क्रमांक – 03 मान्य की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

"पुरुष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 04

पुरुष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह	N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर सारणी मान	परिणाम
पुरूष	120	250.15	36.51	178	.13	1.98	NS
महिला	60	262.53	27.86				

व्याख्या – उपरोक्त सारणी अनुसार पुरूष डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 250. 15 तथा SD 36.51 है तथा महिला प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 262.53 एवं SD 27. 86 है। दोनों के मध्यमान हेतु t-Value .013 है। जो 0.05 सार्थक स्तर के मान से कम है।

इस परिकल्पना हेतु दोनों समूहों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ अतः इस आधार पर उक्त परिकल्पना क्रमांक – 04 मान्य की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''डी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 05

डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता एवं अभिवृत्ति में सहसंबंध का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह	N	M	SD	df	r	परिणाम
शैक्षिक अभियोग्यता	180	89.81	8.49	178	0.04	धनात्मक सहसंबंध
शैक्षिक अभिवृत्ति	180	252	35.51			

व्याख्या – उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि डी.एड. प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक अभियोग्यता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक सहसंबंध .04 प्राप्त हुआ इस आधार पर उक्त परिकल्पना क्रमांक – 05 अमान्य की गयी।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. शासकीय एवं अशासकीय डी.एड.प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय डी.एड.प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थी दोनों ही समान शैक्षिक योग्यता रखते हैं।
2. शासकीय एवं अशासकीय डी.एड.प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् अभिवृत्ति किसी संस्थान एवं परिस्थिति के प्रति मानव के व्यवहार को प्रदर्शित नहीं करती है।
3. पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् छात्र नियंत्रण, कक्षा निर्देशन, शिक्षक–छात्र संबध, नवाचार के प्रयोग आदि पर आयु, लिंग, अनुभव का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। चूंकि महिला व पुरूष प्रशिक्षार्थी दोनों में ही समान रूप से शैक्षिक अभ्योग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् पुरूष एवं महिला प्रशिक्षार्थियों के दृष्टिकोण अपने पेशे के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक हो सकते हैं।
5. डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता तथा शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक सहसंबंध पाया गया अर्थात् शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की जिज्ञासु प्रवृत्ति, नवीन ज्ञान को ग्रहण करना, नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति तथा व्यवसाय के प्रति जागरूकता उच्च अभियोग्यता को दर्शाती है।

सुझाव (Suggestions) –

1. शिक्षकों को समाज के विभिन्न वर्गों में जाकर शैक्षिक व अन्य कार्यों द्वारा समुदाय के साथ सहभागिता का अवसर प्राप्त करना चाहिए।
2. शिक्षण प्रशिक्षण संस्था में शिक्षक संगोष्ठी, चर्चा परिचर्चा, वाद–विवाद आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
3. अध्ययन में स्व अधिगम सामग्री, खेल व परिवेश के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।
4. अध्यापकों के गुणात्मक उन्नयन हेतु क्रियान्वित प्रशिक्षण कार्यक्रम निरंतर चलते रहना चाहिए।
5. प्रशिक्षार्थियों में शिक्षण अभिवृत्ति के विकास हेतु उन्हें अधिक से अधिक अनुभव से जोड़ना चाहिए।
6. शिक्षकों में शिक्षकीय अभिवृत्ति धनात्मक एवं अनुकूल बनाये रखने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बाद भी नियमित अनुभवी एवं पृष्ठ–पोशी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
7. शिक्षकों में अभिवृत्ति के विकास हेतु पाठ्य वस्तु केन्द्रित शिक्षण विधि अपनाने के बजाए अधिक से अधिक अधिगम अनुभव प्रदान करने वाली विधियों को बढ़ावा देना चाहिए। जैसे–नाटक विधि, कहानी विधि, क्रिया केन्द्रित विधि आदि।
8. ज्ञान, मूल्य के विकास हेतु शिक्षकों के लिए समय–समय पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम प्रारंभ करने चाहिए, जिससे वे स्वाध्याय, पुस्तकालय द्वारा अपने ज्ञान भंडार में वृद्धि कर ज्ञान के नवीन सिद्धांतों और तथ्यों से अवगत हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

- चौधरी, नीला (2008) – ''बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभियोग्यता का मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन''
- Ahluvaliya (1972) – Fifth Survey of research in Education (1988-1992) Vol. II-Page 924.
- Jain, Smeeta (1992) – A Study of creativity in relation to the teaching aptitude, Skills and personality variables of pupil-teachers. Vth Survey Vol-II, Page 1560, New delhi, NCERT
- Meera, S. (1988) – A study of the relation ship between teacher behaviour and teaching aptitude of teacher-trainies. Vth Survey Vol-II, Page 1352, New delhi, NCERT
- Sharma, Meenu (1992) – A study of teachers Socio-economic status and values with references to their attitude towards the nation. Vth Survey Vol-II, Page 1492, New delhi, NCERT

19. ''सामान्य शालाओं व कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था के संदर्भ में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

श्रीमती नीलम राय

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग)

सारांश

शिक्षा विभाग द्वारा बालिकाओं की शिक्षा में प्रोत्साहन देने के लिए किये जा रहे सतत् प्रयासों में राष्ट्रीय स्तर से संचालित कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय योजना भी एक है। इस योजना अंतर्गत वंचित एवं पिछड़े वर्ग की ऐसी बालिकाएँ जो सुविधाविहीन तथा दुर्गम स्थानों पर निवास करती हैं, उनके लिए सभी आवश्यक सुविधायुक्त आवासीय विद्यालयों की व्यवस्था की गयी है। इस शोध अध्ययन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि इन सुविधायुक्त आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं एवं सामान्य शालाओं में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर होता है किन्तु कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक व्यवस्था में सार्थक सहसंबंध नहीं है।

प्रस्तावना (Introduction) –

विद्यालयीन शैक्षिक व्यवस्था से विद्यार्थी में सद्गुण, बुद्धिमत्ता, सदाचार और सीखने की शक्ति का विकास यथार्थ रूप से होता है। यदि विद्यार्थियों को उचित प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था एवं वातावरण में शिक्षित करें तो वह दृढ़ व पूर्ण रूप से विकसित होती है।

सामाजिक एवं पारिवारिक रूढ़िवादियों, अंधविश्वासों और कुप्रथाओं के कारण बालिकाओं को शिक्षा से वंचित किया गया है। आज भी ऐसे कई कारण हैं, जिनके कारण हमारे समाज में स्त्री शिक्षा को महत्व नहीं दिया जा रहा है। जैसे – बालिकाओं का बाहर पढ़ना अच्छा नहीं समझा जाना, बालिकाओं का नौकरी करना तथा पुरुषों के साथ काम करना अच्छा नहीं माना जाता। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का महत्व कम है। घर से बाहर स्त्री स्वयं को सुरक्षित नहीं मानती तथा आये दिन अपराधों के भय से अभिभावक बालिकाओं को शिक्षा के लिए घर से दूर भेजना पसंद नहीं करते। पारिवारिक बंधन, सामाजिक कुरीतियों के कारण बालिकाओं के प्रति उत्पन्न भेदभाव दृष्टिकोण की समस्या पर नियंत्रण हेतु इस अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई है। भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए विकासखंडों में महिला साक्षरता दर को बढ़ाने एवं महिला–पुरूष की सभी प्रकार के असमानता को दूर करने के लिए कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय वर्ष 2004–05 से प्रारंभ किए गए हैं। यह विद्यालय अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग तथा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली बालिकाओं के लिए संचालित है जहाँ कक्षा 6वीं से 8वीं तक की प्रारंभिक शिक्षा प्रदान की जाती है। इन विद्यालयों में

बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा भोजन एवं आवास की सुविधा प्रदान की जाती है। जिन क्षेत्रों में बालिकाओं की प्रारंभिक शिक्षा के लिए आवासीय शालाएँ संचालित नहीं हैं, ऐसे क्षेत्रों में कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय खोलने की स्वीकृति दी गई है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग की बालिकायें जो दुर्गम तथा सुविधाविहीन क्षेत्रों में निवास करती हैं एवं आर्थिक रूप से कमजोर हैं, उन बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए शासन द्वारा संचालित कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय जहाँ आवश्यक सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था की गई है, ऐसे विद्यालयों में प्रदत्त सुविधाओं का इन वर्गों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह जानना आवश्यक है। अतः इस शोध की आवश्कता महसूस की गई।

सामान्य शालाओं में अध्ययनरत् बालिकाओं और कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर है या नहीं? शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है या नहीं? यदि नहीं तो किस प्रकार परिवर्तन किया जाना चाहिए। इस समाधान के लिए अध्ययन की आवश्यकता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

प्रस्तुत लघुशोध निम्न उद्देश्यों पर आधारित है –

1. कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की शैक्षिक व्यवस्था का अध्ययन करना।
2. सामान्य शाला की शैक्षिक व्यवस्था का अध्ययन करना।
3. सामान्य शाला एवं कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सामान्य शालाओं एवं कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सामान्य शालाओं के बालकों व कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक व्यवस्था एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

1. सामान्य शाला एवं कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. सामान्य शाला एवं कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

3. कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं एवं सामान्य शाला के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

4. कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक व्यवस्था एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–संबंध नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

प्रस्तुत शोध कार्य बिलासपुर जिले के विकासखंड पथरिया, बिल्हा, तखतपुर में संचालित कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों तथा सामान्य शालाओं (शासकीय उच्च प्राथमिक शाला) तक सीमित किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample) –**

  न्यादर्श के रूप में जिला बिलासपुर (छ.ग.) के विकासखंड, बिल्हा, पथरिया और तखतपुर के कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय की 60 बालिकाएँ एवं सामान्य शाला (शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय) में अध्ययनरत् कक्षा आठवीं के 60 बालक एवं 60 बालिकाओं का यादृच्छिक चयन किया गया है।

- **उपकरण (Tools) –**

  लघुशोध के लिए निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित
2. शैक्षिक व्यवस्था मापनी – स्वनिर्मित

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations) –

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण निम्नानुसार किया गया –

परिकल्पना क्रमांक – 01

''सामान्य शाला एवं कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 01

कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्र. वि. (SD)	df	t–मान	सार्थकता
1	कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय	60	34.2	3.82	178	30.88	P<0.01
2	सामान्य शाला	120	18.6	1.15			

व्याख्या – t – का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.60 है। प्रदत्तों के गणना से प्राप्त परिणामों के आधार पर कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की शैक्षिक व्यवस्था के प्राप्तांकों का माध्यमान (34.2), सामान्य शाला की शैक्षिक व्यवस्था के प्राप्तांकों के मध्यमान (18.6) से उच्च है।

मध्यमान स्तर पर सार्थक अंतर है या नहीं इस परीक्षण के लिए t मान की गणना की गई उपरोक्त सारणी के अनुसार गणना द्वारा प्राप्त t का मान 30.88 है। स्वतंत्रता के अंश (df) 178 के लिए t का सारणी मान 0.01 स्तर पर 2.60 है। इस प्रकार t का गणना मान, सारणी मान से अधिक है जो सार्थक अंतर को प्रदर्शित करता है अर्थात् कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय एवं सामान्य शाला के शैक्षिक व्यवस्था में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''सामान्य शाला एवं कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 02

कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय एवं सामान्य शाला के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्र. वि. (SD)	df	t–मान	सार्थकता
1	कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय	60	15.5	3.66	118	9.23	P<0.01
2	सामान्य शाला	120	23.32	5.38			

व्याख्या – t – का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.62 है। प्रदत्तों के गणना से प्राप्त परिणामों के आधार पर कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 15.5, सामान्य शाला की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान 23.32 से निम्न है। मध्यमान स्तर पर सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए t –मान की गणना की गई। सारणी के अनुसार गणना द्वारा प्राप्त t – का मान 9.23 है। स्वतंत्रता के अंश (df) 118 के लिए t का सारणी मान 0.01 स्तर पर 2.62 है। इस प्रकार t का गणना मान, सारणी मान से अधिक है जो सार्थक अंतर को प्रदर्शित करता है अर्थात् कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय एवं सामान्य शाला की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं एवं सामान्य शाला के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 03

कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं एवं सामान्य शाला के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्र. वि. (SD)	df	t–मान	सार्थकता
1	कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय	60	15.5	3.66	118	0.03	NS
2	सामान्य शाला	60	15.52	3.69			

व्याख्या – t – का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.62 है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 है। प्रदत्तों के गणना से प्राप्त परिणामों के आधार पर कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 15.5 सामान्य शाला के बालकों के शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान 15.52 से कम है। मध्यमान स्तर पर सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए t –मान की गणना की गई। सारणी के अनुसार गणना द्वारा प्राप्त t – का मान 0.03 है। स्वतंत्रता के अंश (df) 118 के लिए t का सारणी मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 है। इस प्रकार t का गणना मान, सारणी मान से कम है जो सार्थक अंतर को प्रदर्शित नहीं करता है। अर्थात् कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं एवं सामान्य शाला के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक व्यवस्था एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–संबंध नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 04

कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय के बालिकाओं की शैक्षिक व्यवस्था एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय	समूह	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्र. वि. (SD)	df	r	सार्थकता
1	कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय	शैक्षिक व्यवस्था	60	83.06	822.56	59	0.15	NS
		शैक्षिक उपलब्धि	60	822.35				

व्याख्या – शैक्षिक व्यवस्था एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य गणना द्वारा प्राप्त सहसंबंध का मान 0.15 है जो धनात्मक नगण्य सहसबंध को प्रदर्शित करता है। स्वतंत्रता के अंश (df) 59 के लिए का सारणी मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.250 है। इस प्रकार r का गणना मान, सारणी मान से कम है, जो सार्थक सहसबंध को प्रदर्शित नहीं करता है। अर्थात् कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक व्यवस्था एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–संबंध नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

संकलित आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के द्वारा शोध परिकल्पनाओं की जाँच की गई तथा विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं –

1. कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की शैक्षिक व्यवस्था सामान्य शालाओं की शैक्षिक व्यवस्था की तुलना में अधिक अच्छी है।
2. सामान्य शाला की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में अधिक है।
3. कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं एवं सामान्य शाला के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक रूप से कोई अंतर नहीं है।
4. कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक व्यवस्था में सहसंबंध नहीं है अर्थात् दोनों एक दूसरे को प्रभावित नहीं करते।

सुझाव (Suggestions) –

1. बालिकाओं में जागरूकता, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता साहसिक कदम उठाने की प्रवृत्ति को विकसित करने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए। जिसमें राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त महिला/पुरूष के बारे में विशेष चर्चा करनी चाहिए।
2. समय–समय पर छात्र/छात्राओं के अभिभावकों को बुलाकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि और विकास से अवगत करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1. देवांगन, सीताराम (2006–07) – ''कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय एवं शास. उच्च प्राथमिक विद्यालय के शालेय वातावरण का बालिकाओं के समायोजन स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''
2. गुप्ता, रामेश्वर प्रसाद (2004) – ''प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण बालिका एवं महिला शिक्षा की समस्याएँ एवं उनके निराकरण के उपायों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' लघुशोध प्रबंध, गुरू घासीदास विश्व विद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
3. लहरे, विजय कुमार (1997) – ''आश्रम शाला एवं सामान्य शाला के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचियों एवं शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन'' लघु शोध प्रबंध, शिक्षा, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

20. ''भाषायी दक्षता एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन ''

कमल कपूर बंजारे
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग)

सारांश

भाषायी दक्षता प्राप्त कर विद्यार्थी अपने सामान्य विशिष्ट तथा व्यक्तिगत एवं सामूहिक विचार करने में सक्षम होता है। भाषायी दृष्टि से दक्षता हासिल करने के लिए निरंतर अभ्यास द्वारा उनकी अध्ययन आदतों को विकसित करने की आवश्यकता है। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। प्रस्ततु शोध में भाषायी दक्षता एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध निष्कर्षों के अनुसार भाषायी दक्षता का अध्ययन आदत पर प्रभाव नहीं पड़ता किंतु अध्ययन आदतो का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

भाषा मानव–भाव की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है जिसके अभाव में मानव पशुतुल्य है। व्यापक रूप में विचार विनिमय के समस्त साधनों को भाषा कहते हैं। भाषा ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है। मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास का आधार भाषा ही है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भाव या विचार बोलकर या लिखकर दूसरों तक पहुँचाते हैं। भाषा मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि–समूह है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन किया जा सके। यह विचार विनिमय का प्रमुख साधन है। भाषा शिक्षा प्रदान करने का उत्तम साधन है, अभिव्यक्ति का माध्यम है। इससे बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। जिस व्यक्ति की भाषा जितनी सशक्त होगी, उतनी ही सशक्त विचार–शक्ति होगी। विचार एवं भाषा का अटूट संबंध है। भारत की अधिकांश भाषाओं की लिपियों का विकास मूलतः ब्राम्ही लिपि से हुआ है। ब्राम्ही का प्रचार भारत में लगभग 350 ई. तक रहा। संसार में अनेकोनेक भाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। एक प्रसिद्ध कहावत है –'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी'' भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार पूरे विश्व में भाषाओं तथा बोलियों की संख्या 2796 हैं।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) –

प्रस्तुत लधुशोध निम्न उद्देश्यों पर आधारित है –

1. विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की प्राथमिक अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

5. अध्ययन आदत का उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयीं –

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषागत् दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
4. भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study) –

स्तर – प्रस्तुत शोध में स्तर से तात्पर्य कक्षा 7वीं में अध्ययनरत छात्र छात्राओं से है।

क्षेत्र – प्रस्ततु शोध में बिलासपुर जिले के बिल्हा विकास खंड ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों का चयन क्षेत्र के रूप में किया गया है।

लिंग – प्रस्तुत शोध अध्ययन छात्र एवं छात्राओं पर किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **न्यादर्श (Sample) –** प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

सारणी क्रमांक – 01

चयनित शालाओं की सूची

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय का नाम	बालक	बालिका
1	ग्रामीण	शा. पू. मा. शाला, रहंगी	25	25
2	ग्रामीण	शा. पू. मा. शाला, संवार	25	25
3	शहरी	शा. बालक उ. मा. शाला, चकरभाठा	50	
4	शहरी	शा. कन्या उ. मा. शाला, चकरभाठा		50
कुल योग –			100	100

- **उपकरण (Tools) –**

अध्ययन आदत परीक्षण –

एम.एन. पालसन (पुणे) एवं अनुराधा शर्मा द्वारा निर्मित मापनी (PSSHI) प्रकाशन वर्ष – 1989 प्रकाशक – नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन 4/230 कचहरी घाट आगरा–282004

मापनी का विवरण – इस परीक्षण में कुल 45 कथन हैं प्रत्येक कथन में तीन विकल्प सदैव या बहुधा या कभी नहीं दिये गए हैं छात्र को विकल्प के नीचे बने चौकोर खाने पर सही का निशान लगाना होता है।

भाषायी दक्षता परीक्षण –

पूर्व परीक्षण करने के लिए शोधकर्ता द्वारा पूर्व शोधार्थी कु. क्रांति यादव (2007–08) गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर द्वारा स्वनिर्मित दक्षता परीक्षण मापनी का उपयोग किया गया है। प्रश्नों के उत्तर में एकरूपता हो इसलिए बहुविकल्पीय प्रश्नों का चयन कठिनता स्तर को ध्यान में रखकर किया गया। प्रश्नों में ज्ञानात्मक प्रयोगात्मक, कौशलात्मक, अवबोधात्मक तथ्यों का चयन किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations) –

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण निम्नानुसार किया गया –

परिकल्पना क्रमांक – 01

''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारणी क्रमांक – 02

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता के परीक्षणों के प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	20.54	5.17	98	0.020	P > .05 NS
2	शहरी	50	23.16	6.37			

व्याख्या – परिकल्पना क्रमांक 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भाषागत दक्षता के प्राप्तांकों के मध्यमान में ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्र का मध्यमान अधिक है।

इसके मध्य ज्ञात किया कि t का मान 0.020 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर स्वतंत्रता की कोटि 98 के सारणीयन मान 1.98 से कम है अतः सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना – 01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा''

सारणी क्रमांक – 03

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	51.88	8.91	98	0.137	P < .05 NS
2	शहरी	50	54.26	8.70			

व्याख्या – उपरोक्त सारणी में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का मध्यमान क्रमशः 51. 88 एवं 54.26 है। इससे स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत ग्रामीण विद्यार्थियों से उच्च है। सार्थकता की जाँच हेतु t की गणना की गई जिसका मान 0.137 प्राप्त हुआ जो t के सारणीयन मान 98 स्वतंत्रता के अंश में 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 से कम है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 04

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	अध्ययन आदत	100	53.27	8.72	198	2.623	P > .05 S
2	शैक्षिक उपलब्धि	100	37.78	14.91			

व्याख्या – स्वतंत्रता की कोटि के मान 198 के लिए 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है जबकि t का प्राप्त मान 2.623 है जो सारणीकृत मान से ज्यादा है। अतः सार्थक अंतर पाया गया। अतः विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। इसलिए परिकल्पना – 03 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।''

सारणी क्रमांक – 05

क्र.	क्षेत्र	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	भाषायी दक्षता	100	21.85	8.92	198	1.693	P < .05 NS
2	अध्ययन आदत	100	53.27	8.72			

व्याख्या – स्वतंत्रता की कोटि का मान 198 के लिए सारणीयन मान 0.05 में 1.98 है जबकि t का प्राप्त मान 1.69 है जो सारणीकृत मान से कम है। अतः सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अर्थात् भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए परिकल्पना – 04 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

उक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु हिन्दी उपलब्धि परीक्षण (HAT), उन्नत शिक्षा संस्थान बिलासपुर (छ.ग.) सन् 2006–07 कक्षा 7 वीं की मापनी का प्रयोग किया गया।

सारणी क्रमांक – 06

क्र.	विद्यालय	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	41.36	13.75	98	0.025	P < .05 NS
2	शहरी	50	34.20	15.29			

व्याख्या – उपरोक्त सारणी में ग्रामीण विद्याार्थियों का मध्यमान 41.36 एवं शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 34.20 है जो ग्रामीण विद्याार्थियों से कम है। सार्थकता की जाँच हेतु t मूल्य की गणना की गई। गणना से प्राप्त t मूल्य का मान 0.025 है जो कि t मूल्य के सारणीयन मान 98 स्वतंत्रता के अंश तथा 0.05 विश्वास स्तर पर मान 1.98 से कम है। इसका अर्थ यह हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 05 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions) –

1. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भाषागत दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भाषागत दक्षता तथा शहरी विद्यार्थियों की भाषागत दक्षता लगभग समान पायी गयी।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
4. भाषायी दक्षता का छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions) –

1. विद्यार्थियों में अध्ययन आदत विकसित करने हेतु कालखंड निश्चित किया जाना चाहिए।
2. विद्यार्थियों की रूचि के अनुसार अध्ययन सामग्री की व्यवस्था विद्यालय प्रबंधन, प्राचार्य एवं कक्षा शिक्षक द्वारा की जानी चाहिए।
3. निम्न अध्ययन आदत के छात्रों को चिन्हांकित कर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च हो सके।

संदर्भ ग्रंथ (References) –

1- Jayaram, D.D. (1990) - Language teaching situation in hindi speaking states – A survey report on the state of Rajasthan, independent study Mysore – Central Institute of Indian Languages.

2- Ramamani, (1990) – Home Language, School Language and Educational Performance – An empirical study of scheduled caste children of different Social classes, Ph-d. Edu. University Mysore, P.No. 771

3- Nirmal, K. (1979) – A comparative study of habits of High School Students, Ph-D., Psy. B.H.U.

4- Shrivastava, A.K. (1968) – Study habits and under achievement, journal of gen. and appl. Psychology 1,2427

5- Shewal, B.R. (1980) – An investigation in to study habits of college student 2/2 survey of educational research. Vol-II p.

21. "A study of Learning Environment and Attitude towards Education of Urban and Rural Students"

Kusum Sahu
Government College of Education, Raipur (C.G.)

ABSTRACT

Learning environment in educational institutes and at home are invariably responsible for making students capable in achievement. The attitude of students towards achievement and learning is a rich adaptation that is always a subject for investigation. The present study is an attempt to find out the effect of learning environment and attitude of students towards education on the locale to type of institute (Govt and Non Govt). It is revealing to find that the administrative status and premises of organization could be adversely affected by learning achievement & attitude of students towards education.

Introduction –

Education is that ladder which enables students to reach their goals and motivate them towards all round development. Students should have positive attitude towards education and co-curricular activities. Attitudes of students towards education are not only influenced by school environment but also by family atmosphere, social surroundings and economic conditions. So it is essential to provide favourable and suitable learning environment to students. Every member of school, family and society should maintain such a pleasant atmosphere and accomplish their responsibilities so sincerely that the students may get proper guidance and can acquire positive attitude.

Study of the process of learning and its environment is of specific significance in educational psychology. The sole objective of all the activities of teaching is to modify students' behaviour and help the child behave in an approved manner. A child will behave in a socially acceptable manner.

In this research, researcher has tried to examine the influence of learning environment the on attitude of students towards education.

Objectives of the study –

Objectives are as follows –

1. To study the learning environment of students of government and non government school of rural and urban areas.
2. To know the attitude of students towards education studying in government and non government schools of rural and urban areas.
3. To study the effect of learning environment on the attitude of students towards education studying in government and non government schools of rural and urban areas.

Hypotheses –

Researcher has made following hypotheses for the present study:

1- There will be a significant difference in learning environment of students of government & non-government school in rural areas.

2- There will be a significant difference in learning environment of students of government & non-government school in urban areas.

3- Significant difference will be found in learning environment of students of government school of rural & urban areas.

4- Significant difference will be found in learning environment of students of non government schools of rural & urban areas.

5- There will be a significant difference in attitude of students towards education of government & non-government schools in rural areas.

6- There will be a significant difference in attitude of students towards education of government & non–government schools in urban areas.

7- Significant difference will be found in attitude of students towards education of government schools in urban & rural areas.

8- Significant difference will be found in attitude of students towards education of non-government school in rural and urban areas.

9- There will be a positive correlation between learning environment and attitude towards education of students of rural government school.

10- There will be a positive correlation between learning environment and attitude towards education of students of rural non-government school.

Research Process –

- Sample - 179 students of class 10th of Tilda block in Raipur district are selected. These student are of 3 government (2 urban, 1 rural), 2 Non government (1urban, 1 rural) schools.

Table - 1

S.No.	NAME OF SCHOOL	AREA	GOVT. / NON – GOVT.	TOTAL
1.	Badrinarayan Bagadia Government Higher Secondary School, Neora.	Urban	GOVERNMENT	28
2.	Government Girls Higher Secondary School, Neora	Urban	GOVERNMENT	25
3.	Carmel Public School Tilda.	Urban	NON – GOVERNMENT	35
4.	Government High School, Tulsi	Rural	GOVERNMENT	43
5.	Century Cement, Higher Secondary School, Baikunth	Rural	NON – GOVERNMENT	48

Tools:

a. Self made test for learning environment
b. Attitude scale towards education (ASTE) by Dr. S.L.Chopra

Statistical Calculations –

Hypothesis No. 1 - There will be significant difference in learning environment of students of rural govt. & non-govt. School

Table.1.1

S.N	School	No. of Student	MEAN	S.D.	C.R.	Degree of freedom (df)	Value of C.R. at 0.05 level of reliability
1.	Rural Govt.	43	104.45	15.11	1.871	(91-2) 89	1.99
2.	Rural Non – Government	48	109.857	12.186			
	Total =	91					

Finding - The application of Critical Ratio test gave C.R. = 1.871 which is less than the table value (1.99) even at 0.05 level of Significance. Therefore there is no significant difference. So, the hypothesis is not approved.

Hypothesis No.2 - There will be significant difference in learning environment of students of urban government & non-government school.

Table 1.2

S.No.	School	No. of Students	Mean	S.D.	C.R.	Degree of freedom (df)	Value of C.R. at 0.05 level of reliability
1.	Urban govt. School	53	99.97	15.507	2.43	(88 – 2) 86	1.99
2.	Urban Non Government School	35	109.5	20.05			
	Total =	88					

Finding - The Critical ratio calculated is 2.43 which is greater than the value of C.R. from table value (1.99) at 0.05 level of reliability. It shows that there exists significant difference in both groups. So, this hypothesis is accepted**.**

Hypothesis No. 3 -Significant difference will be found in learning environment of students of government of rural & urban areas.

Table 1.3

S.No.	Schools	No. of Student	Mean	S.D.	C.R.	Degree of freedom (df)	Value of C.R. at 0.05 level of reliability
1.	Rural Government School	43	104.45	15.11	1.427	(96-2) = 94	1.98
2.	Urban Government School	53	99.97	15.507			
	Total	96					

Finding - The Critical ratio calculated is 1.427 which is less than the value of C.R. from table value(1.98) at 0.05 level of reliability. It shows that there is no significant difference in both groups. So this hypothesis is not accepted**.**

Hypothesis No. 4 - Significant difference will be found in learning environment of students of non-government schools of rural & urban areas.

Table 1.4

S.no.	School	No. of Student	Mean	S.D.	C.R.	Degree of freedom	Value of C.R. at 0.05 level of Reliability
1.	Rural Non – govt. School	48	109.875	12.186	0.09	(83-2) = 81	1.99
2.	Urban Non – Govt. School	35	109.5	20.05			
	Total	83					

Finding - The Critical ratio calculated is 0.09 which is less than the value of C.R. from table value(1.99) at 0.05 level of reliability. It shows that there is no significant difference in both groups. So this hypothesis is rejected.

Hypothesis No.5 - There will be significant difference in attitude of students towards education of rural government & non-government school.

Table 1.5

S.No.	Schools	No. of Students	Mean	S.D.	C.R.	Degree of freedom	Value of C.R. on 0.05 level of Reliability
1.	Rural Govt. Student	43	91.42	10.14	1.184	(91-2) = 89	1.99
2.	Rural Non – Govt. School	48	88.96	9.625			
	Total	91					

Finding - The Critical ratio calculated is 1.184 which is less than the value of C.R. from table value(1.99) at 0.05 level of reliability. It shows that there is no significant difference in both groups. So this hypothesis is not approved**.**

Hypothesis No.6 - There will be significant difference in attitude of students towards education of urban government & non–government school.

Table – 1.6

S.No.	School	No. of Students	Mean	S.D.	C.R.	Degree of freedom	Value of C.R. at 0.05 level of Reliability
1.	Urban government School	53	88.075	12.186	0.388	(88-2) = 86	1.99
2.	Urban Non – government	35	87.23	8.22			
	Total	88					

Finding - The Critical ratio calculated is 0.388 which is less than the value of C.R. from table value (1.99) at 0.05 level of reliability. It shows that there is not any significant difference in both groups. So this hypothesis is rejected.

Hypothesis No.7 - Significant difference will exist in attitude of students towards education of rural government & urban government school.

Table 1.7

S.No.	Schools	Number of Students	Mean	S.D.	C.R.	Degree of freedom	Value of C.R. at 0.05 level of Reliability
1.	Rural Government School	43	91.42	10.14	1.46	(96-2) = 94	1.98
2.	Urban Govt. School	53	88.075	12.186			
	Total	96					

Finding - The Critical ratio calculated is 1.46 which is less than the value of C.R. from table value(1.98) at 0.05 level of reliability. It shows that there is no significant difference in both groups. So this hypothesis is not accepted**.**

Hypothesis No.8 – Significant difference will exist in attitude of students towards education of rural non- government & urban non-government school.

Table 1.8

S.No.	Schools	Number of Students	Mean	S.D.	C.R.	Degree of freedom	Value of C.R. at 0.05 level of Reliability
1.	Rural Government School	48	88.96	9.625	0.88	(83-2) = 81	1.99
2.	Urban Govt. School	35	87.23	8.22			
	Total	83					

Finding - The Critical ratio calculated is 0.88 which is less than the value of C.R. from table i.e. 1.99 at 0.05 level of reliability. It shows that there is no significant difference in both groups. So this hypothesis is rejected.

Hypothesis No.9 - There will be positive correlation between learning Environment & attitude towards education of RURAL GOVT. School.

Finding – The coefficient of correlation between learning environment & Attitude towards Education of students of RURAL GOVT. School is 0.04. It indicates that there is very low negative correlation. So the hypothesis is rejected.

Hypothesis No.10 - There will be positive correlation between learning Environment & attitude towards education of RURAL GOVT. School.

Finding – The coefficient of correlation between learning environment & Attitude towards Education of students of RURAL GOVT. School is 0.037. It indicates that there is low negative correlation. So the hypothesis is not accepted.

Conclusion –

1. The parents and teachers of rural area are now more attentive towards providing proper learning environment to their Students.
2. People of rural areas are also aware of importance of positive learning environment and are providing that to their children.
3. Despite different atmosphere the students have same attitude towards education.
4. There is a positive increase is attitude due to positive learning environment.
5. Attitude towards education does not necessarily dependent upon learning Environment.

6. The attitude is not dependent upon the learning environment of that school. They are not inter-related.

Suggestions –

On the basis of the present study, researcher suggests the following points for teachers, parents and students.

(1) The word positive does not simply mean to be happy or optimistic all of the time, but to feel safe and comfortable too. While students are in the classroom, they need to feel wanted, valued, respected and cared for. If students understand that they are wanted by the teachers, then they may be more willing to learn from them.

(2) There are many other ways in which a teacher can create a positive learning environment such as, learning the students' names and making themselves available. When a teacher calls a student by his name, it lets the child know that they are seen as an individual.

"They may forget what you said but they will never forget how you made them feel."

(3) Teacher should have quality of noticing the individual's differences. It is important to recognize that each student learns in a different way. Once a student becomes discouraged, it is hard to make them believe in themselves again. **"Every student can learn, just not on the same day, or the same way".**

(4) The Students need to be engaged in activities to interact with one another. Projects and group assignments should be given to them and should be allowed to play games (based on educational objectives) in the class.

(5) They should be inspired & motivated to participate in debates, lectures competitions and other co-curricular activities.

(6) Parents should provide motivating atmosphere and share inspiring experiences with their children from very beginning.

(7) Active participation of parents and guardians is required for organizing educational programmes and their successful execution.

References –

- Indian Journal of Teacher education – Anweshika.
- Journal – Developmental challenges and educational determinism.
- Senapaty Dr. H.K. – Constructivist Learning Situation.

22. "A Comparative Study of Academic Anxiety among Student Teachers of Different Socio-Economic Status"

Smt. Chandrani Tiwari
Rahod Shikshan Samiti, Janjgir-Champa (C.G)

ABSTRACT

Academic anxiety is a factor that works on students at all levels from all cross sections of the society. Socio-economic status of student influences his/her academic anxiety as well as his/her achievement. The present study is an attempt to know the influence of faculty (Science or arts) sex and marital status of pupil teacher with respect to their socioeconomic status on their academic anxiety. High average & low social classes of the society are expected differ in academic anxiety.

Introduction –

Anxiety is an unpleasant state that involves a complex combination of emotions that include fear, apprehension and worry. Anxiety is often described as having cognitive, somatic, emotional and behavioral components (Seligman, Walker & Rosenhan 2001). Anxiety that occurs during the learning process is called as "Academic anxiety." Academic anxiety can be defined as fear of failure to meet a standard or fear that one does not hold the appropriate standard concerning performance in schools and in interactions.

Objectives of the study –

Main objectives of the study are -

1. To compare the academic anxiety among upper, middle and lower social class student teachers.
2. To compare the academic anxiety among married and unmarried student teachers of different socio-economic status.
3. To compare the academic anxiety among male and female student teachers of different socio-economic status.
4. To compare the academic anxiety among student teachers from Science and Arts streams of different socio-economic status.
5. To find out the relationship between Socio-economic status and academic anxiety of student teachers.

Hypotheses –

The following hypotheses were taken into consideration to fulfil the objectives of the study –

1. Student teachers of upper, middle and lower social class do not show any significant difference (from one another) in their academic anxiety.
2. Married student teachers of different socio-economic status do not have any significant difference from those of their unmarried counterparts is their academic anxiety.
3. Male student teachers of different socio-economic status do not have any significant difference in their academic anxiety from those of their female counterparts in their academic anxiety.
4. Student teachers of different socio-economic status of Science stream do not have any significant difference from those of the Arts stream with regard to their academic anxiety.

Delimitation of the study –

The present study was delimited on following lines:-

1. This study has been confined to two hundred three student teachers of different socio-economic status from the district.
2. For the present study only affiliated colleges of state universities have been included in the sample.
3. Central universities and non-aided colleges have not been included in the sample.
4. Student teachers of commerce background have not been included in the sample.
5. Student teachers of rural background have not been included in the sample.

Research Process –

The research method employed is descriptive research normative survey, which was applied to compare the academic anxiety among different socio-economic status, marital status, sex and academic streams.

- **Sample -**

All the student teachers of state universities and their affiliated colleges have been considered as population.

The sample for this study was selected on the basis of random sampling technique. The sample consisted of 203 student teachers belonging to different socio-economic status from five different B. Ed colleges of the district.

- **Tools –**

1. To determine the socio-economic status of student teachers, the tool used is "Socio-Economic Status Scale" constructed by L.N. Dubey and B. Nigam. The tool is only for urban background student teachers.
2. To measure Academic anxiety among student teachers, the tools used is "Student Teacher Academic Anxiety Scale" constructed by Kalplata Pandey.

Statistical Calculations –

The data were analysed by using several appropriate statistical treatments such as frequency distribution, mean, standard Deviation, Analysis of variance and "t-Test". Ogives were plotted on the basis of data for further in depth analysis of differences in academic anxiety among various groups of students teachers. The significant difference for Anova & t-Test were observed at .01 & 0.05 level of significance.

Conclusion –

1. There is no significant difference present in academic anxiety of upper, middle and lower social class of student teachers.
2. There is no significant difference present in academic anxiety among married and unmarried student teachers of different socio-economic status .05 level of significance.
3. There is marked a difference in academic anxiety among married and unmarried student teachers of different socio-economic status at .01 level of significance. Married student teachers exhibit higher academic anxiety than their counterparts.
4. Male and female student teachers of different socio-economic status do not differ from each other with regard to academic anxiety.
5. Student teacher of Science and Arts streams from of different socio-economic status do not differ from each other in their Academic Anxiety.

Suggestions –

1- Better organizational climatic conditions minimize the influence of socio economic status in academic anxiety.

2. When student from the upper socio economic status show more academic anxiety personal counseling should be provided to cope with stress and neurotic aspects of anxiety.
3. Teacher performance should be monitored by students at all levels in all socio-economic status of the society.
4. Regular formative evaluation of students could lead to elimination of academic anxiety.
5. Giving homework can help in creating home environment for reducing academic anxiety.

References –

- Anand, M. (1988) – "Scholastic achievement as related to Self-esteem, feeling of security depression and Text Anxiety" Ph.D. Psychology, Unpublished doctoral thesis, University of Agra.
- Anjum, S. (1989) – "Degree of reduction of achievement by field dependence test anxiety and intelligence in females", Ph.D. Education, Unpublished doctoral thesis, Aligarh Muslim University.
- Bathurst, K. (1988) – "The Fullerton longitudinal study of Education, Achievement and Motivation", Ph.D. Psychology, Unpublished doctoral thesis, University of California, Los Angeles.